द्वितीय वर्ष कला

सत्र - III (CBCS)

हिन्दी अभ्यासपत्रिका क्र. II

विषय कोड : UAHIN301

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्राध्यापक सुहास पेडणेकर
कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राध्यापक रविंद्र द. कुलकर्णी
प्र-कुलगुरु,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राध्यापक प्रकाश महानवार
संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

कार्यक्रम समन्वयक : **प्रा. अनिल आर. बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक इतिहास एवं कला शाखा प्रमुख,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

अभ्यास समन्वयक एवं सम्पादन : **डॉ. संध्या शिवराम गर्जे**
सहायक प्राध्यापक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

लेखक : **डॉ. उर्मिला सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर, के.ई.एस. श्रॉफ महाविद्यालय,
कांदिवली (प), मुंबई

: **डॉ. संध्या शिवराम गर्जे**
सहायक प्राध्यापक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

: **डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट**
विभागाध्यक्ष एंव शोध निर्देशक हिन्दी विभाग,
रामनारायण रूइया स्वायत्त महाविद्यालय, मांटुगा, मुंबई

: **डॉ. अजीत राय**
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
के.सी. महाविद्यालय, चर्चगेट, मुंबई

जुलै २०२१, मुद्रण - १

प्रकाशक : संचालक, दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ,
विद्यानगरी, मुंबई -४०० ०९८.

अक्षर जुळणी : अश्विनी आर्टस्,
विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - ४०० ०९९.

मुद्रण :

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
	मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य	
१.	कबीरदास : कबीर के दोहे	०१
२.	सूरदास के पद	१३
३.	तुलसीदास	१९
४.	बिहारी	२९
	आधुनिक काव्य	
५.	आज़कल लड़ाई का जमाना है	३७
५.१.	एक छोटा-सा अनुरोध	४१
५.२.	नदी और साबुन	४५
६.	सरकारी कोयल	४९
६.१.	घर	५३
	परशुराम की प्रतीक्षा	
७.	परशुराम की प्रतीक्षा	५७
७.१.	हिम्मत की रोशनी	६२
७.२.	लोहे का मर्द	६५
८.	जनता जगी हुई है	६८
८.१.	आज कसौटी पर गाँधी की आग है	७२
८.२.	समर शेष है	७६
	प्रतिनिधि कविताएँ	
९.	घर रहेंगे	८०
९.१.	अंतिम ऊंचाई	८५
९.२.	अबकी अगर लौटा तो	८८
१०.	क्या वह नहीं होगा	९०
१०.१	स्पष्टीकरण	९३
१०.२	बाजारों की तरफ भी	९६

❖❖❖❖

द्वितीय वर्ष कला,
सत्र -III, हिन्दी अभ्यासपत्रिका - II

१) मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य :

संपादन : हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

२) परशुराम की प्रतीक्षा :

रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - १

२) प्रतिनिधि कविताएँ :

कुँवर नारायण, संपादक : पुरूषोत्तम अग्रवाल,
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाषचंद्र मार्ग, नई दिल्ली

१) मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य :

क) कबीर

सतगुर महिमा अंग :

१) सतगुरु की महिमा अनंत .... अनंत दिखावणहार।।
२) दीपक दीया तेल भरि .... बहुरि न आवौं हट्ट।।
३) बलिहारी गुरु .... न लागी बार।।
४) सतगुरु लई कमाँण करि .... भीतरि रह्या सरीर।।

सुमिरन भजन महिमां कौ अंग

५) कबीर सूता क्या करै .... लम्बे पाँव पसारि।।
६) तूँ तूँ करता तूँ भया .... जित देखौं तित तूँ।।
७) च्यंता तौ हरि नाँव की .... सोई काल कौ पास।।
८) भली बई जो .... पड़ता पूरी जानि।।

ख) सूरदास के पद

१) अविगत गति .... सूर सगुन लीला पद गावै।।
२) हरि सों मीत न देख्यौं कोई .... नाना त्रास निवारे।।
३) गोविन्द प्रीति सबन की मानत .... जुग-जुग भगत बढ़ाए।।
४) जैसे तुम गज कौ .... सुदामा तिहि दारिद्र नसायौ।।

ग) तुलसीदास

अयोध्याकांड

१) माई री! मोहि कोउ न समुझावै .... पीर न जाति बखानी।।

२) जब-जब भवन बिलोकति सूनो .... बिनु सोकजनित रूज मेरो।।

३) काहे को खोरि कैकायिहि .... मनहु राम फिरि आए।।

४) भाई! हौं अवध कहा रहि लैहौं ....

घ) बिहारी

१) तंत्रिनाद कवित्त रस .... जे बूड़े सब

२) कोरि जतन करौ .... अंत नीच कौ

३) संगति सुमति न पावहीं .... हींग न

४) नहिं परागु नहिं मधुर मधु .... आगै

५) कहै - यहै श्रुति सुम्रत्यौ .... पातक, राजा, रोग।।

६) घरू-घरु डोलत दीन है .... लघु पुनि बड़ौ लखइ।।

७) कनक-कनक तै सौगुनी .... इहिं पाएँही बौराइ।।

८) सभे हँसत करतार दै .... गएँ गँवारै गाँव।।

आधुनिक काव्य

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कविताएँ -

१) आजकल लड़ाई का ज़माना है - त्रिलोचन

२) एक छोटा-सा अनुरोध - केदारनाथ सिंह

३) नदी और साबुन - ज्ञानेंद्रपति

४) सरकारी कोयल - उदय प्रकाश

५) घर - मंगलेश डबराल

परशुराम की प्रतीक्षा - रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंज़िल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - १

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित खंड

१) परशुराम की प्रतीक्षा (केवल खंड - १)

२) हिम्मत की रौशनी

३) लोहे के मर्द

४) जनता जगी हुई है

५) आज कसौटी पर गांधी की आग है

६) समर शेष है

प्रतिनिधि कविताएँ - कुँवर नारायण, संपादक - पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष चंद्र मार्ग, दिल्ली।।

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कविताएँ -

१) घर रहेंगे

२) अंतिम ऊंचाई

३) अबकी अगर लौटा तो

४) क्या वह नहीं होगा

५) स्पष्टीकरण

६) बाज़ारों की तरफ़ भी

तृतीय सत्र

यूनिट विभाजन -

यूनिट - १ - व्याख्यान - ६ - कबीर, सूरदास, (पाठ वाचन एवं व्याख्या)

यूनिट - २ - व्याख्यान - ६ - तुलसी, बिहारी (पाठ वाचन एवं व्याख्या)

यूनिट - ३ - व्याख्यान - ८ - आधुनिक काव्य (पाठ वाचन एवं व्याख्या)

यूनिट - ४ - व्याख्यान - १२ - कुंवर नारायण (पाठ वाचन एवं व्याख्या)

यूनिट - ५ - व्याख्यान - ८ - परशुराम की प्रतीक्षा (पाठ वाचन एवं व्याख्या)

यूनिट - ६ - व्याख्यान - ५ - पाठालोचन और प्रश्न चर्चा

❖❖❖❖

१

मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य
कबीरदास : कबीर के दोहे

इकाई की रूपरेखा :

१.० उद्देश्य
१.१ प्रस्तावना
१.२ कबीरदास का जीवन परिचय
१.३ कबीर की रचनाएँ
१.४ कबीर के पदो में सदगुरु महिमा
१.५ कबीर सुमिरन भक्ति को अंग
१.६ कबीर के दोहे - सदगुरु महिमा अंग (व्याख्या)
१.७ कबीर के दोहे - सुमिरन भजन महिमा कौ अंग (व्याख्या)
१.८ सारांश
१.९ बोध प्रश्न
१.१० संदर्भ पुस्तकें

१.० उद्देश्य

इस इकाई में कबीर दास से संबंधित बिंदुओं का अध्ययन किया जाएगा-

- कबीर का जीवन वृत्त एवं उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही उनकी आध्यात्मिक एवं धार्मिक उपलब्धियों पर भी विचार किया जाएगा।
- कबीरदास की जो रचनाएँ विभिन्न संग्रहों के रूप में उपलब्ध है, उनका भी अध्ययन किया जाएगा।
- पाठ्यक्रम में शामिल कबीर के दोहे, 'सत्तगुर महिमा अंग' एवं 'सुमिरन भजन महिमां कौ अंग' की विस्तृत व्याख्या की जाएगी।

१.१ प्रस्तावना

कबीर कवि है, रचनाकार है साथ ही वह सन्त और साधक है, दार्शनिक द्रष्टा है तथा क्रांतिकारी समाज के निर्माता है। हम कबीर के रूप में जिस व्यक्तित्व से परिचित होते हैं, यह उनकी अभिव्यक्ति में हमारे सामने प्रकट होता है। वर्तमान युग, बड़े-बड़े संघर्षों का युग है। ऐसे

में पूरे वाङ्मय में दृष्टि डालें तो सिर्फ सन्त ही नजर आते हैं, जो समूची मनुष्य जाति को ही नहीं, समूचे विश्व को बचा सकते है क्योंकि ब्रह्माण्ड की चिन्ता और चिन्तन उनका सरोकार है। कबीर की रचनात्मक अभिव्यक्ति में भारतीय संस्कृति की मौलिक एवं गहरी मूल्य-दृष्टि को ग्रहण करना सम्भव है। धर्म को जिस व्यापक आधार पर इसमें स्वीकार किया गया है, उस पर विचार करने से इस दृष्टि को समझा जा सकता है।

१.२ कबीरदास का जीवन परिचय

कबीर उन महापुरूषों की परम्परा में है जो अपने सम्बन्ध में कोई परिचय देना नहीं चाहते। फिर भी कवि की अभिव्यक्ति, अपने व्यक्तित्व से अछूती नहीं रह सकती। उनकी रचनाओं में जहाँ-तहाँ कुछ-न-कुछ निजी बातें झलक ही जाती है। कबीर की रचनाओं में भी हमें उनके जीवन के सम्बन्ध में आक्षरिक साखी के रूप में कुछ सामग्री मिल जाती है। उन्होंने कई स्थलों पर यह स्पष्ट रूप से घोषित किया है वह जुलाहा हैं उन्होंने लिखा है।

तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा चीन्हित मोर गियाना
अथवा
जाति जुलाहा नाम कबीरा बनि-बनि फिरौं उदासी

कहते हैं कि कबीरदास का जन्म विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उक्त ब्राह्मणी समाज के भय से नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के किनारे फेंक आई थी। नीरू और नीमा नामक दम्पति उन्हें वहाँ से उठाकर अपने घर ले आए और उनका पालन पोषण किया। कबीर सम्प्रदाय में माना जाता है कि कबीरदास का जन्म संवत् १४५६ (सन् १३९९) की ज्येष्ठ पूर्णिमा को हुआ और उस दिन सोमवार था -

चौदह सौ पचपन साल गए चन्द्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसावत को पूरनमासी प्रकट मय।

कबीर रामानंद के शिष्य हुए और राम का नाम जपने लगे। इनकी पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र और पुत्री का नाम कमाल और कमाली था। कबीर की साखियों से इनका जुलाहा होना सिद्ध होता है। कबीर ने कहीं-कहीं अपने लिए 'कोरी' शब्द का भी उपयोग किया है :

हरि को नाम अभै पद दाता, कहे कबीरा कोरी
अथवा
कोरी को काहू मरम न जाना, सब जग आन तनायो तना

कबीर यदि 'कोरी' होंगे तो हिन्दू माने जाएंगे। इस 'कोरी' और 'जुलाहे' की सन्धि बैठाने के लिए एक कल्पना यह की गई है कि कबीर पहले कोरी हिन्दू थे, फिर मुसलमान हुए तो इनका परिवार जुलाहा कहलाया, किन्तु इस मत को मान्यता नहीं मिली। कबीर के सम्बन्ध में उन्हीं के समकालीन शिष्य रैदास ने कहा है -

"जाकैं ईद बकरीद नित गउरे वध करें मानिये सेष सहीद पीरों"

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर का जन्म शुद्ध मुसलमान कुल में हुआ था। वह जन्म से मुसलमान थे इस मत की प्रतिष्ठा करने वाले, कबीर के मत की समीक्षा करते हुए उसमें कबीर का साम्य दिखाते है। इनका कहना है कि यह साम्य आकस्मिक नहीं, कबीर के गहरे मुसलमानी संस्कारों और आस्थाओं के कारण है। कबीर अपनी सावि में स्पष्ट कहते हैं - मैं न हिन्दू और न मुसलमान।

इसके उत्तर में कबीर को मुसलमान मानने वाले कहते हैं कि कबीर जन्म से मुसलमान होते हुए भी 'जिन्दीक' अथवा जिन्द थे। इस प्रकार कबीर हिन्दू तो जन्म से ही नहीं थे, मुसलमान भी वह कट्टर नहीं थे, पर दूसरे शोधकर्ता कहते हैं कि कबीर की वाणियों में नाथपंथी सिद्धांतों का गहरा प्रभाव स्पष्ट है।

इस विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि कबीर का व्यक्तित्व जटिल था। एक और वह मुसलमान धर्म और उसमें विश्वास से परिचित होते हुए भी जिन्दीक सूफी थे, दूसरी ओर उन्हें नाथपंथियों तथा योगियों के सिद्धांतो पर भी गहरा विश्वास था।

१.३ कबीर की रचनाएँ

कबीर अपनी अभिव्यक्ति की रचनात्मक दृष्टि तथा प्रक्रिया के प्रति सबसे कम जागरुक है। उनमें सांसारिक व्यवहारिक जीवन के प्रति उपेक्षा की सीमा तक पहुँचा हुआ तटस्थ भाव मिलता है। इसी प्रकार वह अपनी अभिव्यक्ति के प्रति भी तटस्थता के साथ अलमस्त है। उनके फटकार, उनके व्यंग्य, उपहास तथा संबोधन में भी ऐसी ही मार्मिकता तथा प्रभावोत्पादकता है।

कबीर के लिए कहा गया है कि उन्होंने निरक्षर होने के सम्बन्ध में स्वयं कथन कर दिया है। इस कथन का प्रमाण कबीर-बीजक की एक 'साखी' द्वारा दिया जाता है, जिसमें कहा गया है कि न तो मैंने लेखनी हाथ में ली न कभी कागज और स्याही का ही स्पर्श किया। चार युगों की बाते मैंने केवल अपने मुख द्वारा जता दी है -

मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नही हाथ।
चरिउ युग को महातम, मुखहि जनाई बात।।

कबीर की जो रचनाएँ हमें आज उपलब्ध हैं वे विभिन्न संग्रहो के रूप में है। अधिकतर पद, साखियों, रमैनियों तथा कुछ अन्य प्रकार की भी हैं। इनमें से कुछ तो 'पंचवानी', 'सर्वांगी', 'आदि ग्रंथ' - जैसे बड़े-बड़े संग्रह ग्रंथो में अन्य कवियों की रचनाओं के साथ संग्रहित पाई जाती है। इसके अतिरिक्त कतिपय गुटको में भी उनकी रचनाएँ मिलती है। इसके अतिरिक्त 'कबीर-बीजक', 'कबीर की बाणी', 'सत्य कबीर की साखी' जैसे स्वतंत्र संग्रह भी विद्यमान है।

१.४ कबीरदास के पदों में सदगुरु महिमां

कबीरदास एक ऐसा नाम जिसे साहित्यजगत में हर कोई जानता है जो साहित्य से जुड़ा है वह भी और जो साहित्य जगत से जुड़ा नहीं है वह भी। क्योंकि कबीरदासजी समाज सुधारक थे उन्होंने अपनी वाणी द्वारा समाज को नयी दिशा दी। इसीलिए उनके दोहे आज भी प्रासंगिक है और हर एक व्यक्ति के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करते हैं। कबीरदासजी के पदों में गुरु की महिमागान के अनेक दोहे है। सभी दोहों में अनकों उदाहरण द्वारा समाज को, जन-सामान्य व्यक्ति को यह समझाने की कोशिश की है कि जीवन में गुरु ही ज्ञान है, गुरु की सीख जीवन के अंधेरे के दूर कर उजाला देती है, गुरु के ज्ञान से जीवन सार्थक बनता है। गुरु के गुणों की महिमा का गान कबीर इस प्रकार करते हैं -

'सब धरती कागज करुँ, लिखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करुँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।'

गुरु के गुणों का बखान करते हुए कबीर कहते है यदि सारी पृथ्वी को कागज और जंगल के सभी पेड़ों को कलम करके और सातों समुद्र को स्याही बनाकर गुरु के गुण लिखने लगे तो यह सभी साधन कम पड़ जायेंगे लेकिन गुरु का बखान पूरा नहीं होगा।

इसी प्रकार कबीरदासजी ने गुरु को पारस-पत्थर के समान माना है और कहा है -

'गुरु पारस को अन्तरो, जानत है सब संत।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लये महन्त।।'

गुरु और पारस पत्थर और उनके गुणों में ही अन्तर है। पारस पत्थर पर लोहा घिसने से वह सोना बन जाता है। कबीर के अनुसार सबसे बड़ा आश्रय स्थान गुरु का है इस संबंध में कबीरदासजी ने गुरु में कुछ विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक माना है जैसे गुरु उच्च कोटि का होना चाहिए, उसमें शिष्य का पथ-प्रदर्शन निर्धारित करने की पूर्ण क्षमता होनी चाहिए। यदि इस प्रकार सर्व गुणों का साधक परिपूर्ण सद्‌गुरु की प्राप्ति हमें हो जाती है तो ईश्वर यदि रूठ जाये तो भी गुरु की भक्ति हमारा रक्षण अच्छी प्रकार से कर हमें मोक्ष दिला सकती है।

कबीर दासजी को ऐसे सद्‌गुरु की प्राप्ति हो चुकी थी यही कारण था उनके गुरु भक्ति का और सद्‌गुरु महिमागान का जिस दिन से कबीरदासजी ने महागुरु रामनंदजी का आश्रय प्राप्त किया उसी दिन से उन्होंने सहज समाधि की दीक्षा ली काम-काज को सेवा मान लिया, मुख की वाणी नाम-जप-हो गया, खाना-पीना पूजा की तरह हो गया और सोना प्रणाम बन गया। उनकी गुरु भक्ति से उन्होंने ईश्वर के दर्शन किए और अनहद नाम का घोष सुना यह सब उनके लिए अत्यंत उल्लासमयी और आनंददायी था इसे पर रूप में इस प्रकार व्याख्यायित किया है।

साधो, सहज समाधि भली,
गुरु प्रताप जा दिन तै उपजी, दिन, दिन अधिक चली,
जहँ तहँ डोलों सोई परिकरमा, जो कुछ करो सो सेवा
जब सोवों तब करों दण्डवत, पूजो और न देवा

इस प्रकार कबीर का कहना है कि मैं तो लोकाचार और वेदाचार में बंधता जा रहा था लेकिन सौभाग्यवश सद्‌गुरु मुझे मिल गए और उन्होंने ज्ञानरूपी दीपक मेरे हाथ में रख दिया और इस दीपक के प्रकाश से मेरा जीवन प्रज्ज्वलित हो उठा। कबीरदासजी अपने पदों के माध्यम से गुरु के न मिलने की शंका को भी वर्णित करते है। वे कहते हैं कि यदि मुझे सद्‌गुरु नहीं मिलते तो बहुत अनिष्ट हो जाता मैं भोग-वासना में लिप्त हो उसी में अपना जीवन व्यतीत कर देता। गुरु की कृपा से ही में माया से बच सका -

"माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पडंत
कहै कबीर गुरु ज्ञान थे, एक आध उबरत"

इस प्रकार सच्चे गुरु समान जगत में कोई नहीं है यहाँ तक कि ईश्वर भी नहीं क्योंकि एक सच्चा गुरु परमात्मा के समान अपने शिष्य की भलाई करेगा। परमात्मा से मिलन कराने वाला भी गुरु ही है। मनुष्य के अहं भाव को जड़ से मिटाने वाला भी गुरु ही है यह वर्णन कबीरदासजी ने इस प्रकार किया है

सतगुरु मारया बाण भरि, धरि करि सूधि मूठि
अगि उधाडे लागिया, गई दवा सू फूटि...

इस प्रकार कबीर की दृष्टि में गुरु अपने शिष्य पर अनंत उपकार करने वाले है। सद्‌गुरु अपने शिष्य को वह अनंत दृष्टि प्रदान करते है जिससे वह परमात्मा का साक्षात्कार करने के साथ-साथ अपने जीवन में केवल अलौकिक मार्ग का ही अवलंबन करता है। कबीरदासजी सर्व व्याप्ति द्‌वारा गुरु सेवा का आग्रह करते है वे कहते है गुरु सेवा भक्ति का अनिवार्य साधन है। स्वयं कबीरदासजी ने गुरु सेवा द्‌वारा ही भगवत भक्ति की प्राप्ति की ओर संकेत किया है। कबीर कहते हैं -

'सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनंत दिखावण हार...'

कबीरदासजी ने गुरु महिमा में गुरु की महत्ता ईश्वर से भी उच्च कोटि की दर्शा दी है। गुरु को गोविन्द से उच्च पद देते हुए कबीर कहते है।

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागो पाया
बालिहारी गुरु आपणै, गोविन्द दियो बताय'

इस प्रकार ईश्वर की प्राप्ति कराने वाले गुरु ईश्वर से भी श्रेष्ठ है। कबीर की दृष्टि में गुरु असाधारण है अलौकिक है गुरु के ज्ञान से बंधन र्निबंध हो गए अगम्य को गति मिल गई, नाले का पानी गंगा में जाकर गंगा जल बन गया, गुरु ऐसे मिले कि जीवन में नया रंग छा गया, उन्होंने जाति-पाति नहीं विचारी न वर्ण विचारा मुझे अपने आप में मिला लिया और नयी शक्ति का संचार मुझमें कर दिया। इस प्रकार अनेक आयाम और जीवन के तत्वों को गुरु में समाकर गुरु की महत्ता का वर्णन कबीर ने किया है।

१.५ कबीर - सुमिरन भक्ति को अंग

कबीर दासजी भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा में संत काव्यधारा के प्रमुख कवि माने जाते है। कबीर की भक्ति साधना में मूर्ति, रंग, रूप, आकार प्रकार को कोई स्थान न था उन्होंने ईश्वर की भक्ति नाम-जप या नाम स्मरण के माध्यम से की है। कबीरदासजी के अनुसार आत्मा को वास्तविक सुख परमात्मा द्वारा ही प्राप्त होता है। और ईश्वर के नाम स्मरण की बात कबीर दृढ़ता से स्वीकार करते है। मन-कर्म-वचन से प्रभु नाम का स्मरण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है ऐसा कबीर मानते है -

'कबीर कहता जात हूँ, सुणता है सब कोई।
राम करें भल होइगा, नहितर भला न होई।।'

कबीर दासजी राम-नाम स्मरण में विश्वास रखते हैं उनका मानना है कि मानव जीवन मोह-माया में इतना उलझ गया है कि राम से ईश्वर से मानव बिछड़ गया है और ईश्वर प्राप्ति के लिए अमृत जैसे गुणों का गान करके ईश्वर को रिझाना होगा जैसे कोई फूटा हुआ नग संधि से संधि मिलाकर एक कर लिया जाता है।

'कबीर राम रिझाई लैं, मुखि अमृत गुण गाइ।
फूटा नग ज्यूँ जोड़ि मन, संधे संधि मिलाई।।'

कबीर समाज सुधारक भी थे उन्होंने समाज के प्रति एक अच्छे नागरिक होने का हर दायित्व निभाया समाज में व्याप्त कुरीतियों की अवहेलना कर जन जागृति का अथक प्रयास उनके पदों के माध्यम से मिलता है वही मानव मन की पीड़ा, मानव का जीवन से अति मोह-वासना में जब परिवर्तित होता है तो मानव परमात्मा से दूर चला जाता है। कबीर अपने पदों के माध्यम से स्वयं को और मानव को चेता रहे है। अब इस मोह-माया से बाहर आओ अपने सोये हुए मन को जागृत करो। इस लम्बी जीवन यात्रा में बिछुडे हुए ईश्वर को अपने सुमिरन से खोज कर उसके साथ जीवन को आगे बढ़ाने का सुझाव मानव मात्र को देते है।

'कबीरा सूता क्या करै, काहे न देखै जागि।
जाको संग तै बीछुडया, ताही के संग लागि।।'

कबीर की भक्ति भावना यह कहती है कि जो प्रभु का नाम फल की इच्छा आकांक्षा से लेता है उसे ईश्वर द्वारा उत्तम फल की प्राप्ति होती है लेकिन जो नर ईश्वर का ध्यान निष्काम भावना से करता है उसे परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है उसका संपूर्ण जीवन सफल हो जाता है।

'सहकामी सुमिरन करै पावै उत्तम धाम
निहकामी सुमिरन करै पावै अबिचल राम।'

कबीर दासजी मानते है कि किसी भी प्रकार की बहस या विवाद करना व्यर्थ है इस सबसे कुछ मिलने वाला नहीं है। यदि जीवन में कुछ पाना चाहते हो तो पूर्ण चित्त से प्रभु नामस्मरण करो। आपके सभी कर्मो का सार इसी में नीहित मिलेगा।

‘वाद विवाद मत करो करु नित एक विचार
नाम सुमिर चित लायके, सब करनी में सार।’

कबीर दासजी की भक्ति भावना में माना गया है। सत्य का पालन जीवन में सबसे बड़ी तपस्या है और झूठ सबसे बड़ा पाप। कर्म जिसके ह्रदय में सत्य का वास है उसके मन में ही प्रभु वास करते है। इस प्रकार कबीरदासजी सत्य मार्ग का अवलंबन करते है और झूठ को पाखंड मानकर धिक्कारते है।

सच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप
जाके ह्रदय संच है, ताके ह्रदय आप

कबीर यह भी मानते हैं कि जीवन में सबसे सरल और आसान कुछ है तो वह है ईश्वर की आराधना करना। जितना चाहे आप उतना ईश्वर का नाम ले सकते है इस नाम स्मरण से जो भी प्राप्त होगा वह बहुत अच्छा होगा। कबीर दासजी कहते है कि राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट लो। जब तक जीवन है तभी तक राम नाम स्मरण का अवसर है। जीवन के उत्तर काल अर्थात अंतकाल में यह अवसर आपको नहीं मिलेगा। और उस समय पश्चाताप करने के अलावा और कुछ आपके हाथ में नहीं रहेगा।

‘राम नाम की लूट है, लूट सके सो लूट
अंत काल पछतायेगा, जब प्राण जायेगा छूट।।’

कबीर ने समाज में बस रहे सभी मानव वह नर हो या नारी जब तक मोह-माया काम-वासना में है उनका जीवन नरक के समान है और जो निष्काम जीवन जी कर राम नाम का सुमिरन करता है उसे राम की शरण प्राप्ति होती है अर्थात ईश्वर से साक्षात्कार हो जाता है।

‘नर नारी सब नरक है, जब लग देह सकाम
कहै कबीर ते राम के जो सुमिरै निहकाम।।’

१.६ कबीर के दोहे - सदगुरू महिमां अंग (व्याख्या)

१) निस अँधियारी कारणें, चौरासी लखं चंद।
अति आतुर उदै किया, तऊ दिष्टि नहिं मंद।।

शब्दार्थ - निस = रात्रि, लख = लाख, चंद = चंद्रमा, उदै = उचित, दिष्टि = दृष्टि

व्याख्या - रात के अंधकार को दूर करने के लिए मनुष्य ने चौरासी लाख चन्द्रों को बड़ी आतुरता से उदय किया किन्तु तब भी उसकी दृष्टि मंद ही रह गयी।

निस अँधियारी अंधकार का प्रतीक है। जीवात्मा अज्ञान के अंधकार से आवृत है। इस अंधकार के निराकरण के लिए वह अनेक उपाय करता है, फलतः कर्म कें बंधन में पड़ता हुआ चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता है किन्तु उसका अज्ञान दूर नहीं होता। चौरासी लाख चन्द्र को उदय करने का अभिप्राय चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने से भी है। मनुष्य अनेक योनियों में भ्रमण करता है फिर भी अज्ञानी ही रहता है। एक अन्य अर्थ यह भी है कि चौरासी लाख चंद्र का प्रकाश भी ईश्वर की कृपा के बिना या सद्गुरु के ज्ञान के बिना जीवात्मा के आज्ञान को दूर नहीं कर सकता।

२) सतगुरू की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार।।

शब्दार्थ - अनँत = असीमित, लोचन = आँख, उघाड़िया = उद्घाटित किया

व्याख्या - कबीरदासजी सतगुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ज्ञान के आलोक से संपन्न गुरु की महिमा अपार है, उन्होंने हमारे ऊपर अनेक उपकार किए हैं। गुरु ने हमारे अपार शक्ति सम्पन्न चक्षु को खोल दिया है, जिससे मैं परम तत्व का दर्शन कर सका। ईश्वरीय आलोक का दर्शन गुरु की कृपा से ही सम्भव है।

कबीर ने तत्सम और तद्भव शब्दों के उचित विन्यास से गुरु की अपार शक्ति, उपकारी वृत्ति तथा आध्यात्मिक कर्म को व्यंजित किया है।

३) दीपक वीया तेल भरि, वाती दई अघट्ट।
पूरा किया विसाहुँणाँ, बहुरी न आँचौं हट्ट।।

शब्दार्थ - अघट्ट = कमी न घटने वाली, विसाहुणा = खरीद, आवागमन का चक्र, बहुरी = फिर से, दीवास, हट्ट = बाजार, संसार

व्याख्या - गुरु ने ज्ञान रूपी दीपक में भक्ति (प्रेम) का तेल भर कर दिया फिर उसमे कभी न घटने वाली वाती भी डाल दी। इसी दीपक के आलोक में कबीर ने संसार रूपी हाट में क्रय - विक्रय किया

४) बलिहारी गुर आपणैं, द्यौं हाड़ी कँ बार।
जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार।।

शब्दार्थ - द्यौं हड़ी = दिन में बार - देर

व्याख्या - कबीरदासजी कहते है कि मैं अपने गुरु पर बार-बार बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने मुझे मनुष्य से देवता बनाने में तनिक भी देर नहीं की। अर्थात जिस गुरु ने अपनी अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति द्वारा मुझे मनुष्य से देवता बना दिया। रूपान्तरण की इस प्रक्रिया में तनिक भी देर नहीं लगी। इस तरह के गुरु के प्रति मैं दिन में कितनी बार बलिहारी जाऊँ।

सतगुर लई कमाँण करि, बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्य प्रीति सूँ, भीतरि रह्या सरीर।

शब्दार्थ : लई - लिया, कमाँण - धनुष, बाँहण - चलाना, बाह्या - चलाया

व्याख्या - सतगुरु ने धनुष हाथ में लेकर वाण चलाना शुरु कर दिया। उन्होंने एक प्रेम का बाण चलाया जो मेरे भीतर जाकर शरीर में ही अवरुद्ध हो गया। कबीरदासजी कहते हैं कि गुरु ने अपनी वाणी से बहुत से उपदेशों को अपने शिष्यों के कर्ण तक पहुँचाया। शिष्य अपनी योग्यता, रुचि और क्षमता के अनुसार उनके अभिप्राय को आत्मसात् करता है। गुरु के ज्ञानोपदेश का कुछ अंश शिष्य की बुद्धि रूपी गुफा में प्रवेश करता है और उसके मर्म को बेच देता है। कबीर के अनुसार प्रीति का शब्द वाण सबसे अधिक मर्म भेदी और प्रभावी होता है। सतगुरु ने जब अपना ज्ञानरूपी बाण शिष्य के ह्रदय में चलाया तो वह शिष्य के अर्न्तमन को पूरी तरह वेधकर उसमें ज्ञान का प्रकाश फैला गया।

विशेष :
१) कबीर की भाषा खड़ी बोली के अधिक समीप है।
२) करि, प्रीति, भीतरि आदि शब्दों में विभक्तिता का अवशेष दष्ट्व्य है।
३) कबीर अपने शिष्यत्व की योग्यता का भी इस सावि में संकेत करते है।

१.७ कबीर के दोहे - सुमिरन भजन महिमा कौ अंग (व्याख्या)

१) कबीर सूता क्या करै, जागि न जपै पुरारि।
एक दिन भी सोवणौं, लम्बे पाँव पसारि।।

शब्दार्थ - सोवणां - शवन, पाँव - पेर, पसारि - फैलाकर

व्याख्या - कबीरदासजी संसार के सभी जीवों के संबोधित करते हुए कहते है कि हे जीव। तुम सभी लोग अज्ञान की मुद्रा में क्यों पड़े हो, जागृत होकर तुम मुरारी / हरि का जाप क्यों नहीं करते? एक दिन ऐसा आएगा जब तुम पैरों को लम्बा फैलाकर हमेशा के लिए सो जाओगे। उसके बाद तुम कभी जागृतावस्था को प्राप्त नहीं करोगे। अतः जब तक यह जीवन है तुम उसे व्यर्थ में खोकर अर्थात अज्ञानता में व्यतीत मत करो। तुम प्रभु का ध्यान करो और अपने जीवन को सार्थक करो।

विशेष :
१) सावि के प्रथम चरण में गूढ़ोवित, द्वितीय चरण में पर्यायोचित अलंकार है।
२) सूता और जागि लाक्षणिक प्रयोग है 'सोवंणा' में श्लेष की छाया है क्योंकि इसका अर्थ शयन और मृत्यु दोनों है।
३) पूरी सावि में जीवन की नश्वरता और जीवन के सार्थक उपयोग की चिंता है।

२) तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।
वारि फेरि बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।

शब्दार्थ - हूँ = अहंकार, वारी = न्योछावर,

व्याख्या - जीवात्मा ईश्वर के प्रति अपने को पूरी तरह समर्पित करती हुई कहती है कि हे परमात्मा तू सर्वत्र विद्‌यमान है, तू कण-कण में है ऐसा कहते कहते मेरा अहंकार समाप्त हो गया। इस तरह भगवान पर न्यौछावर होते-होते मैं उन पर पूर्णतया न्यौछावर हो गई। अब तो मैं जिधर भी देखती हूँ, उधर तू ही तू दिखाई देता है।

'तत्वमसि' अर्थात केवल ब्रह्म की सत्ता ही सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है। इस तरह की भावना तथा विचार का निरन्तर ध्यान करने से जीव का अहंकार समाप्त हो जाता है। उसका अलग अस्तित्व नहीं रह जाता। वह अपने को पूर्ण ब्रह्म से अभिन्न या ब्रह्म ही समझने लगता है।

विशेष - कबीर ने इस साखी में ज्ञान और प्रेम का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है।

३) च्यंता तो हरि नाँव की, और न चिंता दास।
जे कुछ चितवैं राम बिन, सोह काल कौ पास।।

शब्दार्थ - च्यंता = चिंता, नाँव = नाम, दास = भक्त, सोइ = वही, कौ = का, पास = फंदा, जाल

व्याख्या - कबीरदासजी कहते है कि भक्त को यदि किसी तरह की चिंता है तो राम के नाम जप की है। किसी अन्य प्रकार कि चिंता उसे नहीं रहती। वह न तो सुख सम्पत्ति की चिंता करता है, न परिवार की चिंता करता है। एक सांसारिक व्यक्ति की तरह वह विभिन्न दुशचिंताओं से घिरा नहीं रहता। वह केवल राम के नाम के मर्म को समझने के प्रयत्न में लीन रहता है। नाम के बहाने उसके विराट रूप को पहचानने के लिए तत्पर रहता है। कबीर का मानना है कि राम के बिना जो चिंता अथवा विचार-विमर्श किया जाता है वही तो मृत्यू का जाल होता है, वही कर्म का बन्धन होता है। उसी सांसारिक कार्यो मे फँसकर मनुष्य अनेक योनियों में भ्रमण करता रहता है और बार-बार जन्म-मरण के चक्र में फंसता जाता है।

विशेष -

१) कबीर मानते हैं कि राम रहित विचार, ज्ञान, दर्शन सब कुछ काल के फंदे है, मुक्ति के साधन नहीं।
२) इस साखी में अर्थान्तरनन्यास साखी का स्वाभाविक चित्रण है।

कबीर निरमैं राम जपि, जब लगि दीवै वाति।
तेल घट्‌या बाती बुझी, (तब) सोवैगा दिन राति।।

शब्दार्थ - निरमै = निर्भय, दीवै = दीपक में अर्थात शरीर में, बाती = बत्ती, घट्‌या = घटना या कम

व्याख्या - कबीरदासजी कहते हैं कि हे जीव जब तक इस शरीर रूपी दिए में आत्मा रूपी तेल है तब तक तू निर्भय अर्थात भय रहित होकर राम के नाम का जाप कर। जब इस शरीर से सांस निकल जाएगी, आत्मा रूपी तेल कम हो जाएगा और सांस रूपी वाती बुझ जाएगी तब तो दिन-रात सोना ही है।

विशेष -

१) गूढ़ोक्ति अलंकार है
२) लाक्षणिक प्रयोग है
३) सोदेगा में श्लेष की छाया दिखाई पड़ती है।

४) जिहि हरि जैसा जाणियाँ, तिन कूँ तैसा लाभ।
ओसों प्यास न भाजइ, लब जग धसै न आभ।।

शब्दार्थ - जाणियाँ = जानना, भाजइ - बुझना

व्याख्या - कबीरदासजी कहते है कि जो ईश्वर को जिस रूप में भजता है अर्थात याद करता है, उसको ईश्वर का वैसा ही लाभ प्राप्त होता है। जब तक जीव अपने ह्रदय की गहराई से ईश्वर को याद नहीं करता, तब तक उसे प्रभु की कृपा प्राप्त नहीं होती। ओस से प्यास नहीं बुझती। प्यास बुझाने के लिए होठों को पूरी तरह पानी में भिगाना ही पड़ता है।

विशेष - ईश्वर की महिमा का वर्णन किया गया है।

५) भली भई जो गुर मिले, नहिं तर होती हानि।
दीपक ज्योति पतंग ज्यौं, पड़ता पुरी जानि।।

शब्दार्थ - भलि भइ = अच्छा हुआ

व्याख्या - कबीरदासजी का कहना है कि गुरु का मिलना मेरे लिए अतिशय कल्याणकारी रहा अन्यथा बहुत बड़ी हानि होती। दीपक को देखकर जिस प्रकार पतंगे आकृष्ट होकर कूद पड़ते हैं, उसी तरह मैं भी विषय वासनाओं की ओर पूरे ज्ञान के साथ टूट पड़ता।

विशेष -

१) इस साखी में गुरु की महिमा और उपकार की व्यंजना है। कबीर उपमा और रूपकातिश्योक्ति अलंकार के द्वारा अपने भाव को स्पष्ट करते है।
२) दीपक और पतंग की अप्रस्तुत योजना भी द्रष्ट्व्य है।

१.८ सारांश

संत काव्य धारा के शिरोमणि कवि कबीर का अध्ययन हमने इस इकाई में किया है। प्रमुख रूप से कबीर पदावली में वर्णित गुरू की महिमा और भजन महिमा से विद्यार्थीयों को अवगत कराया इकाई के अध्ययन उपरांत विद्यार्थी गुरू-महिमा और भजन-महिमा का अध्ययन कर पदों की व्याख्या और इस विषय से जुड़े प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।

१.९ बोध प्रश्न

१) कबीरदासजी निर्गुण ज्ञानमार्गीय शाखा के कवि थे। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

२) कबीरदासजी का परिचय देते हुए उनकी ‘सतगुरू महिमा को अंग’ दोहे की व्याख्या कीजिए।

३) ‘सुमिरन भजन महिमा को अंग’ की साखियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

४) कबीर गुरु की महिमा का वर्णन किस प्रकार करते हैं ?

५) कबीर के अनुसार जीवन में गुरु के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

६) कबीर के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

१.१० संदर्भ पुस्तके

१) कबीर ग्रंथावली (सटीक) लेखक - रामकिशोर शर्मा

२) कबीर एक नवी दृष्टि लेखक - रघुवंश

३) कबीर का रहस्यवाद - डॉ. रामकुमार वर्मा

४) कबीर ग्रंथावली लेखक - श्यामसुंदरदास

५) पूरा कबीर - बलदेव वंशी

६) कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी

❖❖❖❖

२

सूरदास के पद

इकाई की रुपरेखा :

२.० उद्‌देश्य
२.१ प्रस्तावना
२.२ सूरदास का जीवन परिचय
२.३ सूरदास की रचनाएँ
२.४ सूरदास की भक्ति भावना
२.५ सूरदास के पद
२.६ सारांश
२.७ बोध प्रश्न
२.८ संदर्भ पुस्तकें

२.० उद्‌देश्य

इस इकाई में सूरदास से संबंधित बिंदुओं का अध्ययन किया जाएगा-

- सूरदास का जीवन वृत्त एवं उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही उनकी आध्यात्मिक एवं धार्मिक उपलब्धियों पर भी विचार किया जाएगा।
- सूरदास की जो रचनाएँ विभिन्न संग्रहों के रूप में उपलब्ध हैं, उनका भी अध्ययन किया जाएगा।
- पाठ्‌यक्रम में शामिल सूरदास के पद का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

२.१ प्रस्तावना

सूरदास प्रेम और भक्ति के कवि है। वे जिस प्रेम के गायक है उसका प्रसार मानव-जीवन से लेकर प्रकृति जगत और ईश्वर तक है। उनके काव्य में मानवीय प्रेम की अपार व्यापकता और विविधता है। यही मानवीय प्रेम ईश्वरीय प्रेम या भक्ति के रूप में भी व्यक्त हुआ है। सूर का भक्ति मार्ग प्रेम मार्ग ही है। प्रेम सूर की काव्यानुभूति, जीवनानुभूति और भक्ति की अनुभूति का केंद्रीय तत्व है। सूर साहित्य में राग का विस्तार है और मानवीय राग की सीमा में ही ईश्वरीय राग भी समाहित है। सूर सागर में कृष्ण की सम्पूर्ण लीलाओं का कारण तत्व प्रेम ही है। प्रेम के स्तर पर ऊँच-नीच, धनी-गरीब, स्त्री-पुरुष आदि में कोई भेद नहीं है। प्रेम ही भक्ति का आधार है। प्राण, मन, बुद्धि और चित्त के स्तर पर ऐक्य ही प्रेम की सिद्धावस्था है।

२.२ सूरदास का जीवन परिचय

सूरदास का आविर्भाव काल भारतीय संस्कृति का संक्रातिकाल है। यह धर्म भावना और साधना के वैविध्य एवं वैचित्रय का काल है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पौत्र गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता तथा सूरदासकृत सूरसारावली और साहित्य लहरी के आधारपर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनका जन्म समय संवत् १५४० (सन १४७८ ई) और मृत्यू संवत् १६२० (सन १५८९ ई) स्वीकार की है। कुछ विद्वान सूरदास का जन्म स्थान रूनकता (रेणुका क्षेत्र) मानते हैं। ब्रज प्रदेश में सूर के समकालीन कृष्ण भक्त सम्प्रदायों में हरिदासी सम्प्रदाय और राधावल्लभ सम्प्रदाय प्रमुख थे और सूरदास का उनसे निकट का सम्पर्क था।

सूरदास घर-बार छोड़कर गाँव के बाहर पीपल के नीचे बैठकर शकुन विचार करते और भगवत भजन में लीन रहते। आगरा और मथुरा के बीच गऊ घाट में निवास करते हुए इनकी भक्ति और गायन की ख्याति इतनी फैली कि मथुरा जाते समय स्वयं महाप्रभु इनसे मिलने आये। महाप्रभु वल्लभाचार्य की आज्ञा से श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन कीर्तन करने लगे। ये अष्टछाप के नाम से प्रसिद्ध रहे हैं। इन सब में सूरदास का नाम सर्वोपरि रहा है। सूरदास मुख्य रूप से स्नेह, वात्सल्य ममता और प्रेम के कवि रहे है। वात्सल्य रस का तो इन्हें अवतार माना गया है। भ्रमरगीत इनका सर्वश्रेष्ठ विरह एवं उपलब्ध काव्य माना गया है। सूरसागर, साहित्य लहरी एवं सूरसारावली इनकी काव्य रचनाएं है।

सूरदास की अक्षय कीर्ति का आधार सूरसागर है। सूरसागर में सवा लाख पद थे परन्तु उपलब्ध सूरसागर में पाँच हजार पद ही मिलते हैं। इसमें कुल बारह स्कन्ध (अध्याय) हैं। सूर ने कृष्ण की बाल छवि की मोहक मुद्राओं का कलात्मक वर्णन किया है। बालक श्रीकृष्ण का सौंदर्य तो अपार है ही, उनकी बाललीलाएं भी अत्यंत आकर्षक है। कृष्ण पहले घुटनों के बल चलते हैं, फिर पैरों के बल खड़े होने की कोशिश करते हैं। कुछ सयाने होने पर कृष्ण की चंचलता और विनोदप्रियता में कुछ अधिक वृद्धि हुई है। कृष्ण कभी किसी गोपी के घर माखन चुराते हैं, सखाओं में बाँटते हैं तो कभी बर्तन फोड़ डालते हैं।

२.३ सूरदास की रचनाएँ

सूरदासजी द्वारा लिखित पाँच ग्रंथ बताए जाते है।

१) सूरसागर २) सूरसारावली ३) साहित्य-लहरी ४) नल-दमयंती ५) ब्याहलो

जिनमें से सूर सागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी के प्रमाण मिलते हैं। नागरी प्रचारिणी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों की विवरण तालिका में सूरदास के १६ ग्रंथों का उल्लेख किया गया है। सूरसागर में करीब एक लाख पद होने की बात कही जाती है। वर्तमान संस्करणों में करीब पाँच हजार पद ही मिलते है। सूरसारावली में ११०७ छन्द है। इसकी रचना संवत १६०२ में होने का प्रमाण मिलता है। साहित्य लहरी में ११८ पद है। रस की दृष्टि से यह ग्रंथ श्रृंगार की कोटि में आता है।

२.४ सूरदास की भक्ति भावना

भक्तिकालीन काव्य संपूर्ण साहित्यिक विशेषताओं से परिपूर्ण काव्य है इसीलिए इसे साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। भक्ति के सभी रूप वह निर्गुण हो या सगुण उनका सर्वांगीण अध्ययन भक्तिकालीन के काव्य के माध्यम से किया जा सकता है। सगुण काव्यधारा में राम और कृष्ण के अथाह जीवन चरित की सुंदर काव्य व्यंजना से भक्ति काव्य ओत-प्रोत है। तुलसीदास कृत रामचरित मानस राम के महामानतत्व की सुंदर कथा का वर्णन करती है वहीं सूरदास कृत सूरसागर श्री कृष्ण के महानायकत्व का संपूर्ण चित्रपट हमारे सामने प्रस्तुत करती है। भक्त कवियों सर्वप्रथम बड़े आदर से सूरदासजी का नाम लिया जाता है उनकी भक्ति अष्टांग योग की भक्ति मानी जाती है। उनके पदों को पढ़कर या सुनकर ऐसा प्रतीत होता है मानो श्री कृष्ण की पदों में रचित सभी भाव-भंगिमाएँ हमारी सामने चित्र या नाट्य रूप में उभर आयी है। इस प्रकार दृष्टि विधान की पराकाष्ठा से यह मान लेना कि सूरदास जन्मांध थे बड़े अचरज की बात लगती है। लेकिन उन्होने अपना तन-मन-धन श्रीकृष्ण को अर्पण कर दिया था इसीलिए उस समर्पण भाव की भक्ति अथाह सागर रूपी साहित्य हमारे समक्ष प्रस्तुत है।

सूरदासजी की भक्ति में वैष्णव सम्प्रदाय के छः नियमो का पालन पूर्ण रूप से किया गया है। यह छः नियम इस प्रकार है - ईष्टदेव की अनुकुलता का संकल्प, प्रतिकूल बातों का परित्याग, अपने आराध्य में दृढ़ विश्वास, आराध्य का यशोगान, सर्वस्व समर्पण की भावना और दैन्य निरुपण। सूरदासजी वल्लभाचार्यजी से दीक्षा लेने के उपरांत उनकी भक्ति मूल रूप से पुष्टि मार्गीय हो गई। पुष्टमार्ग की भक्ति में सेवा को प्रमुख माना गया है। पुष्टिमार्गीय सेवा के अनुसार ही सूरदासजी ने कृष्ण को परब्रह्म रूपी मानकर मित्र या सखा रूप में उनकी भक्ति की है। इसीलिए उनके काव्य में कृष्ण का माधुर्य रूप दृष्टिगोचर होता है। पुष्टिमार्गीय भक्ति में भक्त अपना दिन-रात आणि प्रहर, दु:ख-सुख, दैन्य-दारिद्र्य, मान-सम्मान आदि सब कुछ ईश्वर के चरणों में अर्पण कर देता है। सूरदासजी के काव्य को अनुपम रूप उनकी वात्सल्य भक्ति द्वारा प्राप्त होता है। सूरदासजी ने श्री कृष्ण का बाल चरित अत्यंत मनमोहक और व्यापकता से भरा पड़ा है इसीलिए सूर को बाल मनोविज्ञान का पंडित कहा जाता है और वात्सल्य सम्राट भी। सूरदासजी ने बाल लीला का प्रारंभ ही कृष्ण जन्मोत्सव से किया है माता यशोदा श्री कृष्ण को बालक रूप में पाकर धन्य हो गयी है। वह अपने बालक को सदा निहारती रहती है। श्री कृष्ण के सामने से एक पल के लिए भी ओझल नहीं होना चाहती। सूरदासजी ने यशोदा श्री कृष्ण को पालना झुलाने का वर्णन इतनी सजीवता से करते है कि मन मोहित हो जाता है -

"जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलरावै, मल्हावै जोई सोई कछु गावै।।"

श्री कृष्ण थोड़े बड़े होते है और अपनी मैया से पूछते है कि मेरी चोटी कब बढ़ेगी। मैया इस बहाने से उन्हें दूध पिलाती है तब भी चोटी नहीं बढ़ती तो नट खट कृष्ण अपनी माँ से प्रश्न करते है।

"मैया कबहि बढ़ेगी चोटी।
कितिक बार मोहि दूध पियत भई यह अजहु है छोटी।।"

आगे माखन प्रसंग में गोपीयाँ यशोदा से कृष्ण की शिकायत लेकर आती है कि कृष्ण रोज उनका माखन चोरी करके खाता है। इस पर कृष्ण का स्पष्टीकरण सुनकर स्वयं गोपीयाँ भी कृष्ण के वात्सल्य पर मोहित हो जाती है -

"मैया मोरी! मैं नहि माखन खायो।
बैर परे ये ग्वाल बाल सब, बरबस मुख लपटायो।।"

इस प्रकार के अनेक सुंदर पद और बाल प्रसंग से सूरदास का काव्य भरा पड़ा है। इस प्रकार सूरदासजी की भक्ति प्रकट करने का रूप वात्सल्य वर्णन और श्री कृष्ण की नटखट लीलाओं द्वारा उस चरम सीमा तक पहुँच गया कि इससे पहले साहित्यजगत में किसी विद्वान ने ऐसे रमणीय वर्णन की कल्पना भी न की थी।

सूरदासजी की भक्ति ईश्वर के समक्ष अनेक विनयभाव प्रस्तुत करती है क्योंकि उनकी भक्ति में अन्तः करण की प्रेरणा से उपजी अनुभूति को प्रधानता दी गई है। प्रारंभ मे सूरदासजी की भक्ति दास्य भाव की है।

"हौ हरि सब पतितन कौ नायक"

वल्लभाचार्यजी से दीक्षा के उपरांत पुष्टिमार्ग में दीक्षित होते ही विनयपदों का ज्ञान छोड़कर पुष्टिमार्ग की नियमावली के अनुसार ईश्वर भक्ति का मार्ग अपनाया। सूरदासजी का प्रेम-भाव ईश्वर के प्रति अनन्य था इसीलिए सांसारिकता के प्रति वैराग्य भाव की पुष्टि उनके काव्य में सर्वत्र है उनका मानना था कि ईश्वर भक्ति और मान के लिए ही उनका जन्म हुआ है।

सूरदासजी ईश्वर को भक्त वत्सल और हितकारी मानते हुए कहते है -

"ऐसे कान्ह भक्त हितकारी प्रभु तेरो वचन भरोसौ सांचौ।"

सूरदासजी ने अपनी दुर्दशा का वर्णन सर्वथा अपने काव्य में किया है और ईश्वर चरणों में स्वयं को अर्पण कर ईश्वर से स्वीकार करने की इच्छा कई बार कही है -

"अबकि बार लेहु भगवान"

इसी प्रकार आराध्य श्री कृष्ण के सौन्दर्य वर्णन में माधुर्य भक्ति का मनमोहक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है।

श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने पर सूरदासजी ने गोपीयों की विरह दशा का वर्णन साक्षात, प्रणय ह्रदय की अभिव्यंजना व्यक्त करता है। वियोग वर्णन में अनेक दशाओं का वर्णन सूरदासजी के काव्य में स्वाभाविक रूप में चित्रित हुआ है। यह भाव इस प्रकार है - अभिलाषा, चिन्ता, गुणकथन, स्मृति, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरण आदि।

सूरदासजी के काव्य में गोपीयों की विरह जन्य प्रधानता का वर्णन प्रकृति के माध्यम से और भी सुन्दर हो गया है। यमुना, कालिन्दी, मधुबन की लता, बेला का चित्रण विरह से जुड़कर मानो जीवंत हो उठा है -

"मधुबन तुम कत रहत हरे?
विरह वियोग स्याम सुन्दर के ठाढ़े क्यों न जरे?"

भ्रमरगीत वर्णन में गोपीयों की विरह दशा उस चरम सीमा को छु गई कि उनका व्याकुल मन उद्धव के ज्ञानोपदेश को अपनी वाक चतुरता से निरीह कर देता है। उद्धव का तटस्थ और प्रगत ज्ञान मार्ग गोपीयों के प्रेम मार्ग और भक्ति की पराकाष्ठा के समरूप निरुत्तर हो जाता है -

"ऊधो जाहु सबार यहाँ ते बेगि गहरु जनि लाबौ।
मुँह मांम्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।"

सूरदासजी ने वल्लभाचार्यजी के शुद्धाद्वेत वाद को अपनाया। इसी कारण उनके काव्य में भक्ति का दार्शनिक स्वरूप भी परिलक्षित होता है। ईश्वर माया, जीव, काल और सृष्टि, रचना आदि का वृहत् वर्णन किया है और ब्रह्मजीव वर्णन में सूक्ष्म बातों का भी सही जगह पर प्रयोग से सभी भक्ति सिद्धांतो को परिपूर्णता प्रदान की है।

२.५ सूरदास के पद (व्याख्या)

१) अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगेहि मीठे फल के रस अन्तरगत ही भावै।।
परम स्वाद सब ही जू निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी के अगम अगोचर सो जानै जो पावै।।
रूप रेख गुन जाति जुगुति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै।
सब विधि अगम विचारहिं ताते 'सूर' लीला पद गावै।।

शब्दार्थ - अविगत = अव्यक्त, जिसे जाना न जा सके, अन्तर्गत = ह्रदय में, भावैं = रूचिकर प्रतीत होना, अमित = अपार, तोष = संतोष, अगोचर = इन्द्रियजन्य ज्ञान से परे, गुन = गुण, निरालंब = बिना सहारे के

व्याख्या - सूरदासजी कहते है कि जिसे जाना नहीं जा सकता, उसके स्वरूप का वर्णन करना असंभव है। जिस प्रकार गूँगा व्यक्ति मीठे फल के रस को ह्रदय में अनुभव करता है, वह फल उसे रूचिकर प्रतीत होता है किन्तु वह उसका वर्णन नहीं कर सकता। अव्यक्त ब्रह्म का न तो रूप है, न रेख न गुण है, न जाति। मन वहाँ स्थिर हो ही नहीं सकता, वह बिना सहो के चमत्कृत सा इधर उधर भटकता रहता है। इसका वर्णन मन तथा जिह्वा द्वारा असंभव है। वह इंद्रियो से परे है। उस परम ब्रह्म को समझ लेने का आनंद व्यक्ति अपने मन के अंदर ही महसूस करता है। अतः उस निर्गुण ब्रह्म को सब प्रकार से अगम्य जानकर सूरदासजी कहते है कि मैं केवल उस परम ब्रह्म के सगुण स्वरूप की लीला का गान करता हूँ।

२) हरि सो मीत न देखौं कोई।
अन्तकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतिच्छो होई।।
ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्र लै धयौ।
तजि वैकुंठ गरूड़ तजि श्री तजि निकट दास के आयौ।।
दुरवासा को साप निवारयो अंबरीष पति राखी।

ब्रहलोक परयंत फिर्‌यो तहँ देव मुनिजन साखी।।
लाखागृह ते जरत पांडु-सुत बुद्धि बल नाथ उबारे।
'सूरदास' प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे।।

शब्दार्थ - मीत = मित्र, सुमिरत = स्मरण, तजि = छोड़कर, निवार्‌यो = निवारण करना, लाखगृह = लाक्षागृह, पांडु-सुत = पांडु पुत्र

व्याख्या - सूरदासजी कहते है कि भगवान् श्री हरि के समान दूसरा मित्र नहीं देखा। भगवान भक्त के अनन्तकाल की तपस्या से प्रसन्न होकर समय आने पर उसकी प्रतीक्षा समाप्त करके उसके पास आ जाते है और अपने भक्तों का कष्ट दूर करते हैं। भगवान मुसीबत में फँसे गजराज की कातर पुकार सुनकर उसकी रक्षा करने के लिए वैकुंठ छोड़कर, सभी सुख छोड़कर हाथ में चक्र लेकर दौड़े चले आए। जब दुर्वासा मुनि ने राजा अंबरीष को मारने के लिए शाप दिया तब अंबरीष का रक्षक सुदर्शन चक्र सक्रिय हो गया। दुर्वासा मुनि अपनी रक्षा के लिए सभी देवताओं के पास गए, ब्रह्मलोक गए किन्तु सभी ओर से वे निराश हुए। अन्ततः भगवान नारायण के पास गए प्रभु ने उन्हें भय मुक्त किया। दुर्योधन ने जब पांडवों को छल से लाक्षागृह में मारने की योजना बनाई तब भगवान कृष्ण ने अपनी बुद्धि और बल से उन्हें बचाया। सूरदासजी कहते हैं कि प्रभु अपने भक्तों के सभी प्रकार के कष्टों का निवारण करते हैं।

३) गोविन्द प्रीति सबन की मानत।
जो जेहि भाय करै जन सेवा अन्तरगत ही जानत।।
बेरि चाखि कटु तजि लै मीठे भिलनी दीनों जाय।
जूठन की कछु शंक न कीन्हीं भक्ष किये सद भाय।।
सन्तन भगत मीत हितकारी स्याम बिदुर के आये।
प्रेम बिकल बिदुराइन अरपित कदली छिलका खाये।।
कौरव काज चले ऋषि साधन साग के पात अघायै
'सूरदास' करूणा-निधान प्रभु जुग-जुग भगत बढाये।।

शब्दार्थ - कटु = कड़वा, कदली = केला, शंक = शंका, भक्ष = खाना

व्याख्या - भक्तो के प्रति भगवान श्री कृष्ण के समर्पण भाव का वर्णन करते हुए सूरदास कहते है कि गोविंद सभी के प्रेम को स्वीकार करते है। जिस-जिस भाव से भक्तजन उनका स्मरण करते हैं, वे उस भाव को जानकर उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं। सबरी ने अपने जूठे बेर भगवान श्रीराम को अर्पित किए और उन्होंने बिन किसी संकोच के श्रद्धा भाव से उन्हें ग्रहण किया। जब श्रीकृष्ण बिदुर के घर गए, तब उनकी भक्ति से विह्वल होकर उन्होंने केले के छिलके खाए। कौरवों की भलाई हेतु जब महर्षि दुर्वासा पांडवो को शाप देने वन में गए, तब श्रीकृष्ण ने शाक का पत्ता खाकर उन्हें तृप्त कर दिया। सूरदास कहते है कि हे प्रभु! आप करूणानिधान है। आपने प्रत्येक युग में अपने भक्तो की सभी इच्छाऐं पूर्ण की हैं।

४) और न जानै जन की पीर।
जब जब दीन दुखित भये, तब तब कृपा करी बल-बीर।।

गज बलहीन बिलोकि चहूँ दिसि तब हरि सरन परों।
करुना-सिन्धु दयाल दरस दै सब सन्ताप हरो।।
मगध मथो, हरो नृप बन्धन, मृतक विप्र-सुत दीनो।
गोपी गाय गोप सुत लगि प्रभु सात द्यौस गिरि लीनो।।
श्री नृसिंह बपु घारि असुर हति भगत-बचन प्रतिपारो।
सुमिरत नाम द्रुपद-तनया कहँ पट समूह तन धारो।।
मुनि मद नेटि दास व्रत राख्यो अंबरीष हितकारी।
लाखागृह में शत्रु सैन ते पांडव विपति निवारी।
वरूणपास ब्रजपति मुकराये दावानल दुख टारो।
श्री वसुदेव देवकी के हित कंस महा खल मारो।
सोइ श्रीपति जुग जुग सुमिरन बस बेद बिसद जग गावै।
असरन-सरन सूर जाँचत है कोऊ सुरति करावै।।

शब्दार्थ = बिलोकि = देखकर, संताप = दुख, द्यौस = दिवस, द्रुपद तनया = द्रौपदी, दावानल = वन की आग

व्याख्या - भगवान श्री कृष्ण की उदारता के विषय में बताते हुए सूरदास कहते है कि उनके अतिरिक्त अन्य कोई भक्तों के दुख से दुखी नहीं होता। जब-जब दीन दुखी हुए हैं, तब-तब कृष्ण ने विभिन्न अवतार धारण कर उनके कष्टों का निवारण किया है। संकट में फँसे बलहीन गजराज ने चारों ओर से निराश होकर भगवान् का स्मरण किया। तब श्री हरि ने दर्शन देकर उसके सभी कष्ट हर लिए। अहंकारी इंद्र द्वारा कुपित हो जाने पर उन्होंने ही अपनी ऊँगली पर सात दिन तक गोवर्धन धारण कर गोप गोपियों सहित ब्रज के जीवों की रक्षा की थी। उन्होंने ही जरासंध को मारकर बंदी राजाओं को मुक्त करवाया। गुरु संदीपनी के मृत पुत्र को पुनर्जीवित कर दिया। नृसिंह रूप धारण करके दैत्य हिरणकश्यप का संहार किया और भक्त प्रह्लाद के वचन की रक्षा की। चीर हरण के समय द्रौपदी द्वारा पुकारे जाने पर उसके वस्त्र को अपरिमित बढ़ा दिया और इस प्रकार उसकी लाज बचाई। दुर्वासा मुनि के अहंकार का नाश कर भक्त अंबरीष का कल्याण किया। पापी कंस को मारकर पृथ्वी को उसके पापों से मुक्त किया। ऐसे परम दयालु भगवान श्री हरि केवल स्मरण द्वारा ही वश में किए जा सकते है। सूरदासजी कहते हैं कि मैं उन्ही श्री हरि से शरण देने की याचना करता हूँ।

५) जैसे तुम गज को पाऊँ छुड़ायौ।
अपने जन को दुखित जानि के पाऊँ पियादे घायौं।
जहँ - जहँ गाढ़ परी भक्तिन कौ, तहँ तहँ आपु जलायौं।
भक्ति-हेत प्रहलाद उबार्‌यो, दौपदी चीर बढ़ायौ।।
प्रीति जानि हरि गये बिदुर कै, नामदेव - घर छायौ।
सूरदास द्विज दीन सुदामा, तिहिं दारिद्र नसायौ।

शब्दार्थ - पियादे = नंगे पेर, गाढ़ = विपत्ति, चीर = वस्त्र, नसायौ = मिटाना

व्याख्या - भगवान श्रीकृष्ण से विनंती करते हुए सूरदास कहते हैं कि हे प्रभु! जिस प्रकार आपने मुसीबत में फँसे गजराज की सहायता की, उसकी पुकार सुनकर दौड़े चले आए, उसी प्रकार भक्तों पर संकट आने की स्थिति में आपने उन पर कृपा की। भक्त प्रह्लाद के प्राण तथा द्रौपदी के प्राण की रक्षा की। विदुर के प्रेम को जानकर उन्होंने समस्त सुख त्याग दिए। भक्त नामदेव के पर का छप्पर लगाया। सूरदासजी कहते है कि हे प्रभु! उसी प्रकार आप अपने भक्त सूरदास की दरिद्रता नष्ट कर दीजिए।

२.६ सारांश

उक्त इकाई में कृष्ण काव्यधारा के प्रमुख कवि सूरदासजी के भक्तिपूर्ण पदों का अध्ययन किया उनकी भक्ति-भावना से अवगत हुए और पाठ्यक्रम में दिये गये पदों की संदर्भ सहित व्याख्या की। आशा है पाठ्क्रम में दिए गए सभी मुद्दों से विद्यार्थी भलीभाँति परिचित हो गए होंगे।

२.७ बोध प्रश्न

१) सूरदासजी सगुण ब्रह्म की उपासना पर बल क्यों देते हैं?

२) प्रभु श्री कृष्ण अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करने के लिए हमेशा तत्पर रहते है। पठित पंक्तियों के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

३) सूरदास का जीवन परिचय देते हुए 'हरि सों नीत न देखौ कोई' पद की व्याख्या कीजिए।

४) सूरदास के पदों में कृष्ण का अपने भक्तों के प्रति प्रेम का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

५) कृष्ण ने अपने किन भक्तों का उद्धार किया? पठित पद के आधार पर उत्तर दिजिए।

२.८ संदर्भ पुस्तके

१) हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'सूरसाहित्य'

२) मुंशीराम शर्मा, 'भारतीय साधना और सूर साहित्य'

३) रामचंद्र शुक्ल, 'सूरदास'

४) मैनेजर पाण्डेय, 'भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य'

❖❖❖❖

३

तुलसीदास

इकाई की रूपरेखा :

३.० उद्देश्य

३.१ प्रस्तावना

३.२ तुलसीदास का जीवन परिचय

३.३ तुलसीदास की रचनाएँ

३.४ अयोध्या कांड का सारांश

३.५ तुलसीदास के पद

३.६ सारांश

३.७ बोध प्रश्न

३.८ संदर्भ पुस्तकें

३.० उद्देश्य

इस इकाई में तुलसीदास से संबंधित बिंदुओं का अध्ययन किया जाएगा-

- तुलसीदास का जीवन वृत्त एवं उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही उनकी आध्यात्मिक एवं धार्मिक उपलब्धियों पर भी विचार किया जाएगा।
- तुलसीदास की जो रचनाएँ विभिन्न संग्रहों के रूप में उपलब्ध हैं, उनका भी अध्ययन किया जाएगा।
- पाठ्यक्रम में शामिल तुलसीदास के पद का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

३.१ प्रस्तावना

गीतावली गोस्वामी तुलसीदास की काव्यकृति है। गीतावली तुलसीदास की प्रमाणित रचनाओं में मानी जाती है। यह ब्रज भाषा में रचित गीतों वाली रचना है, जिसमे राम के चरित की अपेक्षा कुछ घटनाएँ, झाँकियाँ, मार्मिक भावबिन्दु, ललित रच स्थल, करुण दशा आदि को प्रगीतात्मक भाव के एक सूत्र में पिरोया गया है।

गीतावली नामकरण जयदेव के गीतगोविन्द, विद्यापति की पदावली की परम्परा में ही है जो नामकरण मात्र से अपने विषय वस्तु को प्रकट करती है। रामचनद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास में लिखा है। 'गीतावली' की रचना गोस्वामीजी ने सूरदास के अनुकरण पर की है। बाललीला के कई पद ज्यों के त्यों सूर सागर में भी मिलते है।

अयोध्या काण्ड में राजा दशरथ द्वारा राम को युवराज बनाने का विचार, राम के राज्यभिषेक की तैयारियाँ, राम को राजनीति का उपदेश, श्रीराम का अभिषेक सुनकर मंथरा का कैकयी को उकसाना, कैकयी का कोपभवन में प्रवेश, राजा दशरथ से कैकयी का वरदान माँगना, राजा दशरथ की चिंता, भरत को राज्याभिषेक तथा राम को चौदह वर्ष का वनवास, श्रीराम का कौशल्या, दशरथ तथा माताओं से आज्ञा लेकर लक्ष्मण तथा सीता के साथ वनगमन, कौशल्या तथा सुमित्रा के निकट विलाप करते हुए दशरथ का प्राण त्याग, कौशल्या का दुख, भरत का आगमन तथा राम को लेने चित्रकूट गमन, राम भरत संवाद, जाबालि राम संवाद, राम वशिष्ठ संवाद भरत का लौटना, राम का अत्रि मुनि के आश्रम में गमन तथा अनुसूया का सीता को पतिव्रत धर्म का उपदेश आदि कथानक वर्णित है।

३.२ तुलसीदास का जीवन परिचय

हिन्दी साहित्य आकाश के परम नक्षत्र, भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। तुलसीदास एक साथ कवि, भक्त तथा समाजसुधारक तीनों रूपो मे मान्य हैं। तुलसीदास का जन्म संवत १५८९ को उत्तर प्रदेश (वर्तमान बाँदा जिला) के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनका विवाह दीनबंधु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ था। अपनी पत्नी रत्नावली से अत्यधिक प्रेम के कारण तुलसी को रत्नावली की फटकार "लाज न आई आपको दौरे आएहु साथ" सुननी पड़ी, जिसमें इनका जीवन ही परिवर्तित हो गया।

इनके गुरु बाबा नरहरिदास थे, जिन्होंने इन्हें दीक्षा दी। इनका अधिकांश जीवन चित्रकूट, काशी तथा अयोध्या में बीता तुलसी का बचपन बड़े कष्ट में बीता। बचपन में ही ही इनके माता-पिता दोनों चल बसे और इन्हें भीख माँगकर अपना पेट पालना पड़ा। इसी बीच इनका परिचय राम भक्त साधुओं से हुआ और इन्हें ज्ञानअर्जन का अनुपम अवसर मिल गया। पत्नी के व्यंग्यवाणों से विरक्त होने की लोकपगचलित कथा का कोई प्रमाण नहीं मिलता। तुलसी भ्रमण करते रहे और इस प्रकार समाज की तत्कालीन स्थिति से इनका सीधा संपर्क हुआ।

तुलसीदास भारतीय हिंदी साहित्य के सर्वोच्च कवि थे, उन्हें भक्तिकाल के रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवियों में गिना जाता था। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने समय में प्रचलित काव्य की हर शास्त्रीय और लोक शैली में काव्य रचना की है। रामलला नहछू, जानकी मंगल और पार्वती मंगल में सोहर छंद है। गीतावली, श्री कृष्ण गीतावली एवं विनय पत्रिका गीत बन्ध परिपाटी की रचनाएँ हैं। रामचरितमानस उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। भाषा की दृष्टि से तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। अपनी कविता में उन्होंने राम और राम भक्तों का जो चरित्र प्रस्तुत किया है, उसमें मानवता के उच्चतम आदर्शों की व्याख्या हुई है। स्वामी, सेवक, भाई, माता, पिता, राजा, प्रजा के उच्चतम भारतीय आदर्शो का जो रूप तुलसीदास ने प्रस्तुत किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

३.३ तुलसीदास की रचनाएँ

लगभग चार सौ वर्ष पूर्व तुलसीदास ने अपने काव्यों की रचना की। नागरी प्रचारिणी सभा ने जो तुलसी ग्रंथावली प्रकाशित की है, उसमें तुलसी विरचित बारह ग्रंथों का उल्लेख है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी इन्हीं बारह ग्रंथों को प्रामाणिक माना है। इन ग्रंथों में रामचरितमानस, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामाज्ञा प्रश्न, वैराग्य संदीपनी, कवितावली, गीतावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, बरवै रामायण और विनय पत्रिका के नाम आते है। इन ग्रंथों में रामचरितमानस, पार्वती मंगल और जानकी मंगल प्रबंध काव्य है तथा शेष सभी मुक्तक काव्य है। विनय पत्रिका, गीतावली, कृष्ण गीतावली, कवितावली की रचना ब्रज भाषा में हुई है और शेष सभी रचनाएँ अवधी भाषा में लिखी गई है। कवितावली कवित, सवैया छप्पय आदि छन्दों का संग्रह है। दोहावली भक्ति, नीति और वैराग्य विषयक ५७३ दोहों का संग्रह है। गीतावली लीला विषयक गीतों का संग्रह है। विनय पत्रिका विनय संम्बन्धी गेय गीतों का संग्रह है। विनय पत्रिका विनय सम्बन्धी गेय गीतों का संग्रह है। विनय पत्रिका एक सफल गीति काव्य है। इसके पद शास्त्रीय रागों पर आधारित है। इस कृति में धनाश्री, रागकली, बसंत, भैरव, सारंग आदि अनेक रागों का प्रभावी प्रयोग किया है।

३.४ 'रामचरित मानस' अयोध्याकांड का सारांश

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित 'रामचरित मानस' महाकाव्य भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। यह ग्रंथ कुल सात काण्डो में विभाजित किया गया है जैसा कि हम जानते संपूर्ण सात काण्ड श्रीराम के जीवन उनके पराक्रम, वीरता, मानवतावादी गुण गाते है। हमारे पाठ्यक्रम में समाहित अयोध्याकाण्ड में राम आज्ञाकारी पुत्र के रूप में दिखाये गये है वहीं उनकी सुकोमल सुन्दरता का वर्णन तुलसीदासजी ने बखूबी किया है।

अयोध्या काण्ड के प्रारम्भ में तुलसीदासजी शिव और पार्वती की आराधना करते है तत्पश्चात अपने आराध्य श्रीराम का स्तुतिगान प्रारम्भ करते है। गोस्वामीजी कहते है श्रीराम रघुकुल और समस्त संसार को आनंद देने वाले है। उनके मुख की शोभा सदैव एक समान बनी रहती है। राज्याभिषेक की बात सुनकर भी वे प्रसन्न नहीं है और वनवास प्राप्ति से भी उनका मन दु:खी नहीं हुआ ऐसे श्रीराम सदैव मंगलदायी है।

जब श्रीराम विवाह करके अयोध्या लौटते है तो सम्पूर्ण अयोध्या मानो स्वर्ग सी सुंदर और सुखी नजर आती है और इस सुख समृद्धि को देखकर सुख समृद्धि रूपी सभी नदियाँ अयोध्या रूपी समुद्र में आ मिलती है।

राजा दशरथ सहित सभी श्रीराम को महाराज के रूप में देखने को आतूर है। महाराज दशरथ गुरु वशिष्ठ सहित अन्य गुरु महात्माओं से आज्ञा लेकर श्रीराम के राजतिलक की तैयारी शुरु कर देते है लेकिन श्रीराम के मन में एक व्यथा है कि जब सभी भाई साथ में जन्मे, खाना, सोना, लड़कपन के खेलकूद, कनछेदन, यज्ञोपवीत और विवाह आदि उत्सव सभी कार्य साथ-साथ हुए तो इस निर्मल वंश में यही बात क्यों अनुचित घटित हो रही है। सब भाईयों को छोड़कर राज्याभिषेक सिर्फ मेरा ही।

कैकयी भरत की माता इन सभी बातों से अनभिज्ञ जब अपनी मंद बुद्धि दासी मन्थरा से राज्याभिषेक की बाते सुनती है तो हर्ष और आनंद से नाच उठती है। लेकिन मन्थरा अपने अथक प्रयासों से यह सिद्ध कर देती है कि यह बात कैसे कैकयी और भरत के लिए अहितकारी है तो कैकयी अपने क्रूर मन को विचारणा देकर अंततः मन्थरा की बातों में ही आदर्श की अनुभूति महसूस करने लगती है। और बहुत समय पहले अपने पति दशरथ की जान के बचाने के बदले मिले दो वर का आज अनायस ही मन्थरा कैकयी को याद दिला देती है। और दो वर कौन-कौन से होगे यह भी बड़े अधिकार से जता देती है। पहला राम के बदले भरत को राज्य और दूसरा राम को चौदह वर्ष वनवास इन दोनो वचनों की अहमीयत दशरथजी ने कम न होने दी और इसे पूरा करने में श्रीराम ने अपनी रघुकुल रीत का पालन पूरी तन्मयता और आनंदित होकर किया। इस प्रकार कपट रीति के अंकुर ने अयोध्या को पूर्णग्रहण से ग्रसित कर लिया। राजा दशरथ इस वाख्या से ऐसे सदमे मे गये कि लौट कर बाहर आये ही नहीं क्योंकि राम के बिना उन्हे अपना जीवन अधुरा या नहीं सा प्रतीत होता था। लेकिन इस समय श्रीराम एक धीरोदात पुरुष, उत्तम पुत्र के रूप में दर्शित होते है। माता कैकयी के वचन सुनकर उनका चेहरा आनंदोदित हो जाता है। वन जाने को वह उनके लिए कितना कल्याणकारी है यह बताते हुए कहते है कि वन में उन्हे ऋषि-मुनि, बड़े-बड़े योगी महात्माओं का ज्ञान मिलेगा। इन सब बातो से उनका कल्याण निश्चित है और भरत को राजगद्दी बड़े शुभ अवसर की बात है यह सब बाते उनके कितने हित की है वे अपने पिता को भी समझाते है। इस समय गोस्वामीजी नारी स्वभाव का वर्णन इस प्रकार करते है।

'सत्य कहति कवि नारि सुभाऊ। सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ।
निज प्रतिबिंदबु बरूकु गहि जाई। जानि न जाई नारि गति भाई।।'

स्त्री के स्वभाव के विषय में बड़े से बड़ा ज्ञानी भी नहीं जान सकता क्योंकि स्त्री का स्वभाव अथाह भेद भरा होता है, भले ही परछाही हम पकड ले पर स्त्री को जानना असंभव है। इस प्रकार कैकयी की करनी अयोध्या पर भारी पड़ती है। श्री राम अपनी माता कौशल्या से मिलने जाते है। कौशल्या भी यथोचित दु:खी है और उनके लिए यह दु:ख असहनीय है लेकिन राम अपने शील स्वभाव से माता को समझाते है। वहीं जब राम सीता से मिलने जाते है तो उनका मन संकुचित हो जाता है वे कहते है वामा (सीता) तुम घर पर ही रूखो और सीता को सभी वन की भयंकरता से अवगत कराते है। लेकिन सीता कहती है -

'मैं पुनि समुझि दीखि मन माही।
पिय बियोग सम दुखु जग नाही।।'

पति के वियोग से बड़ा कोई दूसरा दु:ख संसार में नहीं है। अपने तर्को से सीता ने राम को मना लिया और यहाँ राम जिस प्रकार मानवता के नायक रूप में लक्षित हुए है उसी प्रकार सीता भी भारतीय संस्कृति में नारी जाति का उद्‌बोधन करती दिखाई गई है। सीता के समान ही लक्ष्मण के तर्क भी राम के संदेश से जीत गये और अंत फलस्वरूप राम, सीता, लक्ष्मण वन प्रस्थान की ओर निकल पड़े। तीनों ने मुनि का वेष बनाया। दशरथजी से आज्ञा ली महल से बाहर निकलना श्रीराम के लिए आसान था लेकिन नगर से बाहर निकलना उतना ही मुश्किल। सभी जन अश्रूपूरित हो राम के साथ निकल पड़े। रामजी ने अपनी सुकोमल वाणी से संदेश देकर अयोध्या वासीयों को समझाया वे नहीं माने और राम के साथ निकल पड़े। घनी सांझ होने

पर विश्रांती के लिए सभी एक घाट पर विश्राम करते है वहाँ राम सभी को नींद में छोड़कर वन प्रस्थान करते है। वह निषादराज के यहाँ पहुँचते है। वहाँ से मंत्री सुमन्तजी को रामजी बड़े ही विनम्र भाव से वापस अयोध्या लौटा देते है। अब रामजी अपने आगे के प्रवास हेतु केवट से नाव माँगते है लेकिन केवट नाव देने से इंकार कर देते। इसका कारण है केवट रामजी की महिमा जान चुके है वे कहते है जिसके छुते ही पत्थर की शिला सुंदरी हो गई तो मेरी नाव तो काठ से बनी है। श्रीराम के स्पर्श से यदि यह भी स्त्री बन गयी तो मेरी रोजी रोटी कैसे चलेगी मेरे परिवार का पालन पोषण कैसे होगा? इसीलिए सर्वप्रथम में आपके पैर धो लूँ तभी आपको नदी पार लगाऊँगा। इस प्रकार श्रीरामजी पैर धुलवाकर नाव में बैठे और गंगा नदी को पार किया। सीताजी ने मनोभाव से गंगा माँ से विनती की कि तीनो सकुशल वापस लौटने पर गंगा माँ की विधी-विधान से पूजा करुँगी उसके पश्चात अयोध्या जाऊँगी। तत्पश्चात श्रीरामजी प्रयागराज पहुँचते है वहाँ तीर्थ दर्शन कर मुनीश्वर भारद्वाजजी से मिलकर उनका आशीर्वाद लेते है। श्रीराम के अनेक सखागण उन्हे वापस गृह चलने का आग्रह कर थक जाते है लेकिन श्रीराम की आज्ञा को शिराधार्य कर वापर अयोध्या लौट जाते है फिर रामजी, सीता और लक्ष्मण सहित यमुनाजी को नमस्कार करते है और वन की ओर प्रस्थान करते है। वन के वासी राम, लक्ष्मण और सीता का आदर सत्कार बड़े ही प्रेमभाव से करते है और अपना जीवन धन्य मानते है।

मंत्री सुमन्त अयोध्या लौटते ही राजा दशरथ से मिलते है। दशरथ मुर्छित अवस्था में जमीन पर पड़े है उनके मुख से सिर्फ राम-राम ही उच्चारित हो रहा है। सुमन्त को देख वो नई चेतना से उठ बैठते है और सुमन्त से पूछते है राम को वापस लाये या नहीं। सुमन्त दशरथ महाराज को समझाते है और श्रीराम द्वारा दिये गये आदेश से महाराज को अवगत कराते है। लेकिन राजा दशरथ स्वयं को कोसते विलाप करते करते उनका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। दशरथजी की इस अवस्था को मुनि वशिष्ठ जान जाते है कि यह इनका अंतिम समय है। वे भरतजी को बुलाने के लिए दूत भेजते है। भरतजी का मन पहले ही अपशकुन और सकुचंनाओ से भरा हुआ है। जैसे ही दूत का संदेश मिलता है वह शत्रुघ्न सहित अयोध्या आते है। संपूर्ण अयोध्या को शोक में डुबा देख उनका मन सहम जाता है। वे महल में प्रवेश करते है तो सारी ओर सन्नाटा छाया हुआ है। उनके मन में हजारो प्रश्न उठते है पर उत्तर देनेवाला कोई नहीं है। वे अपनी माँ कैकयी के भवन में जाते है वही उन्हें अपने पिता के देहावसान की खबर मिलती है। वे अपने माँ से पिता के देहावसान का कारण पूछते है लेकिन माँ की विपरीत बातो को सुनकर हैरान हो जाते है और सत्य जानकर उनकी माँ को कौसते है उसे संसार को सबसे बड़ा पापी मानते है और स्वयं को भी पापी मानने लगते है। कैकयी को कुल का कलंक मानते है और कौशल्या से मिलने के लिए दौड़ पड़ते है। माता कौशल्या की अवस्था देख उसके चरणों में गिर पड़ते है कहते है कैकयी बाँझ क्यो नहीं हुई उसने आज मुझे इस पृथ्वी का सबसे बड़ा अभागा बना दिया। कौशल्या भरत को समझाती है और विवेकभरी बाते सुनाती है। इसी प्रकार वामदेवजी और वशिष्ठजी सुन्दर वचन कहकर भरतजी को उपदेश देते है। और सभी विधि-विधान से दशरथजी का अन्त्यसंस्कार किया जाता है।

गुरु वशिष्ठ माता कौशल्या सहित सभी आदरणीय व्यक्ति भरत को राजा बनाने के लिए ना-ना प्रकार के उपदेश देते है लेकिन उनकी राम भक्ति सभी उपदेशों पर भारी पड़ती है वे राम से मिलने का हठ करते है और उन्हे विश्वास है राम वापस आयेंगे और अपना राज-काज संभालेगे। और पूरी तैयारी के साथ रामजी से मिलने जाते है। सज्ज सेना अयोध्यावासी और माताएँ सभी राम को लिवाने हेतु निकल पड़ते है उसी रस्ते से जहाँ से राम गुजरे थे। निषाद राज

इतनी बड़ी सेना और भरत को देख मन में संदेह बैठा लते है कि कहीं ये राम पर हमला कर उन्हें मार न दे। लेकिन सीधे हमले से पहले एक भेट करना जरूरी समझा। निषादराज को भरत मिलन के उपरांत भरत और लक्ष्मण में कोई अंतर नहीं दिखा। इसके उपरांत भरत प्रयागराज के दर्शन लेते है और मुनिश्वर भारद्वाज से मिलकर आशीर्वाद लेते है और यमुनाजी के दर्शन कर चित्रकूट के रास्ते से राम मिलन की आतुरता में सभी रास्तों को तय कर राम के पग तक पहुँच जाते है। लक्ष्मण क्रोध में है रामजी लक्ष्मण को भरत की महिमा समझाते है। इधर भरतजी मन्दाकिनी नदी में स्नान कर और साथ आए हुए सभी आदरणीय जनों को वहीं छोड़कर निषादराज और शत्रुघ्न को साथ लेकर रघुपति के दर्शन हेतु प्रस्थान करते है। भरत वन, जंगल सभी रास्तों को ऐसे पार करते है मानों उनकी चरमसीमा परमार्थ की ओर बढ़ रही है अब ब्रह्म सत्य की प्राप्ति ही उनका लक्ष्य है वह भी बहुत समीप जान पड़ता है। जब भरत श्रीराम के सम्मुख गये उनके चरणों में गिर पड़े राम भी अपनी सुद-बुध खोकर भरत को गले लगा लिया। तुलसीदासजी इस प्रसंग का वर्णन बहुत मार्मिकता से करते है, वे कहते है यह मिलाप का प्रसंग कवि कुल के लिए कर्म, मन और वाणी तीनों रूपों से अगम है। दोनो भाई मन, बुद्धि, चित अंहकार को भुलाकर पर प्रेम से पूर्ण हो रहे है। तत्पश्चात राम अपनी माता, गुरुजन व अन्य सभी आगत्यो से मिलते है। माताओं में वे सर्वप्रथम कैकयी के पास जाते है उनको पश्चाताप करने का कोई कारण नहीं है कहकर यह सब विधी का विधान बताते है और जो घटित हो रहा है उसके पीछे भी ईश्वर का हेतु है। इस प्रकार श्री राम की शीलता भरे स्वभाव से यह आशंका सभी के मन में घर करती है कि यह कोई साधारण पुरुष नहीं है।

गुरुजनों की आज्ञा से श्रीराम सहित सभी भ्राता गण मन्दाकिनी नदी में स्नान कर अपने दिवगंत पिता की सर्व क्रिया विधि विधान करते है।

भरतजी जिस कार्य के लिए आये है उस बात पर चर्चा होती है। वशिष्टजी भी श्रीराम को समझाते है कि उनका राज्याभिषेक ही सब के हित का है। भरतजी कहते है राम की जगह में आजीवन वन में वास करूँगा। लेकिन राम के सत्य और सामर्थ्य भरे तथ्य सभी की आँखे खोल देते है। राम जी मनोभाव से भरत को समझाते है। दोनों के बीच वार्तालाप लम्बे समय तक चलता है तभी राजा जनक और रानी सुनयना वहाँ आते है। सभी की भेट और वार्तालाप से वातावरण और भी संदिग्ध हो उठता है। राम के सदाचार उन्हे अपने दिवगंत पिता के वचनो का पालन ही सुगम मानते है। आखिर में भरत श्री राम की पादुकाओं को पाकर ही स्वयं को धन्य मानते है और सभी जन श्रीराम से बिदाई ले अयोध्या आने के लिए प्रस्थान करते है। भरतजी अयोध्या आकर पादुकाओं की स्थापना कर नंदीग्राम में वास करते है और वहीं रह कर वनवासी जीवन व्यतीत करते है।

३.५ तुलसीदास के पद (व्याख्या)

१) बालकाण्ड
राम-लखन जब दृष्टि परे, री।
अवलोकत सब लोग जनकपुर मानो विधि विविध बिदेह करे री।।
धनुषजग्य कमनीय अवनि-तल कौतुकही भय आय खरे, री।
छबि-सुरसभा मनहु मनसिज के कलित कलपतरु रुप फरे, री।।

सकल काम बरषत मुख निरखत, करषत, चित, हित हरष, भरे री।
तुलसी सबै सराहत भूपहि भलै पैत पासे सुढर ढरे, री।।

शब्दार्थ - बिधि = देवता, अवनि = पृथ्वी, मनसिज = कामदेव

व्याख्या - जनकपुर वासियों की दृष्टि जब राम और लक्ष्मण पर पड़ती है तो वे उनके सौंदर्य को देखकर मोहित हो जाते है। ऐसा लग रहा था मानो देवता ही विविध रूप धारण करके आ गए हो। धनुष यज्ञ में भाग लेने आए राजा, इस पृथ्वी पर ऐसे कोमल शरीर वाले दोनों भाइयों को देखकर भयभीत हो गए। राम और लक्ष्मण राजा जनक की सभा में बैठे ऐसे लग रहे थे मानो कामदेव कल्पतरु से रूप का वरदान लेकर शोभायमान हो। सभी लोग उनके सुंदर मुख को देखकर अपने ह्रदय में अत्यंत प्रसन्न हो रहे थे। तुलसीदासजी कहते हैं कि सभी लोग राजा जनक की प्रशंसा कर रहे थे कि उन्होंने दोनों भाइयो को वहाँ आमंत्रित करके बहुत ही अच्छा कार्य किया है।

२) नेकु सुमुखि, चित लाइ चितौ, री।
राजकुँवर-मूरति रचिबेकी रूचि सुबिरंचि श्रम कियौ है कितौ, री।।
नख-सिख-सुंदरता अवलोकत कह्यो न परत सुख होत जितौ, रौ।
साँवर रूप-सुधा भरिबै कहें नयन-कमल कल कलस रितौ, री।।
शब्दार्थ - चित = मन, रचिबेकी = रचने के लिए, अवलोकत

व्याख्या - जनकपुर की स्त्रियाँ राम और लक्ष्मण के सौंदर्य को देखकर आपस में बातें करती हैं। एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि - हे सखी! जरा चित लगाकर राम लक्ष्मण के सौंदर्य को देखो। इन राजकुमारों की मूर्ति को ब्रह्मा ने बड़े ही यत्न और परीश्रम से बनाया होगा। इन राजकुमारों की नख शिख सौंदर्य को देखकर मन में जो सुख उपज रहा है वह कहते नहीं बनता। ये जो सावँले रंग वाले है उनका रूप ऐसा है मानो उनके कमल रूपी नयन अपने खाली कलश में अमृत भर रही हो। इस प्रकार जनकपुर की ग्रामीण स्त्रियाँ राम और लक्ष्मण की शोभा का वर्णन करती है।

३) रामहि नीकै कै निरखि, सुनैनी।
मनसहुँ अगम समुझि, यह अवसरू कत सकुचति, पिकबैनी।।
बड़े भाग मख-भूमि प्रगट भई सीय सुमंगल - ऐनी।
जो कारन लोचन - गोचर भई मूरति सब सुख दैनी।।
कुलगुर-तियके मधुर बचन सुनि जनक-जुबति मति-पैनी।
तुलसी सिथिल देह-सुधि-बुधि करि सहज सनेह - विषैनी।।

शब्दार्थ - निरखि = देखना, पिक बैनी = कोयल के समान वाणी, मति = पैनी, तीव्र बुद्धि

व्याख्या - हे सुंदर नैनों वाली! तू राम के सुंदर मुख को भली प्रकार देख ले। जो मन से अगम्य है अर्थात जिन्हें ध्यान में लाना भी कठिन है, ऐसे राम को सामने पाकर तू क्यों संकोच कर रही है।

हे कोयल के समान मृदु भाषिनी यह तेरे लिए शुभ अवसर है, तू राम के दर्शन कर ले। हमारे बड़े भाग्य है कि इस पवित्र भूमि में सीता प्रकट हुई और आज इतनी मंगल बेला आई है। राम लक्ष्मण दोनो भाईयों की सुंदर मूर्ति हमे सुख प्रदान कर रही है। इनके दर्शन के लिए हमारे नेत्र चंचल हुए जा रहे है। कुल गुरु ने इन स्त्रियों के मधुर वचन को सुनकर राजा जनक की तीव्र बुद्धि की प्रशंसा की। तुलसीदासजी कहते हैं कि सभी लोग राम के सहज प्रेम में अपने शरीर की सुध-बुध खो बैठे।

४) अयोध्याकाण्ड
माई री! मोहि कोउ न समुझावै।
राम-गवन साँचो किधौं सपनो, मन परतीत न आवै।।
लगेइ रहत मेरे नैननि आगे राम लखन अरु सीता।
तदपि न मिटत दाह या उर को, बिधि जो भयो विपरीता।।
दुख न रहै रघुपतिकह बिलोकत, तनु न रहै बिनु देखे।
करत न प्रान पयान, सुनहु सखि! अरूझि परी यहि लेखे।।
कौसल्या के बिरह-वचन सुनि रोइ उठी सब रानी।
तुलसिदास रघुबीर-बिरह की पीर न जाति बखानी।।

शब्दार्थ - परतीत = विश्वास, दाह = कष्ट, बिधि = भगवान,

व्याख्या - राम के वन गमन के पश्चात् माता कौशल्या उनके विरह में अत्यंत व्याकुल है। वे कहती है, मुझे कोई भी कुछ मत समझाओ। राम सच में वन चले गए है या मैं कोई स्वप्न देख रही हूँ। मेरा मन विश्वास नहीं कर पा रहा है कि राम सचमुच वन में चले गए है। मेरे नेत्रों के सामने राम, लक्ष्मण और सीता की छवि निरंतर घूमती रहती है, फिर भी मेरे ह्रदय की जलन समाप्त नहीं होती। विधाता हमारे विपरीत हो गया है। यह दुख तभी दूर होगा जब मैं राम को देखूँगी, मेरा यह शरीर राम को देखे बिना नहीं रह सकता। हे सखी! इतना दुख होने पर भी मेरे ये प्राण इस शरीर से नहीं निकलते। मेरे भाग्य में यह क्या लिखा है? कौशल्या के दुखपूर्ण वचन सुनकर सुमित्रा आदि सभी रानियाँ रोने लगीं। तुलसीदासजी कहते हैं कि राम के वियोग में डूबी माता कौशल्या के मन की पीड़ा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

५) जब-जब भवन बिलोकति सूनो।
तब-तब बिकल होति कौसल्या, दिन-दिन प्रति दुख दूनो।।
सुमिरत बाल बिनोद राम के सुन्दर मुनि-मन-हारी।
होत ह्रदय अति सूल समुझि पद पंकज अजिर-बिहारी।।
को अब प्रात कलेऊ माँगत रूठि चलैगो, माई।
स्याम-तामरस-नैन स्त्रवत जल काहि लेऊँ उर लाई।।
जीवौं तो बिपति सहाँ निसि-बासर, मरौं तौ मन पछितायो।
चलत बिपिन भरि नयन राम को बदन न देखन पायो।।
तुलसिदास यह दुसह दसा अति, दारुन बिरह घनेरो।
दूरि करै को भूरि कृपा बिनु सोकजनित रूज मेरो?

व्याख्या - कौशल्या जब-जब अपने सूने महल को निहारती हैं तब-तब वे विरह में व्याकुल हो जाती है। दिनों दिन उनका दुख दुगना होता जाता है। वे राम के बचपन के विनोद को स्मरण करती है जो मुनियों के मन को भी प्रसन्न करता है। कमल के समान पैरों वाले, जिनकी इच्छा से ही सब कुछ होता है ऐसे भगवान राम को याद कर माता कौशल्या के ह्रदय में शूल उठने लगा, उनका ह्रदय व्याकुल हो गया। अब कौन मुझसे प्रातःकाल कलेवा माँगेगा और कौन मुझसे रूठेगा। कौशल्या माता के कमल रुपी नयनों से जल की धारा बहने लगी। वे राम को अपने ह्रदय से लगाने के लिए बेचैन होने लगी। कौशल्या माता सोचती है कि जब तक जीऊँगी, राम के विरह का दुख सहूँगी और यदि मर गई तो राम को न देख पाने का दुख बना रहेगा। वन जाते समय कौशल्या राम को ठीक से देख भी नहीं पायीं। तुलसीदासजी कहते है कि कौशल्या माता की दशा असहनीय हो गई है, वे राम के विरह में अत्यंत दुखी है। हे प्रभु! आपके अलावा उनके इस कठिन दुख को और कौन दूर करेगा? आपकी कृपा के बिना उनका यह दुसह दुख कौन दूर करेगा।

६) काहे को खोरि कैकयिहि लावौं?
धरहु धीर, बलि जाऊँ तात! मोको आज विधाता बावौं।।
सुनिबे जोग वियोग राम को हौं न होऊँ मेरे प्यारे।
सो मेरे नयननि आगेते रघुपति बनहि सिघारे।।
तुलसिदास समुझाइ भरत कहँ, आँसू पोंछि उर लाए।
उपजी प्रीति जानि प्रभु के हित, मनहु राम फिरि आए।।

भरत और शत्रुघ्न जब अपने ननिहाल से वापस अयोध्या लौटते है और उन्हें पता चलता है कि उनकी माता कैकेयी ने राम को वनवास भेज दिया है तो भरत क्रोध में अपनी माँ को भला बुरा कहने लगते है। माता कौशल्या उन्हें समझाती हुई कहती है - हे भरत! तुम कैकयी को दोष क्यों देते हो। हे पुत्र तुम धैर्य धारण करो। मैं तुम पर बलिहारी जाती हूँ। तुम स्वयं को दोष क्यों देते हो? विधाता ही मेरे विपरीत है। हे पुत्र राम के वन जाने की घड़ी में मैं अपने होश में नहीं थी। मेरे आँखो के सामने ही राम वन चले गए। तुलसीदासजी कहते हैं कि इस प्रकार कौशल्या माता ने भरत को समझाकर उनके आँसू पोंछे और उन्हें ह्रदय से लगा दिया। भरत के ह्रदय में राम के प्रति उत्पन्न प्रेम को जानकर कौशल्या को ऐसा प्रतीत हुआ मानो राम वापस आ गए हों।

७) भाई! हौं कहा रहि लैहौं।
राम-लखन सिय -चरन बिलोकन काल्हि काननहि जैहौं।।
जद्यपि मोते, कै कुमाततें ह्वै आइ अति पोची।
सनमुख गए सरन राखहिंगे रघुपति परम सँकोची।।
तुलसी यों कहि चले भोर ही, लोग बिकल सँग लागे।
जनु बन जरह देखि दारुन दव निकसि बिहँग - मृग भागे।।

व्याख्या - भरत अपने भाई शत्रुघ्न से कहते हैं कि हे भाई! मैं राम के बिना अयोध्या में किस प्रकार रहूँगा? राम, लखन और माता सीता के चरणों के दर्शन के लिए मैं कल ही वन की तरफ प्रस्थान करूँगा। यद्यपि मेरी माता ने अत्यंत निकृष्ट कार्य किया है, लेकिन मुझे विश्वास है कि

राम मुझे अवश्य ही अपनी शरण में ले लेंगे। रघुपति अत्यंत दयालु है, शरणगत रक्षक है, वे मुझे अवश्य ही अपना लेंगे। तुलसीदासजी कहते है कि भरत भोर में ही राम से मिलने के लिए वन की तरफ निकल पड़े। उनके साथ अयोध्या की जनता भी व्याकुल होकर साथ-साथ चलने लगी। अयोध्यावासियों के व्याकुल ह्रदय से दग्ध होकर वन में भी ज्वाला फैलने लगी। वन को जलता हुआ देखकर उसमें निवास करने वाले पशु-पक्षी भयभीत होकर वन से बाहर निकल कर भागने लगे।

३.६ सारांश

रामभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि तुलसीदासजी के वृहत् साहित्य और पूजनीय ग्रंथ 'राम चरित मानस' के अयोध्या कांड के कुछ पदों का हमने अध्ययन किया, अयोध्या कांड की कथा को समझा, पदों के अर्थ को समझ कर, संदर्भ सहित व्याख्या की इकाई के संपूर्ण अध्ययन उपरांत विद्यार्थी इकाई में दिए गए सभी मुद्दों से भलीभाँति परिचित हो गए है।

३.७ बोध प्रश्न

१) तुलसीदासजी जीवन परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

२) जनकपुर की स्त्रियाँ राम और लक्ष्मण के सौंदर्य को देखकर आपस में क्या बातें करती हैं?

३) माता कौशल्या की विरह वेदना का चित्रण कीजिए।

४) भरत अयोध्या आने पर कहाँ जाने की तैयारी करते हैं?

५) जनकपुर की सभा का वर्णन कीजिए।

३.८ संदर्भ पुस्तके

१) श्रीमद गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित, गीतावली (सरल भावार्थ सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर

२) गीतावली, तुलसीदास

❖❖❖❖

४

बिहारी

इकाई की रुपरेखा :

४.१ इकाई का उद्देश्य
४.२ प्रस्तावना
४.३ बिहारी का जीवन परिचय
४.४ बिहारी की रचनाएँ
४.५ बिहारी के दोहे (व्याख्या सहित)
४.६ बिहारी के काव्य में उपदेशगत चित्रण
४.७ बोध प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न
४.८ संदर्भ पुस्तके

४.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में कवि बिहारी से संबंधित निम्न बिंदुओं का अध्ययन किया जाएगा।

- कवि बिहारी के जीवन और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।
- कवि बिहारी की रचनाओं और उससे संबंधित विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।
- पाठ्यक्रम के अनुसार दोहों का व्याख्यात्मक अध्ययन करेंगे।

४.२ प्रस्तावना

कवि बिहारी को गागर में सागर भरने वाले कवि कहा जाता है। इस इकाई में हम कवि बिहारी के जन्म और जीवन से जुड़े अहम् पहलुओं का अध्ययन करेंगे। बिहारी के काव्य की विशेषताओं को समझ सकेंगे और पाठ्यक्रम में लिये गये दोहों की संदर्भ सहीत व्याख्यात्मक अध्ययन करेंगे।

४.३ बिहारी का जीवन परिचय

बिहारी लाल रीतिकाल के शिरोमणि कहलाते है। रीतिकाल की रीति सिद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि बिहारी का जन्म संवत १६५२ में मध्य प्रदेश ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्द पुरा

नामक ग्राम में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बिहारी जी ने एक दोहे में जन्म और जीवन से जुड़े पहलुओं को इस प्रकार दर्शाया है।

जनमु ग्वालियर जानियै खण्ड बुन्देलै जान।
तरूनाई आई सुघर, बसि मथुरा ससुराल।।

उक्त दोहे में बिहारीजी उनका जन्म स्थान ग्वालियर का वर्णन किया है और उनकी ससुराल मथुरा थी। कवि विवाह के उपरांत अपनी ससुराल में रहते थे। यह जानकारी भी उन्होंने उक्त दोहे में दी है।

बिहारी के कई दोहे उनके जीवन की जानकारी हमें दे देते हैं। एक दोहे में उन्होने स्वयं की जन्म तिथि का वर्णन किया है -

संवतु जुग सर रस सहित भूमि रीति गिनि लीन।
कातिक सुदिबुध अष्टमी, जन्म हमें विधि दीन।।

बिहारी का जन्म माथुर वंश में हुआ। केशवराय उनके पिता थे और रीति काल के प्रवर्तक केशव उनके गुरु थे। बिहारी जी का बचपन बुन्देलखंड में बीता जब बिहारी सात-आठ वर्ष के थे उनके पिता ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गए। बिहारी को एक भाई और एक बहन थी। उनका विवाह मथुरा में बसे एक ब्राह्मण की कन्या के साथ हुआ।

बिहारीजी के गुरु कवि केशवदासजी थे। गुरु के काव्य ज्ञान अर्जन के साथ काव्य ग्रंथो संस्कृत और प्राकृत भाषा का अध्ययन किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी बिहारी ने उर्दु-फारसी का अध्ययन आगरा में किया। बाद में बिहारी कवि रहीम के संपर्क में आये। रहीम से अमूल्य ज्ञान धन प्राप्त करने के पश्चात् सवत् १६७५ में शाहजहाँ के दरबारी कवि बने। साथ ही बूँदी, जोधपुर जैसी बड़ी रियासतों से बिहारी जी को वृत्ति मिलती रही।

जयपुर के महाराजा जयसिंह के दरबार में राजकवि का मान सम्मान मिला। साथ ही कई पुरस्कार और गाँव पारितोषिक स्वरूप मिले। बिहारी सतसई नामक रचना भी कवि ने राजा जयसिंह के कहने पर की। इन्हे हर दोहे की रचना पर महाराज से एक अशर्फी इनाम में मिलती थी। बिहारी जी रसिक प्रवृत्ति के विनोदी व्यंग्य प्रिय व्यक्ति थे। साहित्यशास्त्र व्याकरण, ज्योतिषि शास्त्र। रजनीतिक, वैद्यकिय और दर्शन शास्त्र के ज्ञाता थे। इनकी रचनाओं में सात सौ तेरह दोहे तथा सोरठे संग्रहित है। तीन कवित बिहारी जी ने लिखे है। इतने कम काव्य संग्रह होते हुए भी उल्लेखनीय और व्याकरण की दृष्टि से समृद्ध साहित्य किसी और कवि का नहीं है।

बिहारी जी की मृत्यू संवत् १७२० वि. में हुई। वैसे तो बिहारी श्रृंगार परक कवि माने जाते है। परंतू बिहारीजी के काव्य में भक्ति-भावना प्रकृति चित्रण, अन्योक्ति आदि का वर्णन भी खूबसूरती के साथ किया गया है। सतसई के पहले दोहे में कवि ने राधा की भक्ति का इस प्रकार वर्णन किया है। यह दोहा सतसई के प्रारंभ में मंगलाचरण माना जाता है।

'मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होइ।।'

बिहारी दरबारी कवि रहे हैं उनकी रचनाएँ राजाओं को खुश करने की दृष्टि से लिखी गई लेकिन सभी रचनाओं का यही उद्देश्य था ऐसा नहीं है। कहा जाता है जयपुर नरेश जयसिंह अपनी नयी-नवेली रानी के प्रेम में इतना खो गये कि उन्हे यह भी न याद रहा कि वह राज्य के प्रशासक है। इस बात से सभी मंत्रीगण भी चिंतित थे लेकिन राजा के कुछ कहना मुश्किल था। यह जबाबदारी बिहारीजी ने स्वीकार की और काव्य कौशल द्वारा राजा तक दोहा लिख पहुँचाया।

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहि काल।
अली, कली ही सौं बँध्यो, आगे कौन हवाल।।

बिहारीजी कोई भी बात हो बड़े ही अनोखे तरीके से कहते थे। उनकी हर एक बात चमत्कार और जिज्ञासा उत्पन्न किये बगैर नहीं रह पाती।

४.४ बिहारी की भाषा

बिहारी की साहित्यिक भाषा ब्रज भाषा है। उनके द्वारा की गई शब्द रचना नियोजित और अनेकार्थी है। वाक्य की अनुकूलता के अनुसार दोहों में पूर्वी हिन्दी, बुंदेलखंडी, उर्दु, फारसी आदि शब्द का प्रयोग बखूबी किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्लजी ने बिहारी के दोहों को रस के छोटे है कहा है। उनके द्वारा किए गए श्रृंगार वर्णन के अंतर्गत रूप वर्णन, प्रेम, व्यापार, नायिका भेद, हाव-भाव आदि वर्णन पठन के समय आँखों के सामने दृश्य रंजित कर देते है। इन्हीं गुणों के कारण बहुत थोड़ा लिखकर भी हिन्दी साहित्य के इतिहास में बिहारी का नाम उच्च कोटि के कवियों में गिना जाता है। उनका काव्य को टक्कर तो क्या समीप भी कोई कवि नहीं पहुँच पाया है।

४.५ बिहारी के दोहे व्याख्या सहित

१. तंत्रीनाद कवित रस, सरस राग इति रंग।
अनबूड़े बूड़े तरे, जे बूड़े सब अंग।।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी सत्सई से ली गई है। यह बिहारी द्वारा लिखा गया एक मात्र ग्रंथ है। उक्त दोहों के रचयिता कवि बिहारी है।

प्रसंग - जैसा कि हम जानते है बिहारी जी की अन्योक्तियाँ चमत्कार पूर्ण होती है। यह दोहा भी अपनी अलग शब्द रचना से भगवान की भक्ति में लीन होने की बात कहता है।

व्याख्या - कवि बिहारी कहते हैं - वीणा से उत्पन्न होने वाली झंकार, काव्य पंक्तियों की ओर आकर्षित करने वाली उससे उत्पन्न रस और सुंदर-संगीत-मय राग सभी को भाता है। प्रत्येक

व्यक्ति तन्मय हो जाता है। डूब जाता है। कवि बिहारी कहते हैं कि इनमें जो डूब गया वह तर गया और जो नहीं डूबा वह अज्ञानी है इस विषय में कुछ नहीं समझ पाया। इसी तरह भगवान की भक्ति में जो व्यक्ति डूब जाता है वह संसार रूपी भव-सागर से तर जाता है और जो व्यक्ति ईश्वर भक्ति को नहीं समझ पाता वह इस भव सागर में अटक जाता है।

अर्थ - तंत्री नाद - वीणा की झंकार, इति-रंग - प्रेम का रंग अन बूढ़े - जो नहीं डूबे, तर गये।

२) 'कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल-बल जलु ऊँचौं चढ़े, तऊ नीच को नीच।।'

संदर्भ - ऊपर दिए गए संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - कवि ने उक्त दोहा आदत से मजबूर व्यक्ति के विषय में कहा है, व्यक्ति अपनी आदते और स्वभाव किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलता।

व्याख्या - किसी के द्वारा किए गए करोड़ों प्रयत्न भी किसी वस्तु या व्यक्ति के स्वभाव को नहीं बदल सकते ठीक उसी तरह जिस तरह नल में पानी बड़ी दृढ़ता से ऊपर चढ़ता है लेकिन अपनी प्रकृति के अनुसार नीचे की ओर ही बड़ता है।

शब्दार्थ - कोटि - करोड़, जतन - प्रयास प्रकृति - स्वभाव

३) 'संगति सुमति न पावहीं, परे कुमति के धन्ध।
राखौ मेलि कपूर में, हींग न होइ सुगन्ध।।'

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - कवि बिहारी ने अच्छे और बुरे के विषय में बताया है। बुरे काम की लत पड़ने के पश्चात व्यक्ति अच्छा कार्य नहीं कर सकता।

व्याख्या - कवि बिहारी कहते है कुमति अर्थात खराब काम की आदत जिसे लग जाती है वह अच्छी संगति में रहकर भी नहीं सुधर सकता। क्योंकि बुरे काम में वह तल्लीन हो चुका है ठीक उसी तरह जैसे हींग को कपूर में मिलाकर रखेंगे फिर भी हींग अपना सुगंध नहीं छोड़ सकता।

शब्दार्थ - सुमति - सुबुद्धि, कुमति - कुबुद्धि, धंध - जंजाल

४) 'नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बध्यौ, आगे कौन हवाल।।'

प्रसंग - जयपुर के राजा जयसिंह विवाह उपरान्त अपनी नयी-नवेली दुल्हन में ऐसे खोए कि राज-काज की सुध-बुध भूल बैठे। ऐसी परिस्थिति में कवि बिहारी इस दोहे के द्वारा राजा को अपना कर्तव्य याद दिलाते है।

व्याख्या - न फूलों में पराग है नही रौनक है और न ही मिठास है। यह काल भी रुख सा गया है यदि भौंरा कली में ही खो गया तो आगे क्या होगा। भावार्थ यह है कि हे राजन अभी तो नव वधु की युवावस्था आनी बाकी है। यदि आप रानी में इतना खोयें रहेंगे तो राज का क्या हाल होगा।

शब्दार्थ - पराग - पुष्प धूलि, मधु - मिठास, अली - भौंरा

५) 'कहे यहै श्रुति सुम्रत्यौ, यहै सयाने लोग।
तीन दबावत निसकहीं, पातक, राजा, रोग।।'

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - उक्त दोहे में कमजोर व्यक्ति किस प्रकार सभी ओर से मात खाता है या दुखी होता है यह बताया है।

व्याख्या - वेदो, पुराणों, स्मृतियाँ और चतुर व्यक्ति सभी का यह मानना है कि पाप, राजा और रोग ये तीन कमजोर व्यक्ति को ही दबाव में रखते है - दु:ख देते है।

श्रुति - वेद, पुराण, सुम्रत्यौं - स्मृतियाँ, निसक - कमजोर दुर्बल, पातक - पाप

६) 'घरु घरु डोलत दीन है, जनु जनु जाचतु जाइ।
दियैं लोभ - चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ौ लखाई।।'

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - कवि बिहारी ने लोभी व्यक्तियों की मुर्खता पर निशाना साधा है।

व्याख्या - जो व्यक्ति लोभ - लालच से ग्रसित होता है वह घर घर घुमता है। क्योंकि उसे आशा रहती है कि कहीं से तो कुछ मिलेगा वह प्रत्येक व्यक्ति से याचना करता है। आँखों पर लोभ रूपी चश्मा लगा होने के कारण उसे सामने खड़ा हर एक व्यक्ति बड़ा दिखता है (निम्न व्यक्ति भी) भावार्थ यह है कि लालची व्यक्ति विवेक हीन होता है उसे योग्य-अयोग्य की पहचान नहीं होती।

शब्दार्थ - घरु - घरु - घर-घर, दीन-गरीब, जाचतु - याचना लखाई - दिखना।

७) कनक कनक तैं सौगुनौ, मादकता अधिकाई।
उहिं खाएँ बौराई इहिं पाएँ ही बौराइ।।

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - सोना और धन व्यक्ति के जीवन और समाज के लिए सर्वाधिक घातक है।

व्याख्या - प्रस्तुत दोहे में कनक शब्द की पुनरावृत्ति हुई है लेकिन कवि ने दोनो बार कनक का अलग अर्थ प्रस्तुत किया है। पहले कनक का अर्थ है धतुरा। जिसे खाने से व्यक्ति की बुद्धि भ्रमिष्ठ हो जाती है। वह पागल सा हो जाता है वही दूसरे कनक से तात्पर्य धातू सोना है कवि का मानना है धतुरे से सौ प्रतिशत अधिक नशा सोने में होता है। क्योंकि धतुरे का सेवन करने के पश्चात नशा चढ़ता है। परंतु सोने को मात्र देखने भर से नशा चढ़ जाता है और यह नशा कभी उतरता नहीं है। इसके रंग तरह तरह से दिखाई देते है। धन का नशा सभी नशों से अधिक खतरनाक होता है।

कनक - धतुरा, कनक - सोना, धन, दौलत, बौराय - नशे में बहकना

८) 'सबै हँसत करतार दै, नागरता कैं नाँव।
गयौ गरबु गुन कौ सखु, गएँ गँवारै गाँव।।'

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - किसी भी कार्य की प्रवीणता मुर्खो में रहकर नहीं पहचानी जा सकती है।

व्याख्या - जहाँ किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के द्वारा किये गये किसी भी प्रकार के छोटे - बड़े कार्य पर या किये गये कार्य का स्वरूप देखे बिना ही उसकी वाह वाही में सभी लोग ताली बजाने लगते हैं, हँसते है। ऐसे गाँव में गुजर बसर करने से सभी गुणों का नाश हो जाता है। अर्थात कवि कहना चाहते है कि जो नाम के आधार पर ताली बजाते है वहाँ अच्छे बुरे की पहचान नहीं होती और गुणी व्यक्ति के गुणों का ऱ्हास ही होता है।

शब्दार्थ - करतार - ताली, नागरता - नागरिकता गरनु - गर्व

९) बहकि बड़ाई आपनी कत राँचति मति भूल।
बिनु मधुकर कै हियै गड़ै न गुड़हल फूल।।

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - रूप से अधिक प्रधानता गुण (प्रेम) को दी है।

व्याख्या - रुपवान नायिका से सखी कहती है कि तुम अपने रूप और सौंदर्य पर इतना अभिमान मत करो। स्वयं में गुण और प्रेम-भावना को जागृत करो तभी नायक तुम्हारे वश में होगा। सिर्फ सौंदर्य ही परिपूर्ण नहीं है। ठीक उसी प्रकार जैसे गुड़हल का फूल दिखने में बहुत सुन्दर है लेकिन वह भौरे या भँवरे के किसी काम का नहीं क्यों कि उसमे पराग और सुंगध नहीं है।

शब्दार्थ - राँचति - प्रसन्न होती है, मधु - रस

१०) 'सम्पत्ति केस सुदेस नर, नवत दुहुनि इक बानि।
बिभव सतर कुच नीच नर, नरम बिभव की हानि।।'

संदर्भ - पूर्व संदर्भ के अनुसार

प्रसंग - सज्जन पुरुष और नीच पुरुष सम्पत्ति और वैभव मिलने पर कैसी अवस्था होती है यह वर्णन किया है।

व्याख्या - केश और सज्जन पुरुष को धन, ऐश्वर्य बढ़ोत्तरी मिलती है तो वह नरम पड़ जाता है। वहीं दूसरी और संकुचित और नीच व्यक्ति वैभव, धन, संपत्ति पाकर ऐंठने लगता है और हानि होते ही नरम हो जाता है।

शब्दार्थ - सुंदस नर - सज्जन पुरुष, बानि - आदत, बिभव - वैभव, सतर - ऐंठ

४.६ बिहारी के काव्य में उपदेशगत् चित्रण

रीतिकाल के प्रमुख कवि बिहारी मुलतः श्रृंगार परक कवि है। श्रृंगारिक काव्य उन्होंने जितना रस विह्वल होकर लिखा है उतना अन्य विषयों में कवि डूब नहीं पाये है। लेकिन इस विषय में निरुपण का आधार मानवीय अधिक रहा है।

कवि बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषता श्रृंगार परक काव्य है परंतु बिहारीजी के काव्य में उपयुक्त उपदेश और सदाचार के अनदेखा नहीं किया जा सकता। सतसई के मंगलाचरण के रूप में श्री राधिका की स्तुति की गई है कि उनका ग्रंथ निर्विघ्न पूर्ण हो

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरी सोइ।

राजा जयसिंह को कर्तव्य स्मरण दिलाने के लिए लिखा गया दोहा उपदेशात्मक होने के साथ काव्य कलात्मकता की अनुभूति देता है। और काव्य के द्वारा कार्य सिद्धि का उत्तम उदाहरण है।

नहिं पराग, नहीं मधुर मधु, नहिं विकासु इहि काल।
अली, कली ही सौं बच्च्यों, आगै कौन हवाल।।

बिहारी कठिन से कठिन बात अपने काव्य रचना के द्वारा सरल तो बनाते थे उसे साध्य भी करते थे। उनके द्वारा किये गये काव्य चमत्कारों से पाठक मुग्ध हो जाते है।

बिहारी ने उपदेश और संदेशात्मक दोहे भी लिखे है जिनका अध्ययन हम व्याख्या सहित कर चुके है। इस प्रकार बिहारी बहुआयामी कवि थे उनके काव्य का प्रधान विषय श्रृंगार है परंतु वे सामाजिकता से भलिभाँति परिचित थे और अपने काव्य में इसका वर्णित भी किया है।

४.७ सारांश

इस इकाई में आपने कवि बिहारी विषयक अध्ययन किया। आशा है कि इकाई में दिए गए मुद्दों से आप अच्छी तरह परिचित हो गए है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् -

- कवि बिहारी के जीवन से परिचित हो सकते है।
- दोहों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकते है।
- बिहारीजी के उपदेशातमक काव्य को समझ सकते है।

४.८ बोध प्रश्न

१) कवि बिहारी का जीवन परिचय देते हुए। बिहारी सतसई पर प्रकाश डालिए।
२) कवि बिहारी का काव्य श्रृंगार परक न होकर उपदेशात्मक भी है सिद्ध कीजिए।
३) बिहारी के काव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
४) कवि बिहारी का काव्य संदेशात्मक काव्य है सोदाहरण विवरण दीजिए।

अतिलघुत्तरीय प्रश्न :

१) करोड़ो जतन करने के बाद क्या नहीं बदल सकता ?
उत्तर : करोड़ो जतन करने के बाद व्यक्ति का स्वभाव नहीं बदल सकता।

२) व्यक्ति के जीवन और समाज में सबसे ज्यादा घातक क्या है ?
उत्तर : सोना और धन

३) कवि ने रूप - सौंदर्य से अधिक प्रधानता किसे दी है ?
उत्तर : गुण और प्रेम

४) कनक-कनक से कवि का क्या तात्पर्य है ?
उत्तर : सोना और धतुरा

❖❖❖❖

५

आजकल लड़ाई का जमाना है

- त्रिलोचन

इकाई की रूपरेखा :

५.१ उद्देश्य
५.२ प्रस्तावना
५.३ कवि परिचय
५.४ कविता का भावार्थ
५.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण
५.६ सारांश
५.७ संदर्भ सहित व्याख्या
५.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
५.९ लघुत्तरीय प्रश्न

५.१ उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य

- कवि त्रिलोचन के व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- द्वितीय विश्व युद्ध के माध्यम से युद्ध के प्रति देश वासियों के मनोभाव को व्यक्त करना।

५.२ प्रस्तावना

कवि त्रिलोचनजी ने हिन्दी साहित्य को अमूल्य धरोहर दी है साथ ही सामाजिक बुराईयों को भी काव्य के माध्यम से उजागर कर जन जागृति का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस कविता में कवि युद्ध के दुष्परिणाम से समाज को आगाह करा रहे है साथ ही जन-जन सिर्फ युद्ध की वार्तालाप में व्यस्त है कुछ करने की ताकत किसी में नहीं है बल्कि अपने हाथ का काम-धंधा छोड़कर सिर्फ इसी चर्चा में समय व्यतीत कर स्वयं को देशभक्त मानना उचित नहीं है। इस प्रकार की सत्य परिस्थिति का वर्णन कवि इस कविता में करते है।

५.३ कवि परिचय

कवि त्रिलोचन हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। २० अगस्त सन १९१७ को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में जन्में त्रिलोचन शास्त्री का मूल नाम वासुदेव सिंह था। इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी में और लाहोर से संस्कृत में शास्त्री की डिग्री प्राप्त की थी। अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी के अतिरिक्त ये अरबी और फारसी भाषा के निष्णात ज्ञाता थे। प्रभाकर, वानर, हंस, आज और समाज जैसी पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कर ये पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी सक्रिय रहे।

त्रिलोचन बाजारवादी संस्कृति के घोर विरोधी थे। इन्होंने हिन्दी भाषा में प्रयोगधर्मिता का समर्थन किया कि भाषा में जितने प्रयोग होंगे, वह उतनी ही समृद्ध होगी। ये नए साहित्यकारों के लिए उत्प्रेरक थे।

इन्होंने कविता के अलावा कहानी, गीत, गजल और आलोचना लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 'शास्त्री', 'साहित्य रत्न' तथा हिन्दी अकादमी द्वारा शलाका सम्मान के साथ-साथ अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया।

५.४ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता 'आजकल लड़ाई का जमाना है' के माध्यम से कवि त्रिलोचन यह कहना चाहते है कि आजकल लड़ाई का जमाना है, द्वितीय विश्व युद्ध के समय घर, द्वार, राह और खेत में अपढ़-सुपढ़ सभी लोग दिन-रात लड़ाई की चर्चा करते रहते हैं।

जिन लोगों को देश-काल की परिस्थितियों के विषय में कोई जानकारी नहीं है, कुछ अता-पता नहीं है। वे लोग भी रूस, चीन, अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान और इटली का नाम ले-लेकर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने साथियों की आँखों में आँखे डाल-डाल कर अपने विचार रखते हैं। युद्ध की भयावहता को देखते हुए एक दूसरे से जानना चाहते हैं कि आगे क्या होगा? इस देश का क्या होगा?

युदध के दुष्परिणाम के विषय में चिंतित देशवासी जब भी अपने ऊपर से हवाई जहाज उड़ते देखते हैं तो डर जाते हैं। वे तब तक भयभीत मन से अपना काम-धंधा छोड़कर उस जहाज को देखते रहते हैं। जब तक वह क्षितिज पार करके दूर चला नहीं जाता है।

युद्ध में एक पक्ष की जीत तो दूसरे पक्ष की हार निश्चित होती है। इस संदर्भ में देश के अंडे, बच्चे, बूढ़े या जवान सभी अपना-अपना अटकल लड़ाते हैं कि किसकी जीत होगी? कभी परेशान होकर कहते हैं कि यह लड़ाई ही क्यों होती है? युद्ध से लोगों को तबाही के सिवाय क्या मिलता है। लाखों-लाखों घर उजड़ जाते हैं, बिखर जाते हैं, लाशों की ढेर पर अपने अह्म को रखना कहाँ तक उचित है?

हिन्दुस्तान की जनता हाथ पर हाथ धरे बैठी है और गंभीर चिन्तन -मनन में डूबी हुई है। जनता सोचती है कि वह ईश्वर जिसे अलग-अलग धर्मो के लोग राम या अल्लाह कहकर पुकारते हैं देखो वह ईश्वर हमें किसके पल्ले बाँधते हैं? द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन की जीत भारत को आजादी दिलवाने में मददगार साबित होती हैं या नहीं?

इस जीत पर बहुत कुछ निर्भर करता है। देखें हिन्दुस्तान का क्या होता है? यह हिन्दुस्तान तो हमेशा से ऐसा ही है। बस जैसा है, तैसा है।

५.५ संदर्भ सहित व्याख्या का एक उदाहरण

१) आजकल लड़ाई का जमाना है... चर्चा करते हैं :

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठयपुस्तक 'मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य' के 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता से लिया गया है जिसके रचयिता त्रिलोचन जी हैं।

प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि त्रिलोचन द्वितीय विश्व महायुद्ध के दौरान देशवासियों कि मनोदशा का, भयाक्रान्त मन का अत्यन्त सजीव चित्रण करते हैं।

व्याख्या :

कवि त्रिलोचन 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भयाक्रान्त जनमानस की क्रिया-प्रतिक्रिया - चिन्ता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि आजकल चारों तरफ चाहे वह घर-द्वार हो, राह खेत हो या बाजार, हर ओर सभी पढ़े-लिखे या अनपढ़ लोग भी निरंतर लड़ाई पर ही चर्चा करते रहते हैं। आज चारों तरफ चाहे वह परिवार हो या दुनिया के तमाम देश, चारों तरफ लड़ाई का ही जमाना है, विचारों की लड़ाई अब धीरे-धीरे अह्म की लड़ाई बन चुकी है। पूरी कविता में कवि भारत के चिंतित देशवासियों की मनोव्यथा को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

विशेष :

भाषा-शैली सहज-सरल-सुपाठ्य है पर चिन्तन गंभीर है।

५.६ सारांश

'आजकल लड़ाई का जमाना है' इस कविता का संपूर्ण अध्ययन विद्यार्थीयों ने इकाई में किया है, कवि परिचय, कविता का भावार्थ, संदर्भ सहित व्याख्या आदि से संबंधित, दीर्घोत्तरी और लघुत्तरीय प्रश्न का उत्तर इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी आसानी से दे सकते है।

५.७ संदर्भ सहित व्याख्या

संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

१) "जिन्हें देश काल का पता ... पूछते हैं क्या होगा।"

२) "कभी यदि हवाई ... उसे देखा करते हैं।"

३) "अंडे, बच्चे, बूढ़े या ... इससे क्या मिलता है।"

४) "हाथ पर हाथ धरे... बस जैसा - तैसा है।"

५.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता कि मूल संवेदना लिखिए।

२) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता का उद्देश्य लिखिए।

३) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? लिखिए।

४) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

५) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता का मूल भाव लिखिए।

५.९ लघुत्तरीय प्रश्न

१) 'आजकल लड़ाई का जमाना है' कविता का कवि कौन है? - त्रिलोचन

२) आजकल किसका जमाना है? - लड़ाई का

३) कौन लोग लड़ाई की चर्चा करते रहते हैं? - अपढ़-सुपढ़ दोनों (साक्षर निरक्षर दोनों)

४) कविता में किस लड़ाई की चर्चा हो रही है? - द्वितीय - विश्व - युद्ध की

५) लोग अपना काम-धाम छोड़कर क्या देखते हैं? - ऊपर उड़ता हवाई जहाज।

६) बच्चे से लेकर बूढ़े तक क्या अटकल लगाते हैं? - कौन जीत सकता है?

७) युद्ध से परेशान लोग क्या कहते हैं? - आखिर यह लड़ाई क्यों होती हैं? इससे क्या मिलता है?

८) हाथ-पर हाथ धरे कौन बैठा है? - हिन्दुस्तान की जनता बैठी है।

९) कविता में युद्ध में कौन-कौन से देश लड़ रहे हैं? - रूस, चीन, अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान और इटली

१०) कवि त्रिलोचन का मूल नाम लिखिए। - वासुदेव सिंह

❖❖❖❖

५.१

एक छोटा-सा अनुरोध

- केदारनाथ सिंह

इकाई की रूपरेखा :

५.१.१ उद्देश्य
५.१.२ प्रस्तावना
५.१.३ कवि परिचय
५.१.४ कविता का भावार्थ
५.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण
५.१.६ सारांश
५.१.७ संभावित प्रश्न

५.१.१ उद्देश्य

कवि केदारनाथ सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालना।

- भूमंडलीकरण बाजारीकरण के दौर में छोटे-छोटे किसानों मजदूरों - खेतिहरों की दशा से लोगों को अवगत कराना,
- किसानो की उनकी जर्जर हालत के जिम्मेदार बिचौलियों के प्रति सबको आगाह करना।

५.१.२ प्रस्तावना

कविता का शीर्षक ही कवि की विनती से परिपूर्ण होने की साक्ष्य दे रहा है इस कविता के माध्यम से जो समाज में बाजारवाद का विक्राल रूप हम आज देख रहे है उसकी परिकल्पना कवि ने उसी समय कर ली थी इसीलिए वे जन-जन से विनती कर रहे है कि एक बार सीधा खेतों में जाकर वहाँ से सामान खरीदों इसी बहाने हम अपने किसानों को और उनकी दयनीय अवस्था अपनी आँखो से देख सकेंगे और अच्छा शुद्ध माल भी खरीद सकेंगे।

५.१.३ कवि परिचय

१९ नवम्बर सन् १९३४ में उत्तर प्रदेश के बलिया (चकिया) में जन्में केदारनाथ सिंह हिन्दी साहित्य के शीर्ष के साहित्यकारों में से एक हैं। ये पेशे से प्राध्यापक रहे हैं। उदय प्रताप

कॉलेज, वाराणसी, सेंट एण्ड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर, उदितनारायण कॉलेज पडरौना तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से संबद्ध रहे। सन् १९७६ से लेकर १९९९ तक जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र में अध्यापन कार्य से जुड़े रहे। ये भारत ही नहीं अपितु विश्व के विभिन्न देशों मसलन अमरीका, रूस, कजाकिस्तान, लंदन, पेरिस, इटली आदि में बड़े-बड़े कवि सम्मेलनों में आमंत्रित किए गए और वहाँ जाकर काव्यपाठ किया।

इनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए इन्हें अनेक सम्मानित-प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें प्रमुख हैं - भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (मध्यप्रदेश) कुमारन आशान पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार (बिहार), जीवन भारती सम्मान (उड़िसा), भारत भारती सम्मान (उड़िसा), जाशुआ सम्मान आंध्र प्रदेश और व्यास सम्मान आदि।

५.१.४ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता 'एक छोटा-सा अनुरोध' में कवि केदारनाथ सिंह हम सभी से एक छोटा सा अनुरोध निवेदन या आग्रह करते हैं कि आज की शाम हम में से जो लोग बाजार जा रहे हैं, क्यों न ऐसा हो कि सभी लोग अपने-अपने थैले और डोलचियाँ एक तरफ रख दें और सीधे उन खेतों की तरफ प्रस्थान करें, वहाँ सीधे जाएँ, जहाँ हमारे जीने की जरूरी चीजें बनती हैं, खाद्यान्न उत्पन्न होते हैं, आज बाजार न जाकर क्यों न सीधे धान की मंजरियों तक चलें ?

हमारे जीवन के लिए चावल, आटा, दाल, नमक, पुदीना यानि कि खाने-पीने के सभी खाद्यान्न आवश्यक हैं। हम इन सभी चीजों को बाजार से खरीदते है इसीलिए इनके उत्पन्न होने की प्रक्रिया और उसके पीछे के कष्ट को नहीं समझ पाते हैं, इसलिए कवि चाहता है कि हम उन खेतों में जाकर उन जरूरी चीजों के बनने की प्रक्रिया में हुए मुश्किलों को समझने की कोशिश करें, हम वहाँ जाकर देखें, समझें कि चावल के इन दानों को उत्पन्न करने के पीछे दाना बनने से पहले इसे कैसे सुगंध की पीड़ा से छटपटाना पड़ता है।

कवि कहते हैं कि उचित यही होगा कि हम शुरु से ही अपने जरूरत की चीजें खरीदने के लिए सीधे गाँव के किसानों के आमने-सामने खड़े होकर खरीदें, कोई बिचौलिया या दुभाषिया बीच ने न आए। कोई बाजारवाद बीच में न आए। बल्कि हम स्वयं सीधे खेतों में उपजे अनाज के सुगन्ध से बातचीत करें। कवि इन तमाम क्षेत्रों होने वाली दलाली संस्कृति का घोर विरोधी है जिसको आज किसानों-मजदूरों का जीवन तबाह कर दिया है।

खेतों से सीधे तौर पर फल सब्जियाँ खरीदना हमारे स्वास्थ्य के लिए रक्त, भूख, नींद के लिए बहुत अच्छा है।

कवि पुनः कहता है कि कैसे होगा कि हम खरीददारों और बाजारों के बीच में कोई न हो और हम चुपके-चुपके खेतों में चावल, नमक और पुदीने से मिल आएँ, एक बार... सिर्फ एक बार। इन पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि आज बाजारवाद ने जहाँ एक तरफ अपने उपभोक्ताओं के साथ लूट मजा रखी है तो वहीं खेतिहर-किसानों की स्थिति भी अत्यंत जर्जर हो चुकी है, उन्हें खेती करने से एक पैसे का फायदा भी नहीं रहा, उनका मनोबल टूटने लगा है। ऐसे में आम

जनमानस का यह कदम दोनों वर्गों की आर्थिक स्थिति सुधारने का एक बेहतर कदम सिद्‌ध हो सकता है।

५.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए

१) कैसा रहे बाजार न आए......... एक बार सिर्फ एक बार।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्‌यपुस्तक मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य से अवतरित है। कविता का शीर्षक है एक छोटा सा अनुरोध और कवि हैं केदारनाथ सिंह।

प्रसंग :

प्रस्तुत कविता में कवि केदारनाथ सिंह ने आज की बाजारवादी संस्कृति में मुफ़्तखोरी बिचौलियों-दलालों से त्रस्त उपभोक्ताओं को किसानों से सीधे संपर्क साधकर उनसे खाद्‌यान्न खरीदने पर बल दिया है ताकि दोनों का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्वास्थ्य स्वस्थ, सुदृढ़ रहे।

भावार्थ / व्याख्या :

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि केदारनाथ सिंह जनमानस अनुरोध करते हुए कहते हैं कि हम एक दिन, सिर्फ एक दिन के लिए बाजार न जाकर उस स्थान पर जाएँ, जहाँ चावल-आटा-दाल-सब्जियों की खेती होती है। हम वहाँ से जरूरी सामान खरीदें जहाँ वह उत्पन्न होती है, ताकि दुभाषिए-बिचौलिये की अंधेरगर्दी से हम अपने साथ-साथ किसानों-श्रमिकों के साथ हो रहे अन्याय अत्याचार-धोखाधड़ी और बेईमानी पर भी लगाम लगाया जा सके, किसानों को समृद्‌ध बनाकर ही हम देश को समृद्‌ध बना सकते हैं। इसी संदर्भ में कवि जनता से जानना चाहते हैं कि कैसा होगा कि हम खरीदादारों और बाजारों के बीच में कोई न हो और हम चुपके-चुपके खेतों में चावल, नमक और पुदीने से सिर्फ एक बार मिल आएँ। ऐसा करने ने दलाली संस्कृति पर अंकुश लगेगा साथ ही किसानों का मनोबल भी ऊँचा होगा।

विशेष :

- ❖ यह कविता सरल-सहज होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से अत्यन्त गूढ़-गंभीर है।
- ❖ यह कविता देश की गंभीर समस्या, किसानों की समस्या को अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करती है।

५.१.६ सारांश

'एक छोटा सा अनुरोध' कविता का संपूर्ण अध्ययन उक्त इकाई में हमने किया है इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी कवि केदारनाथजी के जीवन परिचय, कविता का भावार्थ, सारांश और कविता की व्याख्या आदि से जुड़े प्रश्नों का सुगमरीति से उत्तर दे सकेंगे।

५.१.७ संदर्भ सहित व्याख्या

संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

i. "आज की शाम जो .... मंजिरियों तक चलें।"

ii. "चावल जरूरी है जरूरी .... पीड़ा से छटपटा रहा हो।"

iii. "उचित यही होगा .... नींद के लिए।"

५.१.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता का मूल भाव लिखिए।

२) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता की मूल संवेदना।

३) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता का उद्देश्य लिखिए।

४) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता किस मुद्दे पर आधारित है? सोदाहरण लिखिए।

५) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।

५.१.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) "एक छोटा-सा अनुरोध" कविता के रचयिता / कवि कौन हैं? - केदारनाथ सिंह

२) कवि लोगों से कैसा अनुरोध करता हैं? एक छोटा-सा अनुरोध

३) कवि बाजार न जाकर कहाँ जाने का अनुरोध करता हैं? - जहाँ अन्न / अनाज उत्पन्न होता है?

४) जीवन के लिए क्या जरूरी है? - चावल, आटा, दाल, नमक, पुदीना आदि

५) कवि किससे अनुरोध करता है? - जो बाजार जा रहे हैं।

६) रक्त, भूख और नींद के लिए क्या अच्छा है? - हम किसानों के आमने-सामने खड़े होकर उनसे सामान खरीदे और दुभाषिये को नकारें। उन्हें महत्त्व न दें।

७) कवि सिर्फ एक बार किससे मिलने का अनुरोध करता है? - चावल, नमक, पुदीना, आटा वगैरह से।

८) कविता में 'दुभाषिये' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? - दलालों, बिचौलियों के लिए किया गया है।

९) 'एक छोटा-सा अनुरोध' किस पर आधारित कविता है? किसानों - श्रमिकों की समस्या, उपभोक्तावादी संस्कृति को केन्द्र में मौजूद दुभाषिय बिचौलिए - (दलालों) की समस्या पर आधारित कविता है।

❖❖❖❖

५.२

नदी और साबुन

- ज्ञानेंद्रपति

इकाई की रूपरेखा :

५.२.१ उद्‌देश्य

५.२.२ प्रस्तावना

५.२.३ कवि परिचय

५.२.४ कविता का भावार्थ

५.२.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण

५.२.६ सारांश

५.२.७ संदर्भ सहित व्याख्या

५.२.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

५.२.९ लघुत्तरीय प्रश्न

५.२.१ उद्‌देश्य

- इस कविता का उद्‌देश्य है पर्यावरण से संबंधित अनेक मुद्‌दों पर विचार-विमर्श करना।
- कवि ज्ञानेन्द्रपति के व्यक्तित्व-कृतित्व से परिचित करवाना।

५.२.२ प्रस्तावना

नदी और साबुन कविता समाज के लिए शापित प्रदुषण के बढ़ते प्रादुर्भाव के कारणों से हमें अवगत करा रही है। इस कविता में जल प्रदूषण की ओर कवि हमारा ध्यान केंद्रित कर रहे है कि एक साबुन की टिकिया या कोई भी छोटी वस्तु आज नदी के प्रवाहित जल को प्रदुषित कर रही है हमें ध्यान देने की जरूरत है नहीं तो इसके दुष्परिणाम से हमें कोई नहीं पहचान सकता है।

५.२.३ कवि परिचय

दिनांक १ जनवरी सन् १९५० को ग्राम पथरगामा, झारखंड में जन्में ज्ञानेन्द्र कविता के क्षेत्र में अत्यन्त चर्चित कवि हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - आँख हाथ बनते हुए, शब्द लिखने के लिए ही यह कागद बना है, गंगातट, संशयात्मा, भिनसार, पढ़ते-गढ़ते (कथेतर गद्य) कवि ने कहा (काव्य संग्रह)। इनकी वर्ष २००६ में प्रकाशित 'संशयात्मा' शीर्षक काव्य संग्रह के 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, इसके साथ पहल सम्मान, बनारसी प्रसाद भोजपुर सम्मान, शमशेर सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

५.२.४ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता 'नदी और साबुन' के माध्यम से कवि ज्ञानेन्द्रपति भारत देश में नदियों की अनवरत हो रही दुर्दशा पर चिन्तन करते हैं। वर्तमान युग में देश की तमाम नदियाँ या तो अत्यन्त दूषित-जहरीली हो चुकी है या सूखने की कगार पर हैं, कितनी सूख भी चुकी हैं? आखिर इसका जिम्मेदार कौन है? इस प्रश्न का उत्तर भी इस कविता में द्रष्टव्य है।

कवि ज्ञानेन्द्रपति नदी से पूछते हैं कि हे नदी! तू इतनी दुबली-पतली, मैली-कुचैली क्यों हो गई है? तेरा स्वच्छ पानी कहाँ चला गया है? तू तो अत्यंत साफ-सुंदर कलकल करके प्रवाहित होती थी। किसने तेरे कलकल बहते जल को कलुषित, मैला-कुचैला-गंदा कर दिया है, ऐसा लगता है कि तेरे जल के सहारे जीने वाली मछलियाँ भी अब मरी हुई इच्छाओं की तरह मर कर ऊपर आ गई हैं। हे नदी! तुम्हारी यह दशा किसने की? किसने तुम्हें ऐसे दुषित किया है? किसने तुम्हें बर्बाद किया है? जंगल के वाघ समेत अन्य पशु तुम्हारा जल पीकर तुम्हें जुठारते थे। कछुओं द्वारा दृढ़ पथरीली पीठ से उलीचे जाने के बावजूद तुम्हारा पानी कभी कम नहीं हुआ। हाथियों की जल-क्रीड़ाओं को भी तू आनन्दपूर्वक सहती रही, फिर अब तुम्हें क्या हो गया है? तुम क्यों कमजोर पड़ती गई। कहीं ऐसा तो नहीं कि स्वार्थी कारखानों के तेजाबी पेशाब से तुम्हारी शुभ्र त्वचा बैंगनी हो गई। भारत का सिरमौर और उनके नदियों का स्त्रोत हिमालय तेरे सिरहाने पर अडिग है, इसके बावजुद एक हथेली भर की साबुन की टिकिया से तू हार गई? बस इतनी ही ताकत, इतना ही विश्वास है तुझमें?

इस कविता के दूसरे अंश में कवि पुनः कहते हैं कि यह साबुन की एक छोटी सी बट्टी है जो रैपर से खुलकर जल में डूबी, घाट की सीढ़ी से ऊपर, सूखी घाट की सीढ़ी पर रखी हुई है। साबुन की यह साबुत बट्टी एक बहुर्राष्ट्रीय कंपनी की बहु प्रचारित साबुन है। इस तरह हथैली (हथेली भर की) भर की चौकोर, निश्छय काया वाली साबुन की छाया और माया इतनी लंबी व विचित्र है कि इसकी मोह-माया में हर व्यक्ति आ जाता है। इससे बचना नामुमकिन है। विज्ञापन फिल्मों में इसे महाशक्तिशाली, सुपरमैन भुजमछलियों वाला जैसे नामों से पुकारा जाता है। यह अपने आप में कार्तिकेय स्वरूप है, जैसे भगवान कार्तिकेय ने सभी दैत्यों-असुरों का विनाश किया, ठीक वैसे ही इस साबुन की बट्टी ने सभी मैलासुरों से मानो जंग झेड़ दिया है। इनके विज्ञापनों की प्रासंगिकता से अधिक ये एक धमाके से सांधातिक रूप धारण कर मैलासुरों

का विनाश करती है। शायद यही कारण है कि दुर्बल नदी इस तरह से हथैली-भर साबुन की बट्‌टी से हार चुकी है।

विज्ञापनों में साबुन की बट्‌टी को बहुप्रचारित किया गया है। यह अब स्क्रीनागमन का अभ्यस्त बन चुका है। इसके दिव्य रूप को देखकर थकी नागरिकों की आँखें फिर चमक उठती हैं। यह गंदगी निकालने वाला साबुन आज सबकी जरूरत बन गया है यही कारण है कि यह घर-घर का अह्म हिस्सा बन चुका है। यही साबुन गंगा के तीर पर भी महावीर महाबल शाली बनकर आ खड़ा हुआ है, जो अपने झागबल से जहरीले कणों और किटाणुओं को फूः यानि कि मैल को दूर कर देता है लेकिन गंगा को जहरीला कर देता है, दूषित बना देता है। यह सब कुछ देख-सुन-समझ कर भी गंगा लाचारी व कुछ नहीं कर पाती है। उसका ह्रदय काँपता है अपने पेट में पलने वाले अनगिन जीव-जन्तुओं के विषय में सोचकर इतनी गंदी, बदहाल गंगा के पेट में असंख्य मछलियाँ, कछुए, घोंघे, कीड़े-मकोड़े पलते हैं। उनके जहरीले पानी से गंगा के साथ-साथ इन सभी जीवजंतुओं का जीवन अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है।

जल सतह पर एक भौंरी घूमती रहती है। जब बरसात के दिनों में उनका मिथुनकाल प्रारंभ होता है तब दोनों भौरों का मिलन होता है। गंगा उनकी साक्षी बनती है और उनका परिभ्रमण चंचल परिभ्रमण यूँ ही चलता रहता है। गंगा का जी अपने जलजीवों के लिए काँपता है और उन थल जीवों के लिए भी काँपता है जिनके कंठ की प्यास के साथ-साथ भीतर की गहरी प्यास बुझाती आ रही है।

कल जिस गंगा का पानी अमृत जैसा था, वह आज इस साबुन के कारण जहर जैसा हो गया है जो किसी अच्छे-भले इंसान को भी बीमार बना सकता है और किसी बीमार को मोक्ष दिला सकता है।

हिमालय पर्वत की बेटी गंगा आज खुद एक दुखियारी महतारी (माता) बन गई है। गंगा का जी डर से काँपता है क्योंकि उसकी प्रतिद्वंदी हथेलीभर की जो साबुन की टिकिया है, वह एक इजारेदार पूँजीवाद (धनाढ्‌य) की बिटिया है। उसका झाग उठने से पहले ही गंगा के दिल में हौल उठ जाता है। एक भय और आतंक से भरी लहर उसमें मिल जाती है।

आज एक अजीब-सी झुरझुरी-वेदना - संवेदना कवि - वक्ष में अर्थात् कवि हे ह्रदय में उठती है। गंगा नदी ही नहीं बल्कि देश की तमाम नदियों की ऐसी बदहाली या दुर्दशा देखकर कवि व्याकुल हो उठता है। देश के तमाम कल-कारस्थानों से प्रदूषित होती, विलुप्त होती नदियों कि चिन्तनीय दशा से कवि भी वंचित नहीं है।

५.२.५ संदर्भ सहित व्याख्या

नदी! तू इतनी .... क्यों उतराई हैं?

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्‌यपुस्तक ‘मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य’ के ‘नदी और साबुन’ नामक कविता से लिया गया है। इसके कवि ज्ञानेन्द्रपति हैं।

प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ज्ञानेन्द्रपति इस कटु भावार्थ के प्रति सबको आगाह करना चाहते हैं कि आधुनिकता, भूमंडलीकरण, बाजारीकरण के दौर में देश का विकास करते-करते हमने अपने नदियों की क्या दुर्दशा की है।

व्याख्या :

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ज्ञानेन्द्रपति भारत देश में नदियों की निरंतर हो रही दुर्दशा पर चिन्तन करते हैं। आज देश की अधिकांश नदियाँ बद से बदतर दशा में दूषित हो चुकी है या सूखने की कगार पर पहुँच चुकी हैं। ऐसे में कवि नदी का मानवीकरण करते हुए उससे जानना-चाहा है कि हे नदी! तुम इतनी दुबली पतली, मैली-कुचैली कलुषित क्यों हो गई है? किसने तुम्हारे कलकल बहते जल को कलुषित, मैला-कुचैला किया है। तुम्हारी दशा देखकर प्रतीत होता है कि तुम्हारे ही जल के सहारे जीनेवाली मछलियाँ भी अब मरी हुई इच्छाओं की तरह मरकर ऊपर आ गई हैं। हे नदी! तुम्हारी यह दशा आखिर किसने की है?

विशेष :

१. 'नदी और साबुन' कविता में नदी का मानवीकरण किया गया है।
२. तरहथी-भर की साबुन की टिकिया से हिमालय की बिटिया कैसे डर जाती है, इस तथ्य को अत्यन्त बारीकी से दर्शाया गया है।

५.२.६ सारांश

नदी और साबुन कविता उद्‌देश्यगत दृष्टि से सर्वोपरि कविता है जो समाज को आगाह कर रही है साथ ही अपने सामाजिक उद्दिष्ट, मानवतावादी धर्म को कवि साहित्य के माध्यम से बखूबी निभा रहे है। इस कविता का परिपूर्ण अध्ययन इकाई में किया गया है जो विद्यार्थियों को कविता का भावार्थ, व्याख्यात्मक प्रश्न, दीर्घोत्तरी और लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर देने में सहायता करेगा।

५.२.७ संदर्भ सहित व्याख्या

संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

i. तुम्हारे दुर्दिनों .... सहती रही सानंद।
ii. आह! लेकिन स्वार्थी .... हार गई तुम युद्ध।
iii. वह एक साबुन है .... बहुप्रचारित साबुन है।
iv. माया है कि तरहथ .... का अभ्यस्त।
v. गंगा का जी कँपता .... कवचधारी घोंघे।
vi. पहाड़ की बेटी वह .... साबुन की टिकिया हैं।

५.२.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'नदी और साबुन' कविता का उद्देश्य लिखिए।

२) 'नदी और साबुन' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

३) 'नदी और साबुन' कविता में निहित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

४) 'नदी और साबुन' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है स्पष्ट कीजिए।

५.२.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) 'नदी और साबुन' कविता के कवि कौन हैं? - ज्ञानेन्द्रपति

२) दुबली-मैली-कुचैली किसे कहा गया है? - नदी को

३) किसके जुठारने से नदी का जल दूषित नहीं हुआ? - बाध के जुठारने से

४) इजारेदार पूँजीवाद की बिटिया किसे कहा गया हैं? - साबुन को

५) दुखियारी महतारी कौन है? - गंगा

६) हिमालय की बिटिया किस कहा गया है? - गंगा को

७) विज्ञापन फिल्मों में महाशक्तिशाली उत्पाद किसे कहा गया है - साबुन को

८) गंगा का जी किसके लिए काँपता है? - मछलियों, कछुए, घोंघे तथा नदी में होने वाले अन्य जीवों के लिए।

९) जल-थल जीवों के लिए किसका मन काँपता है? - गंगा का मन

१०) नदी कि प्रतिद्वंद्वी कौन है? - तरहथी भर की साबुन की टिकिया।

११) 'नदी और साबुन' कविता किस पर आधारित है? नदी प्रदूषण / जल प्रदूषण पर

❖❖❖❖

६

सरकारी कोयल

- उदय प्रकाश

इकाई की रूपरेखा :

६.१ उद्देश्य
६.२ प्रस्तावना
६.३ कवि परिचय
६.४ कविता का भावार्थ
६.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण
६.६ सारांश
६.७ व्याख्यात्मक प्रश्न
६.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न
६.९ लघुत्तरीय प्रश्न

६.१ उद्देश्य

- कवि उदय प्रकाश की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता 'सरकारी कोयल' की विवेचना करना।
- व्यंग्यात्मक शैली में लिखी कविता 'सरकारी कोयल' के माध्यम में राजनीति में मौजूद भ्रष्टतंत्र को उजागर करना।

६.२ प्रस्तावना

सरकारी कोयल कविता व्यंग्य शैली में लिखी गई कविता है, कवि कविता के माध्यम से राजनीति के भ्रष्ट मंत्री, नेता और उच्च पदस्थ व्यक्तियों को फटकार लगा रहे है। जो सिर्फ मीठा बोलने और आश्वासन देने का कार्य करते है। उन कार्यो की सिद्धी कभी नहीं होती।

६.३ कवि परिचय

भारत भूषण अग्रवाल, ओमप्रकाश साहित्य सम्मान, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, मुक्तिबोध पुरस्कार, साहित्यकार सम्मान, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, रामकृष्ण जयदयाल सद्भावना सम्मान, पहल सम्मान, कथाक्रम सम्मान, पुरिकन सम्मान, द्विजदेव सम्मान और

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित वर्तमान हिन्दी साहित्य के महान कवि उदय प्रकाश का जन्म सन् १९५२ में मध्यप्रदेश के शहडोल (अब अनुपपुर) के गाँव सीतापुर में हुआ था। क्रमशः सागर विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त जवाहरलाल नेहरु विश्व विद्यालय और इसके मणिपुर केन्द्र में चार वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्र - पत्रिकाओं के संपादन कार्य के साथ ही टेलीविजन क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका को कुशलता से संपन्न करने के बाद आज ये स्वतंत्र लेखन, फिल्म और मीडिया के लेखन कार्य से जुड़े हुए है।

अबतक इनकी अनेक साहित्यिक कृतियाँ मसलन, 'सुनो कारीगर', 'अबूतर-कबूतर', 'रात में हारमोनियम', 'एक भाषा हुआ करती है', 'नई सदी के लिए चयन पचास कविताएं' (कविता संग्रह), 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिष्ठ', 'और अंत में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'पीली छतरी वाली लड़की', 'दत्तात्रेय के दुख', 'मोहनदास', 'अरेबा - परेबा', 'मैंगोसिल' (कहानी संग्रह), 'ईश्वर की आँख', 'अपनी उनकी बात', और नयी सदी का पंचतंत्र (निबन्ध आलोचना) प्रकाशित हो चुकी हैं। अनेक रचनाओं का अनेक भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

६.४ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि उदय प्रकाश आज के साथ-साथ सदियों से चली आ रही सरकारी तंत्र पर, सरकारी कोयल पर करारा व्यंग्य करते हुए लिखते हैं जिसमें वे स्वयं को सरकारी अधिकारी यानि कि सरकारी कोयल कहकर तंज कसते हुए कहते हैं कि हम सरकारी कोयल हैं जो सजे - धजे दरबारों में ऐशो-आराम, भोग-विलास करते हुए आनंद से जीते हैं। हम बिना बुलाए कहीं भी किसी जलसे-त्योहारों में चले जाते हैं या चले जाएँगे सेहरा पढ़ेंगे, सोहर गाएँगे, ठुमरी जगाएँगे। कहने का तात्पर्य यह है जहाँ हमारी आवश्यकता है जरुरत है, हम वहाँ कभी नहीं मिलेंगे। हम उस स्थान पर जरूर दिख जाएँगे, जहाँ से हमें तरक्की मिल सके, हमारी स्वार्थ पूर्ति हो सके भले ही इसके लिए हमें कुछ भी क्यों न करना पड़े। अब संविधान के सुख के दिन हवा नहीं हो गए हैं। कवि की इन पंक्तियों में निहित व्यंग्य का भाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वे पुनः कहते हैं कि कहीं कोई काली आँधी हाहाकार नहीं मचा रही हैं, झूठ और अन्याय का अंधेरा कहीं नहीं है, कहीं भी क्रूर आशंकाएँ घठित नहीं हो रहीं है। तात्पर्य यह है कि हम सरकारी कोयल अन्याय और झूठ के अंधेरे में रहकर अपनी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण अत्यन्त चालाक हो गए हैं। हम चालाक सरकारी कोयलों को समाज में व्याप्त तमाम विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ, बुराईयाँ नजर ही नहीं आती हैं। हमें सबकुछ बढ़िया नजर आता है ताकि हमें कुछ करना न पड़े।

कवि पुनः कहते हैं कि हम सरकारी कोयल पर अर्थात् राजनेताओं सरकारी अधिकारियों पर आप सभी (आम जनता) भरोसा रखें, क्योंकि भरोसे पर दुनिया कायम है हमारे देश का प्रजातंत्र कायम है। तात्पर्य यह है कि सरकारी कोयल को एक ही सूर 'भरोसा रखने का सुर' आता है। यह उनके खून में है। पर उन पर भरोसा कैसे किया जाय? जब सरकार के सामने हमारी समस्या रखने का समय आता है तो ये सब गायब हो जाते हैं और हम चैन रखने, धैर्य रखने को कहते हैं झूठा दिलासा देते हैं।

यह सरकारी कोयल झूठे - दिलासे देते हुए कहती है कि सबकुछ ठीक है, प्रशासनिक व्यवस्था कुशलता पूर्वक ठीक से अपना काम कर रही है। सरकारी कोयल का यह रंग-रूप-चाल-ढाल देखते-देखते आजादी के इतने वर्ष बीत गए। हम यही भरोसे का, सब कुछ ठीक ठाक चलने का राग, सुनते आ रहे हैं। इतने वर्षों में भी हमने अपना धीरज नहीं खोया है, तभी तो आम आदमी सरकारी कोयल को पुनः अवसर देता आ रहा है। परंतु अब 'बस' हो गया है, सभी के धैर्य की सीमा समाप्त हो चुकी है। अब आम आदमी इनके भ्रष्टाचार को सहने, इनके पापों को बढ़ावा देने को कदापि तैयार नहीं हैं। माफ जरूर कर सकते हैं।

कवि कविता के दूसरे अंश में कहते हैं कि ये सरकारी कोयल अपना रूप-रंग-चाल-ढाल, काम करने का तरीका कभी नहीं बदलेंगे। जिस प्रकार बत्तख के पैर ठंडे होते है उसी प्रकार इनके विचार ठंडे, निष्क्रिय हैं। इन्हें सिर्फ़ बख्शीश की प्यास है। बख्शीश अर्थात रिश्वत या ईनाम के बिना यह कोई काम नहीं करती है भले ही देने वाला कंगाल क्यों न हो जाए। जो लोग इन्हें रिश्वत से प्रसन्न करते हैं, ये उनकी प्रशंसा करती है, उनकी ही दुन्दुभी बजाती है।

जिस प्रकार कोयल स्वार्थी प्रवृत्ति की होती है, खुद का ही स्वार्थ देखती है, यह सरकारी कोयल भी ऐसी ही है जो सिर्फ अपने फायदे की बात सोचती है, दूसरों की कोई चिन्ता नहीं है। यही वर्तमान युग की विडंबना है, सच्चाई है।

६.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण

"भरोसा रखें हम जाएँगे .... धरें धीरज।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्यपुस्तक 'मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य' के 'सरकारी कोयल' नामक कविता से लिया गया है जिसके रचनाकार उदय प्रकाश जी हैं।

प्रसंग :

इस कविता में कवि उदय प्रकाश कोयल की स्वार्थी प्रवृत्ति के माध्यम से सरकार में विद्यमान भ्रष्ट राजनेताओं - आधिकारियों को सरकारी कोयल कहते हुए इनपर कटाक्ष किया है।

व्याख्या :

प्रस्तुत कविता में कवि उदय प्रकाश आज से नहीं अपितु सदियों से चली आ रही सरकारी कोयल की स्वार्थी प्रवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि सरकारी कोयल अर्थात् भ्रष्ट प्रवृत्ति के नेतागण या अधिकारी जो स्वयं स्वार्थ में डूबे हुए हैं, ये लोग हमेशा से देश की भोली -भाली जनता को छलते - धोखा देते हुए, बेवकूफ बनाते हुए उन पर भरोसा बनाए रखने की बात कहते हैं। यह सरकारी कोयल जनता को भरोसा दिलाकर शुरु से ठगती-धोखा देती आई है। इन्हें बस 'भरोसा रखने' का सुर अलापना ही आता है। सरकार के समक्ष ये आम जनता की समस्या को रखने के समय गायब हो जाते हैं। और जनता को धैर्य रखने को कहते हैं। उन्हें झूठा दिलासा देते हैं।

विशेष :

यह कविता भ्रष्ट प्रशासन पर कटाक्ष या व्यंग्य कर अनुपम उदाहरण है।

६.६ सारांश

सरकारी कोयल कविता के माध्यम से कवि ने किस प्रकार राजनीति, मंत्री और भ्रष्ट अधिकारीयों पर कटाक्ष किया है यह व्यंग्य शैली की कविता विद्यार्थीयों को अध्ययन की दृष्टि से सुगम बनाने का कार्य इस इकाई के माध्यम से हुआ है। इस इकाई के सम्पूर्ण अध्ययन से विद्यार्थी परीक्षा की दृष्टि से पूछे जाने वाले सभी मुद्दों का हल आसानी से कर सकेंगे।

६.७ संदर्भ सहित व्याख्या

संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

i. "हम कोयल हैं सरकार .... ठुमरी जगाएँगे।"

ii. "हवा नहीं हो गए .... क्रूर आशंकाएँ।"

iii. "सब कुछ शान्त है .... जल से धो डालेंगे।"

iv. "हम कोयल हैं सरकार .... चिंता नहीं है हमें।"

६.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'सरकारी कोयल' कविता में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

२) 'सरकारी कोयल' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

३) 'सरकारी कोयल' कविता का केन्द्रीय भाव। उद्देश्य लिखिए।

४) 'सरकारी कोयल' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

५) सरकारी कोयल कौन है और क्यों? सोदाहरण लिखिए।

६.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) 'सरकारी कोयल' कविता के कवि कौन है? - उदय प्रकाश

२) सरकारी कोयल किस पर आधारित कविता है? स्वार्थी, भ्रष्ट नेताओं और अधिकारियों पर।

३) कोयल के किस प्रवृत्ति से नेताओं की प्रवृत्ति मिलती है? - स्वार्थी प्रवृत्ति से

४) सरकारी कोयल बिन बुलाए कहाँ जाएँगी? - जलसों - त्योहारों में।

५) सेहरा पढ़ने, सोहर गाने और ठुमरी जगानें की बात कौन कहता हैं? - सरकारी कोयल

६) सरकारी कोयल कैसा राग अलापती है? भरोसा रखने, सबठीक होने का।

७) सरकारी कोयल जनता से क्या कहती है - धैर्य - धीरज रखें, व्यवस्था ठीक है।

८) बत्तख के पैर जैसे ठंडे क्या हैं? - नेताओं के ठंडे, निष्क्रिय विचार

९) बख्शीश लेकर नगर उतारने का क्या तात्पर्य है? रिश्वत लेकर किसी का काम करना

१०) सरकारी कविता में कवि का कौन-सा भाव द्रष्टव्य है? - व्यंगात्मक भाव, कटाक्ष का भाव

❖❖❖❖

६.१

घर

- मंगलेश डबराल

इकाई की रूपरेखा :

६.१.१ उद्‌देश्य
६.१.२ प्रस्तावना
६.१.३ कवि परिचय
६.१.४ कविता का भावार्थ
६.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण
६.१.६ सारांश
६.१.७ व्याख्यात्मक प्रश्न
६.१.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न
६.१.९ लघुत्तरीय प्रश्न

६.१.१ उद्‌देश्य

- मंगलेश डबराल के साहित्यिक योगदान के विषय में विद्‌यार्थियों से चर्चा करना।
- इनकी प्रस्तुत रचना 'घर' के माध्यम से घर के परंपरागत स्वरूप को समझाना।
- पुश्तैनी धरोहर को संभालने हेतु एक पिता की चिंता को दर्शाना।

६.१.२ प्रस्तावना

कवि मंगेश डबराल ने घर कविता के माध्यम से आज के समय की समस्या पर हमारा ध्यान केंद्रित किया है। लोगों का ग्रामीण भाग की ओर पीठ फेर लेना और शहरों की ओर आकर्षित होना इस प्रवृत्ति को कविता में बखूबी दर्शाया है गाँव किस प्रकार खण्डहर में बदल रहे है वहाँ के घर वीरान पड़े है इस बात की और भी कवि ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

६.१.३ कवि परिचय

१६ मई सन् १९४८ को टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के काफलपानी गाँव में जन्में, वर्तमान हिन्दी साहित्य के महान कवि मंगलेश डबराल वर्तमान साहित्याकाश के लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। इनकी अब तक पाँच काव्य संग्रह - 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते है', 'आवाज भी एक जगह है' और 'नए युग में शत्रु' प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त इनके दो गद्य संग्रह 'लेखक की रोटी' और 'कवि का अकेलापन' तथा एक यात्रा वृतांत 'एक बार आयोबा' भी प्रकाशित हैं। वर्ष २००० में इन्हें इनकी पुस्तक 'हम जो देखते हैं' काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा भी ये अनेक सम्मानों में सम्मानित किए गए हैं।

स्वभाव से सीधे -सादे -सरल मंगलेश डबराल की रचनाओं का भारत की अनेक भाषाओं के साथ-साथ अनेक विदेशी भाषाओं अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, डच, स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी, फ्रांसीसी, पोलिश और बुल्गारियाई में भी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। मंगलेश डबराल जी साहित्य के मर्मज्ञ लेखक - कवि होने के साथ-साथ सिनेमा जगत, जनसंचार माध्यम, भारतीय परंपरा और संस्कृति के विषय में नियमित रूप से लेखन करते हैं। इनकी कविताएँ जीवन-जगत और व्यवस्था से जुड़ी हुई हैं तथा सूक्ष्म सौन्दर्यबोध व सरल - सहज पारदर्शी भाषा युक्त हैं।

६.१.४ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता 'घर' में कवि मंगलेश डबराल ने यह दर्शाया है कि आधुनिक युग में बदलती परिस्थितियों ने किस प्रकार गाँव की पुश्तैनी घरों का हाल-बेहाल कर दिया है। धीरे-धीरे गाँव-कस्बे से लोग नौकरी की तलाश में शहर की ओर पलायन करते जा रहे हैं। सबके चले जाने से घर बिल्कुल अकेला रहकर मानों मन-ही-मन सोचता है कि काली काठ यानि कि काली लकड़ी से बना हुआ यह घर कितना जीर्ण-शीर्ण रह गया है। दीवारों पर दीमक लग जाने से पूरा घर कमजोर हो चुका है। दीमकों के चलने से समूचा घर काँपता है। इससे यह अहसास होता है कि घर काफी पुराना है जिसकी कोई देख-रेख नहीं हुई है। दीवारों पर रेंगते दीमक के निशान, जिन पर पीठ टेकने के निशान हैं मानों स्मृतियों या यादों के निशान हैं।

इस घर में लकड़ी का संदूक (बक्सा) है जिसमें घर वालों के फटे-चिथड़े कपड़े हैं और स्वपनों का एक मिला-जुला अंधकार है। इस संदूक में अनेक यादें बसती हैं। इसमें पड़ी हुई धूल खाती वस्तुएँ घर वालों की यादों की प्रतीक हैं, जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव है कमाई से बनवाया था और अपने पुत्र यानि कि मेरे पिताजी को दे दिया था। वे ही अब इस घर के मालिक हैं। कवि कहते हैं कि घर का यह संदूक तभी निकलेगा जब यह घर टूटेगा।

कवि मंगलेश डबराल पुन: कहते हैं कि इस पुश्तैनी घर में कई बच्चों का जन्म हुआ। किसी तरह गिरते-पड़ते वे बड़े हुए और रोजी-रोटी की जुगाड़ में विभिन्न शहरों में तितर - बितर हो गए। अपने सुखद भविष्य का स्वप्न लेकर शहरों की ओर मौतें भी देखी हैं, जिसके बाद स्त्रियाँ इस तरह रोयी कि सिर्फ उनका सुबकना सुनाई दे सके। आज भी उनकी आवाजों के साथ-साथ इस घर की अनेक पुरानी चीजों की आवाज मानों बजती है, गूँजती है।

कवि को याद आती है माँ द्वारा दिन-भर लकड़ी ढोकर आग जलाना, पिताजी द्वारा डाकखाने से चिट्ठियों का इंतज़ार करके लौट आना, हाथ-पाँव में दर्द की शिकायत करना और आधी रात तक इस बात की चिंता करना कि 'जब मैं नहीं रहूँगा, तो इस घर का क्या होगा।'

आज भारत देश के गाँवों में स्थित लगभग सभी पुश्तैनी घरों की यही व्यथा है कि इस पीढ़ी के बाद उनकी देख -रेख, साज-संभाल कौन करेगा क्योंकि युवा पिढ़ी तो नौकरी की तलाश में शहर की और पलायन कर चुकी है और चूँकि गाँवों में रोजगार की कमी है अतः उनके लौटने की गुंजाइश भी न के बराबर है।

६.१.५ संदर्भ सहित व्याख्या का उदाहरण

"दिन - भर लकड़ी ढोकर माँ .... क्या होगा इस घर का।"

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्यपुस्तक 'मध्यकालीन एवं आधुनिक काव्य' के 'घर' नामक कविता से ली गई है। इसके कवि वर्तमान साहित्य के महान कवि मंगलेश डबराल जी हैं।

प्रसंग :

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि मंगलेश डबराल जी ने हमारे गाँव, कस्बे या छोटेबड़े शहरों में स्थित पुश्तैनी घरों की जीर्ण-शीर्ण दशा और उसमें रहने वाले बुजुर्गों की मनस्थिति को व्यक्त किया है और सबको अपने घर को संभालकर रखने की बात कही है।

व्याख्या / स्पष्टीकरण :

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हम सभी का ध्यान हमारे पुश्तैनी घरों की ओर आकृष्ट करते हुए कहते हैं कि इस घर की अनेक यादें हमारी सांसों में बसती है परन्तु परिस्थितिवश हमने अपने घर को त्याग कर खाने-कमाने की तलाश में अलग-अलग बिखर गए। घर की देखभाल करनेवाला गाँव में कोई शेष नहीं बचा। घर को दीमक ने जर्जर कर दिया है। इस घर में बिताए जीवन के खट्टे - मीठे अनुभवों में कवि याद करता है माँ द्वारा दिन-भर लकड़ी ढोकर लाना और आग जलाकर खाना पकाना, और पिताजी बच्चों की चिट्ठी-पत्री या मनीआर्डर के इंतजार में घंटो डाकखाने में गुजारना और लंबी दूरी तय करने के कारण हाथ-पैर में दर्द की शिकायत करना। यही नहीं, इस बात की चिन्ता आधी रात तक करना कि 'मेरे बाद इस घर का क्या होगा।' और घर की यह व्यथा कि इन बुजुर्गों के पश्चात 'मेरा' (घर) अस्तित्व बचेगा भी या नहीं यानि कि मेरा क्या होगा।

कवि मंगलेश डबराल की यह चिन्ता देश के गाँवों में बसे सभी घरों की है जिनकी देखभाल करने वाला वहाँ कोई नहीं है।

विशेष :

१) भाषा सरल-सहज-सारगर्भित है।
२) 'घर' कविता में गरीबी, भुखमरी, नौकरी हेतु पलायन, गाँवों में बसे पुश्तैनी घरों से जुड़ी अनेक समस्याएँ व्यक्त हुई हैं।

६.१.६ सारांश

'घर' कविता हमें हमारे गाँव की याद दिलाती है वहाँ के पुस्तेनी मकान की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इस इकाई में हमने 'घर' कविता का संपूर्ण अध्ययन किया है जिसके माध्यम से विद्यार्थी कविता के भावार्थ, कवि परिचय, और व्याख्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

६.१.७ व्याख्यात्मक प्रश्न

संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।

i. "यह जो हाथ बाँधे .... पूरा घर काँपता है।"
ii. "इसमें काठ का एक संदूक .... बक्स तभी उठेगा।"
iii. "कई बच्चे बड़े हुए .... अब भी बजती हैं घर में।"

६.१.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१) 'घर' कविता की मूल संवेदना लिखिए।
२) 'घर' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
३) 'घर' कविता में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।
४) 'घर' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है? सोदाहरण लिखिए।
५) 'घर' कविता का उद्देश्य लिखिए।

६.१.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) 'घर' कविता के रचनाकार कौन है? - मंगलेश डबराल
२) घर की दीवारें किसकी बनी हैं? - कांठ की (लकड़ी की)
३) घर को किसने कैसे बनवाया था? - दादाजी ने मेहनत की कमाई से
४) घर में काठ का बना कौन-सा सामान है? - संदूक
५) घर के लोग क्यों तितर बितर हो गए? - खाने - कमाने या नौकरी की तलाश में
६) घर के बच्चे कैसे बड़े हुए? - गिरते - पड़ते
७) घर में दिन भर लकड़ी कौन ढोता है? - माँ
८) पिताजी घर से रोज कहाँ और क्यों जाते है? - डाकखाने - चिट्ठियाँ
९) घर लौट कर पिताजी क्या शिकायत करते हैं? हाथ पैर दर्द की
१०) घर लौटकर पिताजी रात में किस बात की चिंता करते है? - मेरे बाद घर क्या होगा?

❖❖❖❖

७

परशुराम की प्रतीक्षा

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

ईकाई की रूपरेखा :

७.१ इकाई का उद्देश्य
७.२ प्रस्तावना
७.३ कवि परिचय
७.४ परशूराम की प्रतिक्षा खंड - १ भावार्थ / कथानक
७.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.६ सारांश
७.७ बोध प्रश्न
७.८ लघुत्तरीय प्रश्न

७.१ इकाई का उद्देश्य

पाठ्यक्रम के इस खंड की पंचम इकाई में कुल छह कविताओं का समावेश है। ये सभी कविताएँ रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्यसंग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' से ली गई है। संग्रह में संकलित १८ कविताओं में से 'परशुराम की प्रतीक्षा' (खंड-१), 'हिम्मत की रौशनी', 'लोहे के मर्द', 'जनता जगी हुई है', 'आज कसौटी पर गाँधी की आग है', 'समर शेष है' को पाठ्यक्रम के लिए चयनित किया गया है। इस इकाई के अंतर्गत कवि परिचय, कथानक रूप में कविता का समग्र भावार्थ, उदाहरणार्थ एक पद्यखंड की ससंदर्भ व्याख्या तथा उसके काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डाला गया है।

इन कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों के अंतर्मन में देशप्रेम की भावना का बीजारोपण करने तथा उसे पुष्पित, पल्लवित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ स्वाभिमान, सम्मान एवं समर्पण के भाव को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इकाई में संकलित कविताएँ देशप्रेम एवं आत्मोत्थान की वो जीवंत दस्तावेज हैं, जो विद्यार्थियों के मानसिक उत्थान में पथ प्रदर्शक तथा संघर्षमय परिस्थितियों में प्रेरणादायी साबित होंगी।

७.२ प्रस्तावना

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की सुप्रसिद्ध रचनाओं में से एक 'परशुराम की प्रतीक्षा' न केवल उनके रचना संसार में अपितु समग्र हिन्दी साहित्य जगत में एक प्रतिष्ठित रचना है। इस संग्रह में कुल १८ कविताएँ संग्रहीत हैं। संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन १९६३ में हुआ था। इसकी १७ रचनाओं के अंत में उसके रचना वर्ष का भी उल्लेख किया गया है। संग्रह की १० कविताएँ भारत - चीन युद्ध के दौरान लिखी गई हैं। इन कविताओं में जवानों के जोश बलिदान और शहादत का उल्लेख करते हुए राजनीतिक व्यवस्था एवं असफल विदेश नीति का चित्रण करते हुए राजनीतिक व्यवस्था पर करारा हमला किया गया है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह वीर रस से ओत-प्रोत एक भावात्मक रचना निधि है, जो लोगों में आंदोलित करने के साथ-साथ भाव विह्यल भी कर देती है।

७.३ कवि परिचय

हिन्दी कविता को नया आयाम देने वाले राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का हिन्दी साहित्य जगत में अतिविशिष्ट स्थान है। उनकी कविताओं में गुंजित राष्ट्रवाद एवं सर्वजन कल्याण का भाव हर एक पाठक को उत्साह से भर देता है। इनकी रचनाओं में जो जीवंतता और उष्मा देखने को मिलती है, उसका दर्शन अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। ऐसे साहित्यशिरोमणि दिनकरजी का जन्म २४ सितंबर १९०८ को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से इन्होंने इतिहास एवं राजनिति विज्ञान में बी.ए. किया। दिनकर जी ने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बारदोली-विजय और प्रणभंग उनकी छात्र जीवन के दौरान की गई रचनाएं हैं। बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। महाभारत पर आधारित उनके खण्ड काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ काव्यों में ७७ वाँ स्थान दिया गया। १९४७ में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुजफ्फरपुर पहुँचे। १९५२ में जब भारत की प्रथम संसद का गठन हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए। दिनकर १२ वर्ष तक संसद-सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन १९६४ से १९६५ ई. तक भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें १९६५ से १९७१ ई. तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए। २४ अप्रैल १९७४ को इन्होंने इस लोक से प्रयाण किया।

प्रमुख रचनाएँ :

काव्य रचनाएँ : १) बारदोली -विजय संदेश (१९२८), २) प्रणभंग (१९२९), ३) रेणूका (१९३५), ४) हुंकार (१९३८), ५) रसवन्ती (१९३९), ६) द्वंद्वगीत (१९४०), ७) कुरूक्षेत्र (१९४६), ८) धूप-छाँह (१९४७), ९) सामधेनी (१९४७), १०) बापू (१९४७), ११) इतिहास के आँसू (१९५१), १२) धूप और धुआँ (१९५१), १३) मिर्च का मजा (१९५१), १४) रश्मिरथी (१९५२), १५) दिल्ली (१९५४), १६) नीम के पत्ते (१९५४), १७) नील कुसुम (१९५५), १८) सूरज का ब्याह (१९५५), १९) चक्रवाल (१९५६), २०) कवि-श्री (१९५७), २१) सीपी और शंख (१९५७), २२) नये सुभाषित (१९५७), २३) लोकप्रिय कवि दिनकर (१९६०), २४) उर्वशी (१९६१), २५) 'परशुराम की प्रतीक्षा' (१९६३), २६) आत्मा

की आँखें (१९६४), २७) कोयला और कवित्व (१९६४), २८) मृत्ति-तिलक (१९६४), २९) दिनकर की सूक्तियाँ (१९६४), ३०) हारे को हरिनाम (१९७०), ३१) संचियता (१९७३), ३२) दिनकर के गीत (१९७३), ३३) रश्मिलोक (१९७४), ३४) उर्वशी तथा अन्य श्रृंगारिक कविताएँ (१९७४)।

गद्य रचनाएँ : ३५) मिट्टी को ओर (१९४६), ३६) चितौड़ का साका (१९४८), ३७) अर्धनारीश्वर (१९५२), ३८) रेती के फूल (१९५४), ३९) हमारी सांस्कृतिक एकता (१९५५), ४०) भारत की सांस्कृतिक कहानी (१९५५), ४१) संस्कृति के चार अध्याय (१९५६), ४२) उसजली आग (१९५६), ४३) देश-विदेश (१९५७), ४४) राष्ट्र-भाषा और राष्ट्रीय एकता (१९५५), ४५) काव्य की भूमिका (१९५८), ४६) पन्त-प्रसाद और मैथिलीशरण (१९५८), ४७) वेणुवन (१९५८), ४८) धर्म, नैतिकता और विज्ञान (१९६९), ४९) वट-पीपल (१९६१), ५०) लोकदेव नेहरू (१९६५), ५१) शुद्ध कविता की खोज (१९६६), ५२) साहित्य-मुखी (१९६८), ५३) राष्ट्रभाषा आंदोलन और गाँधीजी (१९६८), ५४) हे राम! (१९६८), ५५) संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (१९७०), ५६) भारतीय एकता (१९७१), ५७) मेरी यात्राएँ (१९७१), ५८) दिनकर की डायरी (१९७३), ५९) चेतना की शिला (१९७३), ६०) विवाह की मुसीबतें (१९७३), ६१) आधुनिक बोध (१९७३)।

सम्मान : दिनकरजी को कुरूक्षेत्र के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तरप्रदेश सरकार और भारत सरकार से सम्मान मिला। संस्कृति के चार अध्याय के लिये उन्हें १९५९ में साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। सन १९५९ में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। भागलपुर विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति और बिहार के राज्यपाल जाकिर हुसैन, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, ने उन्हें डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। गुरू महाविद्यालय ने उन्हें विद्या वाचस्पति के लिए चुना। १९६८ में राजस्थान विद्यापीठ ने उन्हें साहित्य-चूड़ामणि से सम्मानित किया। वर्ष १९७२ में काव्य रचना उर्वशी के लिए उन्हें ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया। १९५२ में वे राज्यसभा के लिए चुने गये और लगातार तीन बार राज्यसभा के सदस्य रहे। वहीं उनके मरणोपरान्त भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

७.४ परशुराम की प्रतीक्षा (खंड -१) - भावार्थ / कथानक :

'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता इस काव्य संग्रह की शीर्षक कविता है। पांच खण्डों में बँटी इस कविता में भारत - चीन युद्ध की परिणति से आहत भारतीय जनमानस की आक्रोषित भावनाओं को शब्द रूप में प्रस्तुत किया गया है। कविता में पौराणिक पात्र परशुराम के व्यक्तिमत्व तथा उनकी कथा को सापेक्षरूप में रखते हुए इंडो-चाइना युद्ध में हुई हार से अपमानित भारतीयों की भावनाओं को आकार दिया गया है। साथ ही साथ अन्य कथानकों तथा उदाहरणों के माध्यम से दिनकर जी ने तत्कालीन परिस्थितियों को पूरी तरह से जीवंत कर दिया है।

'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अपने शीर्षक के अनुरूप ही विष्णु अवतार भगवान परशुराम को, उनके गुण-धर्म एवं प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है। लेकिन साथ

ही साथ कविता को पूर्णाकार देने एवं सर्वसुलभता की दृष्टि से कई अन्य कथानकों का भी उल्लेख मिलता है। परन्तु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार कविता के केवल खण्ड-१ का अध्ययन करना है।

कविता के प्रथम खण्ड में कवि ने भारत-चीन युद्ध में हारे हुए सैनिकों को केंद्र में रखते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि आज हार का बदनुमा दाग जो उनके दामन पर लगा है, जिस धोने के लिए वे अपना रक्त बहा रहे हैं। उसके जिम्मेदार वे नहीं, बल्कि सत्ता के शीर्ष पर बैठे राजनेता हैं, जो हर विषय को अहिंसावादी चश्मे से देखते हैं और उसी के अनुसार उन समस्याओं का हल निकालने का असफल प्रयास करते हैं। उन सत्तासीनों के इन असफल और नासमझी पूर्ण निर्णयों का ही परिणाम है कि हमें युद्ध के मैदान में हार का मुँह देखना पड़ता है और हजारों-हजारों सैनिकों को युद्ध की बलिबेदी पर अपना शीश चढ़ाना पड़ता है। इनके पापों को अपने कंधे पर ढोना पड़ता है, उसके दाग को अपने खून से धोना पड़ता है।

ये वे लोग हैं जिनमें न तो तरूणाई का जोश है और न ही जवानी का बलिदानी उत्साह। ये तो वे लोग हैं, जिनकी थोड़ी सी तारीफ कर दी जाए तो ये उसी से आत्ममुग्ध हो यथार्थ एवं कड़वी सच्चाई को भूप अपने स्वप्नलोक में विचरण करने लगते हैं। वो भी एक ऐसा स्वप्नलोक जहाँ वीरता एवं शौर्य का नामोनिशां तक नही होता है। ये वो लोग हैं, जो गीता में त्रिपिटिक निकाय के अहिंसावादी दर्शन को ढूंढ़ते हैं। यह सर्वविदित है कि गीता का उपदेश भगवान श्रीकृष्ण की वाणी से निकला वो परम ज्ञान है, जो इस बात का पुरजोर समर्थन करता है कि जब बात धर्मयुद्ध की, अपने राष्ट्र की, अपने और अपने लोगों के मान-सम्मान की हो तो वहां सिर्फ एक ही धर्म है और वह है अपने बाहुबल-बुद्धिबल से उस युद्ध को जीतना और सत्य की स्थापना करना। चाहे इस युद्ध में अपने स्वजनों के खिलाफ ही हथियार क्यों न उठाना पड़े; स्वजनों का ही वध क्यों न करना पड़े। वही बौद्ध धर्म का महान ग्रंथ त्रिपिटिक निकाय हर हाल में अहिंसावाद का समर्थन करता है, जो कि तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरुप नहीं है। फिर भी हमारे देश का शीर्ष नेतृत्व ऐसा है, जो हर हाल में अहिंसावादी दृष्टिकोण अपनाए हुए है, इसके लिए चाहे कितने भी सैनिकों को शहीद होना पड़े, अपने मान-सम्मान से समझौता करना पड़े। क्योंकि इनकी विचार धारा तलवार को गलाकर तकली गढ़ने की है। ये वीरों को भी कायर बनाने वाले प्रयासों में संलिप्त रहते है। ये लोग तो शेरों को भी बकरी (अजा) का धर्म सिखाने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ये भूल गए हैं कि कभी हमारा देश विश्वगुरू था और विश्वगुरू का दर्जा दिलाने के लिए कितने संत - महात्माओं ने आत्मबलिदान दिया है, आत्मोत्सर्ग किया है।

कविता के प्रथम खण्ड के अंत में कवि सैनिकों के माध्यम से यह कहते हैं कि हम अपने पूर्वजों के बलिदानों को यूँ ही व्यर्थ नहीं जाने देंगे, जिसे आज मृतप्राय बना दिया गया है। हम उन बलिदानियों के गौरव को वापस लाकर ही दम लेंगे, इसके लिए हमें चाहे अपना रक्त कितना भी क्यूँ न बहाना पड़े। परन्तु उन बलिदानियों के, महापुरुषों के दामन पर लगे दागों को धोकर ही दम लेंगे।

७.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

गीता में जो त्रिपिटिक .... अजा का।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में तत्कालीन सरकार की अहिंसावादी नीति पर करारा प्रहार किया गया है।

व्याख्या : दिनकर जी भारत-चीन युद्ध में मिली हार से हताश - निराश सैनिकों को संबोधित करते हुए कहते हैं, हे वीरों यह समय हताश-निराश होने का समय नही ं है। क्योंकि यह हार तुम्हारी नहीं बल्कि सत्ता के शीर्ष पर बैठे सत्तासीनों की अहिंसावादी नीतियों की है। वे कहते हैं - वे लोग हैं, जो धर्म एवं राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित कर स्वजनों के खिलाफ भी अस्त्र-शस्त्र उठाने का संदेश देने वाली गीता में भी अहिंसावाद की प्रबल पक्षधर त्रिपिटिक निकाय के गुण ढूंढ़ते हैं। ये वही लोग हैं जो तलवार गलाकर तकली (रूई से धागा बनाने में प्रयोग होने वाला एक यंत्र) गढ़ने की बात करते हैं। अर्थात ये लोग हर हाल में केवल अहिंसा की बात करते हैं। जब भी जगी हुई जनता आक्रोषित होती है, क्रुद्ध होती है। तब यही लोग अन्यान्य प्रकारों से उसके आक्रोश को ठंडा कर देते हैं, दबा देते हैं। ये लोग शेरों को भी बकरी का धर्म सिखाने का प्रयास करते हैं। अर्थात जो प्राकृतिक रूप से हिंसक है, उसे भी अहिंसक बनाने का प्रयास करते हैं, दावा करते हैं।

काव्यगत सौंदर्य :

१. प्रस्तुत पद्यखण्ड में अन्योक्ति एवं रूपकातिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।
२. गीता और त्रिपिटिक निकाय का उल्लेख धर्मार्थ हिंसा एवं अहिंसा के प्रतीक रूप में किया गया है।
३. गीता का अनुवाद महात्मा गांधी ने भी किया है, लेकिन उसकी अहिंसावादी व्याख्या की है।
४. तलवार और तकली का उल्लेख रक्षार्थ हिंसा एवं अहिंसा के प्रतीक रूप में किया गया है।

७.६ सारांश

उक्त इकाई में विद्यार्थीयों ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' नामक कविता का अध्ययन किया है, इस इकाई के संपूर्ण अध्ययन से विद्यार्थी कविता का भावार्थ, कवि दिनकर जी का जीवन परिचय और व्याख्यात्मक खंड को समझ सकेंगे इससे संबंधित सभी प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।

७.७ बोध प्रश्न :

१. 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता के प्रथम खण्ड का कथानक लिखिए।
२. 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता के प्रथम खण्ड के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

७.८ अतिलघुत्तरीय प्रश्न :

१. सस्ती सुकीर्ति पाकर कौन फूल गया है ?
२. अपने रक्त से कलंक कौन धो रहा है ?
३. कविता में किन दो ग्रंथों का उल्लेख किया गया है ?
४. अमृत लाने के लिए कौन लोग गए थे ?

❖❖❖❖

७.१

हिम्मत की रोशनी

इकाई की रूपरेखा :

७.१.१ इकाई का उद्देश्य
७.१.२ प्रस्तावना
७.१.३ कविता का भावार्थ / कथानक
७.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.१.५ सारांश
७.१.६ बोध प्रश्न
७.१.७ लघुत्तरीय प्रश्न

७.१.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में 'हिम्मत की रोशनी' कविता का संपूर्ण अध्ययन किया जायेगा जिसके माध्यम से विद्यार्थी -

- कविता के भावार्थ को समझ सकेंगे।
- संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

७.१.२ प्रस्तावना

काव्य संग्रह की तीसरी कविता 'हिम्मत की रोशनी' सकारात्मकता के साथ लिखी गई एक ऊर्जावान रचना है। इस कविता में मुसीबतों को सामने खड़ी देखकर हिम्मत हार जाने वाले व्यक्तियों को हार न मानने और साहस बटोरकर विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी जूझते रहने की प्रेरणा दी गई है।

७.१.३ भावार्थ / कथानक :

'परशुराम की प्रतीक्षा' संग्रह में संकलित कविता 'हिम्मत की रोशनी' पूरी तरह से एक आशावादी कविता है। यह एक ऐसी कविता है, जो नाउम्मीदी में उम्मीद की नई किरण दिखाती है। यह कविता आँधियों में दीप जलाने की, बवंडरों के बीच नाव को किनारे पहुँचाने की ऊर्जा एवं उष्मा पैदा करने का दम रखती है।

हताश, निराश युवाओं को संबोधित करते हुए दिनकरजी कहते हैं, हे साथी, तू सामने कठिनाइयाँ और अपने प्रयत्न में असफलता देखकर अपने आप को दुर्बल मत समझ। तेरे अन्दर जो अदम्य साहस रूपी धधकता तेज छिपा है, उसे तो देख। अपने उस छिपे तेज को या साहस को याद कर जिसे तू भुलाये बैठा है। उसे स्मरण कर लेगा तो फिर हार नहीं मानेगा। तू अपने सामने छायी इस काले घने अंधेरे को ही देख रहा है, जो कि सच नहीं है। यह तो तुम्हारे प्रयत्न में सफलता न मिलने के कारण उत्पन्न निराशा का परिणाम है। तू तो केवल आशा की किरण को ढके हुए आवरण को ही देख रहा है। लेकिन हे मेरे साथी तू इस ऊपरी निराशा को बहा या दूर कर सकने वाली अपने अन्दर छिपी कभी न बुझने वाली प्रकाश की धारा को भी तो देख।

हे साथी! तेरी बुनियाद चन्द्रमा व सूर्य के प्रकाश पर पड़ी थी। अर्थात तेरा जन्म चन्द्रमा व सूर्य का प्रकाश लेकर हुआ था। चन्द्र और सूर्य इस सृष्टि के आधार हैं और जब तक सृष्टि कायम रहेगी, वे भी बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त तेरी नींव तप, रक्तदान, आग-तेज, जोश तथा तलवार और भाले या शस्त्रास्त्रों पर पड़ी थी। तेरा जन्म तपस्या-बड़े कष्ट सहने व साधना करने, किसी महान् उद्देश्य हेतु अपना खून बहाने, जोश भरा जीवन व्यतीत करने व शस्त्रास्त्रों से खेलने के लिए हुआ है, आराम की जिन्दगी बिताने के लिये नहीं। इसलिये तू अपने प्रयत्नों में होने वाली असफलता के कारण उत्पन्न निराशा से घबरा जायेगा, यह तो संभव ही नहीं है। क्योंकि तेरे अन्दर तो कभी समाप्त न होने वाले प्रकाश और तेज का भण्डार भरा पड़ा है।

इस बात को तुम बखूबी समझो कि तुझे विचलित करने के लिए अनेक आंधी तूफान आये अर्थात् संकट आये पर वे हार गये। जब तूफान आता है और सिर पर से निकल जाता है तो बड़ा शोर करता है। यह तूफान या उपद्रव भी तुझसे परास्त होकर फिर जाता है अर्थात् लौट रहा है। तुझे मार्ग से डराने के लिए अब नया भूकंप आ रहा है, जैसे राह चलते समय भूचाल आने से आगे बढ़ना बन्द हो जाता है। इसी प्रकार तेरे सामने भी नई उथल-पुथल हो रही है। उसे देखकर विचलित न होना। हे पथिक, तेरे समक्ष नया मैदान है, नई चुनौतियाँ है, संघर्ष का नया क्षेत्र है। इसलिये सारी निराशा व घबराहट छोड़कर नयी ताकत लेकर गरज। तेरे भीतर जो अंतिम हुंकार या दर्पभरी पुकार है, उसे उठा, अर्थात नये उत्साह से संघर्ष के लिए खड़ा हो। जिस प्रकार बीन के तार हिलने पर उस पर अभिलाषित रागिनी के स्वर झंकृत होते है, बीन का स्वर मधुर होता है। इसलिये उससे दीनता, नम्रता जैसे कोमल भावों की ही अभिव्यक्ति होती है। इसी प्रकार विनय भरी बातों से वक्ता की दीनता, पौरुषहीनता, कातरता ही प्रकट होती है, उसमें रुदन बजता है। इसलिये हे मेरे साथी, विनय और शांति के कोमल व मधुर भावों वाले गीत बहुत गाये जा चुके, उनसे तेरा लक्ष्य पूरा न होगा। अब तू अंतिम स्वर अर्थात दीपक राग को गा।

तेरे समक्ष ऐसा भी समय आएगा जब अपने पंजों को घातक बना गरजते हुए शेर तथा दांतो को धार लगाए भेड़िये प्रहार करने के लिए आएंगे। परन्तु इसकी कोई चिन्ता नहीं। उनके आने पर तू घबराना नहीं। तू सीना तान कर उनका सामना करने के लिए संभल कर खड़ा हो जा। क्योंकि तेरी हड्डियों मे तलवार जैसी आग है। अर्थात तुम्हारे विरोध में कोई साहसी वीर पुरुष या कितने भी धोखेबाज खड़े हों जाएं, लेकिन तुम अपने आत्मबल और पुरुषार्थ के बलबुते उनपर विजयश्री प्राप्त करने में निश्चित सफल रहोगे। आज तू पहाड़ की चोटी पर खड़ा है, पर तेरा मार्ग सीधा है, न दायीं तरफ मुड़ना है और न ही बायीं तरफ। क्योंकि इधर-उधर मुड़ने से नीचे गिरने का या रास्ते से भटकने का भय है। उधर सामने यह खाई या घाटी है जो कि मौत के समान भयंकर है। अर्थात् उसमें गिर जाने पर मृत्यू का ही भय है। यदि उस खाई को देखकर तू

घबरा कर कदम पीछे रखेगा तो समझ लो अभी तुम्हारा ईमान या धर्म नष्ट हो गया। अर्थात तु कर्तव्य से च्युत हो जायेगा। इसलिये हे साथी उछलकर छलांग लगा दें और कूद जा तो यह खाई या घाटी पार हो जायेगी। क्योंकि तुझे पर्वत शिखरों पर ही अपना झण्डा फहरा कर नहीं रूक जाना है। बल्कि तुझे तो चन्द्रमा, सूर्य, एवं नक्षत्रो को भी जीतना है। हे मेरे साथी! तू इस पृथ्वी के भार को अपनी भुजाओं के सहारे आसानी से उसी प्रकार उठाता चल जैसे कोई फूलों के भार को सरलता से उठाया करता है। तुम अपने पौरुष से आकाश को आकाश में स्थित ग्रहों को भी भयभीत करते रहो, जिसके कारण देवराज इन्द्र का आसन भी हिलता-डुलता रहे।

७.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

गरजते शेर .... है साथी।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'हिम्मत की रौशनी' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में कवि कहता है भले ही तेरे समक्ष अनेक विरोधी विविध शस्त्र लिये आयें पर घबराने की आवश्यकता नहीं, डरने की जरूरत नहीं है। तुम अपने अदम्य साहस के साथ उनका सामना करो।

व्याख्या : दिनकर जी देश के वीरों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे मेरे देश के वीर जवानों यदि तुम्हारे समक्ष आक्रमण करने के लिये गरजते हुए शेर भी आयें या फिर भेड़िये आयें। वे सभी अपने शस्त्रास्त्र खूब तीखे करके, पैने करके ही क्यों न तुझ पर प्रहार करने आयें। परन्तु इसकी कोई चिन्ता न करो। उनके आने से तुम किंचित मात्र भी घबराओ मत। अपितु तुम सीना तान कर उनका सामना करने के लिये अड़ कर खड़े हो जाओं। क्योंकि तुम्हारी हड्डियों मे तलवार के जैसी प्रबल आग छिपी हुई है। यह एक ऐसी आग है, जिससे टकराकर बड़े से बड़ा, खतरनाक से खतरनाक हथियार भी विफल हो जाएगा। अर्थात यदि तुम्हारे विरोध में कितने भी साहसी वीर अथवा धोखेबाज लोग खड़े हो जाएं तब भी तुम घबराना नहीं। तुम्हारे शरीर में अद्‌भुत बिजली की स्फूर्ति और साहस विद्यमान है, जो कि तलवार से कम नहीं है।

काव्यगत सौंदर्य :

१. यहाँ उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

७.१.५ सारांश

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ को समझ पाये, व्याख्या खंड का अध्ययन किया और कविता में उठाये गये सभी मुद्दों से परिचित हुए।

७.१.६ बोध प्रश्न

१. 'हिम्मत की रौशनी' कविता में प्रस्तुत सकारात्मकता एवं आशावादी संदेश पर प्रकाश डालिए।
२. 'हिम्मत की रौशनी' कविता का कथानक लिखिए।

७.१.७ अतिलघुत्तरीय प्रश्न

१. रौशनी की धार किसमें दबी है ?
२. बवण्डर किस प्रकार से लौटता है ?
३. आखिरी सुर में कवि कौन-सा राग बजाने के लिए कहता है ?
४. कवि वीर को अंततः किस पर विजय प्राप्त करने के लिए कहता है ?

❖❖❖❖

७.२

लोहे का मर्द

इकाई की रूपरेखा :

७.२.१ इकाई का उद्देश्य
७.२.२ इकाई का प्रस्तावना
७.२.३ कविता का भावार्थ / कथानक
७.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.२.५ सारांश
७.२.६ बोध प्रश्न
७.२.७ लघुत्तरीय प्रश्न

७.२.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी -

- लोहे का मर्द कविता के कथानक को जान सकेंगे।
- कविता के भावार्थ को समझ सकेंगे।
- व्याख्यात्मक, दीर्घोत्तरी व लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे।

७.२.२ प्रस्तावना

'लोहे का मर्द' कविता भारत-चीन युद्ध में हुई भारत की हार के बाद सैनिकों की मन:स्थिति को केन्द्र में रखकर की गई रचना है। इस कविता में जवानों के माध्यम से कवि ने बताया है कि भारत की हार का मुख्य कारण पर्याप्त हथियारों की आपूर्ति न हो पाना था। ऐसी परिस्थितियों में भी जवान जिस उत्साह एवं जोश के साथ सीमा पर तैनात हैं और अपने लिए हथियारों की मांग कर रहें हैं, इन्ही बातों को ध्यान में रखकर दिनकर जी ने इस कविता को 'लोहे का मर्द' नाम दिया है।

७.२.३ भावार्थ / कथानक

'लोहे के मर्द' कविता में दिनकर जी ने नेफा युद्ध में हार की पीड़ा को अपने ह्रदय में समेटे वापस लौटे सैनिकों के अंतर्मन के आर्तनाद को प्रस्तुत किया है। क्योंकि सैनिकों को इस

बात का दु:ख है कि उन्हें पर्याप्त अस्त्र-शस्त्र एवं संसाधन उपलब्ध नहीं कराया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे सभी न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी घायल होकर लौटे हैं। उन्हें अपने शरीर पर लगे चोटों से ज्यादा अंतर्मन पर लगी हार की चोट ज्यादा तकलीफ दे रही है। ऐसे में जब लोग उनके स्वागत के लिए पुष्प-तिलक-अक्षत लेकर आते हैं, तो उनके आहत ह्रदय की पीड़ा छलक उठती है।

दिनकर जी लिखते हैं देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले भारत के सैनिक युद्ध-क्षेत्र से घायल होकर आये हैं। वे डरकर रणभूमि छोड़कर नहीं आये। वे स्वागत करने वाले लोगों से कह रहे हैं - तुम लोग ये फूल, आरती के लिये दीपक और तिलक के लिये चन्दन तथा अक्षत क्यों लाये हो ? हमें इस बात की अभिलाषा नहीं है कि शत्रुओं के साथ युद्ध करने के कारण देश में हमारा नाम हो, न तो इन फूलों के हार पहनने की इच्छा रखते हैं और न ही हम चाहते हैं कि हमारी जय-जय हो। क्योंकि शत्रु के आक्रमण के कारण हमारे देश भारत की प्रतिष्ठा क्षत-विक्षत होकर छटपटा रही है। देश की प्रतिष्ठा को इस आक्रमण से हानि हुई है। यह देश हिन्दुस्तान उत्तर पूर्वी सीमा पर विदेशी हमला हो जाने के कारण इस समय विपत्ति में पड़ा हुआ। आप लोग हमपर पुष्प चढ़ाकर, हमें तिलक कर दु:ख मत दो। यदि कुछ देना ही चाहते हैं और दे सकते हैं तो लड़ने के लिये बन्दूकें दो, जिनकी इस समय अत्यंत आवश्यकता है। सैनिकों का मनोभाव है कि हम युद्ध क्षेत्र में शत्रु को परास्त नहीं कर पाये, इसके कारण हम पहले ही दुखी हैं। आप लोग हमारा तिलक कर रहे हैं, तो ऐसा लगता है जैसे आप लोग हमारा उपहास कर रहे हैं। अतः आप सभी से हमारा बस यही अनुरोध है कि फिलहाल यह सब रहने दीजिए। यदि देना ही चाहते हैं, तो हमें पर्याप्त अस्त्र-शस्त्र दीजिए। क्यूंकि हमें अभी फिर युद्ध के मैदान में जाना है और हम हथियारों की कमी के चलते हारना नहीं चाहते हैं।

७.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

हमें कामना .... जय जयकार की।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'लोहे के मर्द' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में कवि ने सैनिक के मनोभावों को व्यक्त किया है। जब लोग उसके स्वागत के लिए फूलों का हार लेकर आए हैं।

व्याख्या : कवि लिखते हैं कि युद्ध में घायल होकर लौटा सैनिक जब देखता है कि लोग उसके स्वागत, अभिनंदन के लिए फूल-चंदन-अक्षत लेकर आए है, तो उसे काफी निराशा होती है। वह कहता है, हे देशवासियों! हमें इस बात की अभिलाषा नहीं है कि शत्रुओं के साथ युद्ध करने के कारण देश में हमारे नाम का प्रचार-प्रसार किया जाए और न ही हम इन फूलों के हारों के पहनने की इच्छा रखते हैं। हम जवान यह भी नहीं चाहते कि लोग हमारी जय-जयकर करें।

७.२.५ सारांश

कवि दिनकर ने इस कविता में भारतीय सैनिकों के बल और हौसले की पहचान हमें करादी है। और उनके हौसलों को आगे बढ़ने के लिए जो अस्त्र-शस्त्र चाहिए जिसकी वो माँग कर रहे है उनके मनो-भाव का स्पष्ट चित्रण यह कविता कर रही है जिसका स्पष्ट भावार्थ सहित विद्यार्थीयों ने अध्ययन किया है और कविता के सभी मुद्दों को समझ पाये है।

७.२.६ बोध प्रश्न :

१. युद्ध से लौटे सैनिकों के मनोभाव पर प्रकाश डालिए।
२. युद्ध से लौटे सैनिक अपना स्वागत-सम्मान कराना क्यों नहीं चाहते ? सविस्तार लिखिए।

७.२.७ अतिलघुत्तरीय प्रश्न :

१. सीमा से कौन लौट कर आया है ?
२. लोग युद्ध से लौटे जवान का स्वागत किस प्रकार करना चाहते हैं ?
३. युद्ध से लौटा जवान अपने स्वागत-सम्मान से क्यों मना करता है ?
४. स्वागत, सम्मान और जयकारों के बदले में सैनिक लोगों से क्या मांगता है ?

❖❖❖❖

८

जनता जगी हुई है

इकाई की रुपरेखा :

८.१ इकाई का उद्देश्य
८.२ प्रस्तावना
८.३ कविता का भावार्थ / कथानक
८.४ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
८.५ सारांश
८.६ बोध प्रश्न
८.७ लघुत्तरीय प्रश्न

८.१ इकाई का उद्देश्य

जनता जगी हुई है कविता का सम्पूर्ण अध्ययन करना इस इकाई का उद्देश्य है, कविता के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी कविता के भावार्थ और व्याख्या से संबंधित मुद्दों से परिचित हो सकेंगे।

८.२ प्रस्तावना

संग्रह में संकलित रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की यह कविता नेफा युद्ध के प्रसंग में लिखी गई है। दिनकर जी नेफा युद्ध में हुई भारत की हार से बहुत आहत थे। इस कविता के माध्यम से उन्होंने गौरवशाली भारत का चित्र प्रस्तुत करते हुए देशवासियों से सम्पूर्ण समर्पण एवं अपने शौर्य के प्रदर्शन का आव्हान किया है।

८.३ भावार्थ / कथानक

दिनकर जी ने 'जनता जगी हुई है' कविता में तत्कालीन भारतीय-चीन युद्ध की स्थिति उसके भविष्य एवं आम जनता के मनोभावों को उकेरने का प्रयास किया है। इसमें उन्होंने आम जनता को रणचंडी के रूप में प्रस्तुत किया है। चीन द्वारा भारत की सीमा पर किये गए आक्रमण से जनता बेखबर नहीं है। क्रोध में भरी सिंहनी अर्थात् रणचण्डी कुपित है और खुलकर खेलना चाहती है तथापि यह जानकर कि जनता सोई नहीं है, उसे क्या करना चाहिये, इस सम्बन्ध में सावधान है, वह समझती है - जनता सावधान है तो अन्याय का प्रतीकार करने व प्रतिशोध लेने के लिये वह इस संग्राम में सम्मिलित होगी। इसलिये वह रूकी हुई और प्रतीक्षा कर रही है।

क्योंकि कुछ शांतिपूर्ण प्रयत्न पर विश्वास करने वाले लोग उस जनता को भुलावे में रखे हैं। रणचण्डी विचार कर रही है कि वे नेता, वे वीर योद्धा कहाँ चले गये, कहां छिप गये जो कि पानी में आग लगाया करते थे। आज धरती पर हर कोई काल्पनिक स्वप्नों के शिविरों में अर्थात् आदर्श के चक्कर में पड़ा है? रणचण्डी इसी चिन्ता में पड़ी खेलने से रूकी हुई है। कवि कहता है, हे चण्डिके! तू इस प्रकार की सारी चिन्ता छोड़कर अपना खेल खेलले। किसी की प्रतीक्षा न कर। क्योंकि जो इन शांति-प्रस्तावों के भ्रम में पड़े हैं, वे भी तेरे ही पक्ष में हो जायेंगे। जब उनका भ्रम दूर हो जायेगा और समझ लेंगे कि ये शांति के प्रयत्न और समझौते के प्रस्ताव केवल मायाजाल हैं? इनसे कुछ भी परिणाम नहीं निकालेगा, तब वे भी युद्ध के पक्ष में हो जायेंगे। क्योंकि भ्रम में पड़े उन भाग्यहीनों को तेरे अलावा कहीं और सहारा नहीं मिलेगा। चीन ने भारत की सीमा पर आक्रमण किया है। वहाँ युद्ध चल रहा है पर भारत की जनता पूर्णरुप से उसमें भाग नहीं ले रही है। क्योंकि कुछ नेता इस भ्रम में है कि चीन के साथ समझौता करके शांतिपूर्वक यह सीमा-विवाद सुलझा लिया जाये। युद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोग चीन की मनोवृत्ति जानते हुए इस यथार्थ को समझते है कि इन समझौतों से कुछ सिद्ध होने वाला नहीं है। चीन बलात् अधिकृत भू-भाग को कभी समझौतों से छोड़ने को तैयार नहीं होगा। वे तो युद्ध के पक्षधर हैं। दूसरे आदर्शवादी जो कि अन्तर्राष्ट्रीय दबाब डालकर इस प्रश्न को सुलझाना चाहते हैं, युद्ध पसन्द नहीं करते। वे भी एक दिन भ्रम दूर होने पर युद्ध के पक्ष को ही स्वीकार करेंगे।

दिनकर जी लिखते हैं - आज भारत की जनता सावधान है। राजा भरत की इस भूमि में पवित्र अग्नि ने प्रवेश किया है। लोगों के मन में कोई पवित्र ज्वाला धधक उठी है, जिसमें देश का कल्याण होने वाला है। आज यह पूरा देश अर्थात एक दीपक की शिखा की भांति सुलग उठा है। यहाँ की नदियों का पानी भी उस अग्नि से तपकर खौल रहा है। बादलों के बीच बिजली की लहर दौड़ रही है। पर्वत भी उस आग से एक बार फट जाने को बेचैन हो रहे हैं। उनकी छाती भी उस आग से जल रही है। जैसे ज्वालामुखी पर्वत के बीच आग जलती रहती है और एक दिन जब वह अग्नि की तीव्रता से फट उठता है और उसके अन्तर से निकले लावा (गर्म राख) और अंगारों से आस-पास की बस्ती भस्म हो जाती है। इसी प्रकार दूसरे पर्वतों के भीतर भी आग सुलग रही हैं तथा वे भी फट जाना चाहते हैं। तात्पर्य यह है कि देश के सभी स्त्री-पुरुषों के मन में असन्तोष की आग जल रही है। कवि लिखते हैं कि न जाने यह अपार समुद्र क्या खाकर शान्त होगा? अर्थात् जैसे समुद्र की लहरें छलांगे मारती हैं, झाग फैलने से उसके क्रोध की प्रतीति होती है। इसी प्रकार समाज भी क्षुब्ध होकर सिंहनाद कर रहा है, उसकी गुंज चारों ओर है।

जनता सचेत है, जानती है कि यहाँ क्या हो रहा है। अरे अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के शांतिमय भवन - इस भारत में आक्रमण करके लोगों के ह्रदय में प्रतिशोध की आग जगाने वाले अथवा शांति के पक्षपाती इस देश में युद्ध की आग भड़काने वाले। हिंद-चीनी भाई-भाई के नारे से विश्वास जगाकर दिखावे की मित्रता प्रदर्शित करने वाले, मन में कुछ और भाव रखकर दिखाने को सद्भाव प्रकट करने वाला होने से धोखेबाज-मुंह में राम बगल में छुरी की नीति बरतने वाला, कृतघ्न-अर्थात् उपकार को न मानने वाले, भारत के धर्माचार्यो ने कठिन यात्रा करके चीन जाकर वहाँ के निवासियों को सभ्यता, अहिंसा व शांति का उपदेश दिया था। सभी उपकारों को चीन ने भुला दिया। यह समझ ले कि हम भारतीय तो मन मारकर मन में आने वाले विकारों को संयत उपकारों को चीन ने भुला दिया। यह समझ ले कि हम भारतीय तो मन मारकर मन में आने वाले विकारों को संयत करके शील या शालीनता के कारण नम्र भाव से

जीवन बिताया करते हैं। हम किसी को व्यर्थ नहीं सताते। पर यदि कोई हमें सताया या छेड़ता है तो कुपित होकर आततायियों का खून भी पीया करते हैं। मुख में जिसके वेद हैं, ऋषि एवं तपस्वी होने से वेदों का पाठ करता है। जिसकी पीठ पर बाणों का झौबा है, हाथों में निर्दयी, तीखी धार वाला फरसा है, वह परशुधारी 'परशुराम' फिर से नया अवतार ले रहा है। तात्पर्य यह है कि घोर तपस्वी एवं धार्मिक और शान्त होने पर भी शत्रु दमन के लिए शस्त्र संभाल रहा है। इसलिए तू संभल जा।

जनता इस समय जाग रही है, सोई नहीं है। अतः वह कमर कसकर खड़ी हो। रणचण्डी काली खड्ग लेकर उन्मुक्त होकर नाचे, ऐसा भयंकर नृत्य करे अर्थात् ऐसा भयंकर युद्ध हो कि हिमालय के शिखर से प्रलय उतरे। अर्थात् उस शिखर से उतरने वाले सैनिकों का विनाश ही हो। उनके साथ भीषण युद्ध में व्यापक संहार हो। युद्ध की उग्रता से तलहीन पाताल भी फट जाए, पाताल के नीचे और गड्ढ़ा हो जाए और आकाश से अग्नि की फूलझड़ियों की भांति मौत बरसे। गोलों और बमों के प्रहार से नीचे पाताल तक गड्ढे हो जाए और आकाश का सर्वनाश हो। इस समय शस्त्रास्त्रों की न्यूनता, अकस्मात् आक्रमण होने के कारण देश के तैयार न होने से किस्मत या भाग्य हम पर जो रुष्ट है, हमारे प्रतिकूल है, उसको अपने कलेजे पर सह लें, अर्थात् साहस से उसकी चिन्ता न कर उपेक्षा कर दे। तूम इस समय मृत्यु का खेल खेलों, जान दांव पर लगा दो। यह मुक्ति अर्थात् स्वतंत्रता की सुरक्षा की पहली बाजी है। पहला दांव है। इसलिए शत्रु के वज्र प्रहार को अपने सिर पर उठा, निडर होकर झेल, इंद्र के शाप को आंखों पर ले अर्थात् आदर से अपना ले। राष्ट्र ने अध्यात्मवाद व निःशस्त्रता को अपनाकर अपनी स्वतंत्रता को जो खतरे में डाला है, अपनी सीमा पर शत्रु के आक्रमण का अवसर दिया है यह बड़ा भारी पाप है। यह अग्नि स्नान के बिना अर्थात् युद्ध में बमों और गोलों की आग में नहाये बिना नहीं धुलेगा, अर्थात दूर होगा।

८.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

जनता जगी .... कहां पायेंगे?

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'जनता जगी हुई है' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में कवि ने आम जनता के मनोभावों को प्रस्तुत किया है। आम जनता संभावित युद्ध को लेकर विचार मग्न है और अपने वीरों को, योद्धाओं को याद कर रही है।

व्याख्या : दिनकर जी इस कविता में तत्कालीन परिस्थितियों एवं आम जन के मनोभावों को एक साथ पिरोते हुए लिखते हैं कि चीन द्वारा भारत की सीमा पर आक्रमण किया गया है। जनता इससे बेखबर नहीं है। ऐसा समझा जाता है। इससे संभावना यह की जाती है कि वह सचेत होगी और इस आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिये कोई सशक्त कदम उठाएगी। आज आम जनता क्रोध में भरी सिंहनी के समान है। लेकिन यह रणचण्डी अपने आपको उन नेताओं का, योद्धाओं का इंतजार कर रही है, जो कि पानी में आग लगाया करते थे। जो ढोल बजा-बजा कर रात-दिन आम लोगों को जगाया करते थे, सचेत किया करते थे। पर इस समय कोई नहीं बोल रहा है। आज धरती पर - यथार्थ को आधार बनाकर चलने वाला कौन है? तथा काल्पनिक स्वप्नों

के शिविरों में अर्थात् आदर्श के चक्कर में कौन पड़ा है ? कौन व्यक्ति मुक्त या स्वतंत्र है अर्थात् किसी के प्रभाव में न रहकर स्वयं अपनी दृष्टि से किसी समस्या पर विचार करता है और कौन विभिन्न प्रस्तानों (आकाश में चमकने वाली बिजली) के घेरे में है। रणचण्डी इसी चिन्ता में पड़ी है। ऐसे में कवि कहता है, हे चण्डिके ! तू इस प्रकार की सारी चिन्ता छोड़कर अपना खेल खेल लिजिए। किसी की प्रतीक्षा न करें। क्योंकि जो इन शांति-प्रस्तावों के भ्रम में पड़े हैं। जब उनका भ्रम दूर हो जायेगा और समझ लेंगे कि ये शांति के प्रयत्न और समझौते के प्रस्ताव केवल माया जाल हैं ? इनसे कुछ भी परिणाम नहीं निकालेगा, तब वे भी युद्ध के ही पक्ष में हो जायेंगे। क्योंकि भ्रम में पड़े उन भाग्यहीनों को तेरे अलावा कहां सहारा मिल सकेगा ?

काव्यगत सौंदर्य :

१. प्रस्तुत पद्यखण्ड में वीर-रस का विशेष प्रभाव है।
२. पानी और आग का प्रयोग प्रतीक रूप में हुआ है।

८.५ सारांश

उक्त इकाई में विद्यार्थीयों ने 'जनता जगी हुई है' कविता का सम्पूर्ण अध्ययन किया है जिसके अंतर्गत, कविता का भावार्थ, संदर्भ सहित स्पष्टीकरण - बोध प्रश्न और लघुत्तरीय प्रश्नों का अध्ययन से विद्यार्थी पूर्ण रूप से परिचित हुए होंगे।

८.६ बोध प्रश्न

१. 'जनता जगी हुई है' कविता का सारांश लिखिए।
२. 'जनता जगी हुई है' कविता का माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

८.७ अतिलघुत्तरीय प्रश्न

१. कौन जगा हुआ है ?
२. रणचण्डी को किसका इंतजार है ?
३. कौन नया अवतार ले रहा है ?
४. हिमालय से कौन उतर रहा है ?
५. राष्ट्र का पाप कैसे धुलेगा ?

❖❖❖❖

८.१

आज कसौटी पर गाँधी की आग है

इकाई की रूपरेखा :

८.१.१ इकाई का उद्देश्य
८.१.२ प्रस्तावना
८.१.३ कविता का भावार्थ / कथानक
८.१.४ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
८.१.५ सारांश
८.१.६ बोध प्रश्न
८.१.७ लघुत्तरीय प्रश्न

८.१.१ इकाई का उद्देश्य

महाकवि दिनकर द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' कविता का अध्ययन करेंगे जिसके अंतर्गत कविता के भावार्थ, व्याख्यात्मक खंड का बोध व लघुत्तरीय प्रश्नों को विद्यार्थी जान सकेंगे।

८.१.२ प्रस्तावना

'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' कविता एक वैचारिक कविता है। इस कविता के माध्यम से दिनकर जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि चीन द्वारा किए गए इस हमले में गाँधीवादी विचार धारा एवं हमारी संस्कृति को भी खतरा है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से यह बताया है कि मुनियों के तप एवं यज्ञादि अपनी पूर्णता को तभी प्राप्त होते थे, जब उनकी सुरक्षा हेतु पहरे पर भगवान श्रीराम खड़े होते थे। अर्थात अपनी संस्कृति और अहिंसावादी छवि को बचाये रखने के लिए वर्तमान परिस्थितियों में हथियार उठाना और चीन को उसी की भाषा में जवाब देना बहुत जरुरी है।

८.१.३ भावार्थ / कथानक

'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' कविता में रामधारी सिंह दिनकर लिखते है कि भारत के प्रधानमंत्री वीर जवाहरलाल नेहरू ने संदेश दिया है कि इस युद्धकाल में भी पशु मत बनो। पशु अविवेकी और क्रूर होता है। वह अपने शिकार पर बेरहमी से वार करता है। पर मनुष्य क्योंकि बुद्धिमान होता है। इसलिए उसे युद्ध के अवसर पर भी विवेक से काम लेना चाहिए।

क्योंकि भारत धर्म प्रधान और सुसंस्कृत देश है। अतः यहाँ के निवासियों को पशु की भांति विवेक नहीं खोना चाहिए। कवि प्रधानमंत्री के इस बयान से सहमत नहीं है। इसलिए वह नागिन से पूछता है। हे नागिन! तुम्हारा काम तो बिना बिचारे लोगों को डंसना है। तुमने बहुतों को अपनी क्रूरता का शिकार बनाया है। इसलिए बतलाओ कि क्या इस आवाज को सुन रही हो उसका भाव समझती हो ? क्या तुमने इस पृथ्वी पर अर्थात् संसार में कहीं और ऐसा मनुष्य को देखा है, जिसे कभी जहर नहीं चढ़ता है अर्थात जिसके ह्रदय में कभी किसी के लिए द्वेष का भाव और कटुता नहीं आती, न ही कभी क्रोध का उन्माद या पागलपन आता है। जो कि युद्ध भूमि में भी पशु या विवेकहीन होने से घबरता है।

वीर जवाहरलाल ने भारतीयों को कहा है कि इस स्थिति में भी पशु या पशु की भाँति क्रूर न बनो। परंतु यह केवल आदर्श की बात है। यदि हो सके तो बहुत अच्छा हो। इस अमृत की लहर या धारा को कौन पीने देता है। कुछ लोग आदर्शवाद के फेरे में पड़कर शांति के पुजारी बन जाये और दूसरे अवसरवादी बनकर सत्ता के मद में चूर हुए शांति को भंग करें, उन शांति के पक्षपातियों पर आक्रमण कर दें तो वे क्या करेंगे ? उपर्युक्त आदर्श का पालन करके आक्रांता पर दयालु बने तो स्वयं उसके हाथों मारे जाएंगे। इस कारण अमृततुल्य उस आदर्श का पालन यहाँ कौन करने देगा ? जो पशु न बने अर्थात् पशुत्व पर न उतर आये, आक्रान्ता के साथ पशु की भांति क्रूरता न बरते तो उसे कौन जीने देता है ? उसे स्वयं मरना पड़ता है।

दिनकर जी कहते हैं कि हे मानव, यहां भैंसे-भैंसे का खेल शुरू हो गया है, जैसे भैंसे परस्पर लड़ा करती है, एक सींग मारकर दूसरी को ठेला करती है, इसी प्रकार सत्ता व शक्ति के दम में एक मनुष्य या राष्ट्र दूसरे को छेड़ता है, उस पर आक्रमण कर देता है। ऐसी स्थिति में तू भी जानवर बन लें, जीना चाहता है तो उसकी भांति तू भी लड़। तू भी पशू की ही भांति डकार, गरज। जंगल की यही भाषा है। जंगल का यही न्याय है कि जिसके हाथ में बल हो वह जीत जाये और जीवित रहे। अतः तू भी बल का प्रयोग कर, सिर पर सींग बांध ले और हाथों में बघनखे पहन ले। कवि भारतीय नागरिकों से पूछता है कि क्या तूम पशू बनने में संकोच कर रहे हो। यदि तू यह खेल निस्संकोच नहीं खेलेगा ? क्रूर बनकर भयंकर जहरीले सर्प का सिर नहीं तोड़ेगा, तो यह निश्चित जान ले कि तुझे अपने पीठ पर भैंसों की हुरपेट झेलनी पड़ेगी।

देखो मैं तुम्हे एक रहस्य की बात बताता हूँ - रण भूमि में तलवार गंगाजल की फुहार या धार के छींटो से नहीं सींची जाती, बल्कि शत्रु के रक्त से ही तेर की जाती है। यह आश्चर्य की बात है कि तू अत्याचार करने वाले असुर वृत्ति के शत्रुओं से दया, अपनापन दिखाकर तथा उन्हें पुचकार कर लड़ना चाहता है, क्रूरता और कठोरता से नहीं। अतः हे मेरे वीर सुनो तेरे ह्रदय में जो यह विचार आ रहा है कि किसी पर दया करना, प्राणदान करना पुण्य कर्म है, हिंसा करना पाप है, उसको वहीं रोक दे, उसको नियंत्रित कर। करुणा का भाव मन में लाकर या जो मरे हैं, उनके लिए शोक करता हुआ आंसुओं से आंखों को गीली मत होने दें। तेरे हाथ में जो तलवार है, उसे दृढ़ता से पकड़ ले, मुट्ठियाँ ममता के या दया के कारण शिथिल न होने दे। क्योंकि जहाँ शस्त्रबल का सहारा नहीं होता, बलवान शस्त्रधारी शासन का संरक्षण नहीं होता, वहां पर शास्त्र पछताते या विलाप करते है। असुर वृत्ति के लोग उनका पालन नहीं होने देते। शस्त्रधारी शासक या रक्षक शस्त्रबल से उन बाधाओं को दूर करता है। ऋषि लोग वन में रहकर भले ही तप और यज्ञ करें पर अपने कर्म में उन्हें सफलता तभी मिलती है जब कि उनकी रक्षा के लिए पहरे पर धनुष बाण हाथ में लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम खड़े होते हैं। अर्थात धर्मशास्त्रों के निर्देशों का

पालन भी शस्त्रबल की छाया में ही संभव है। वस्तुतः युद्ध भूमि में शत्रु सैनिकों का वध करने के कारण हम पापी नहीं बनते। पापी तो वे हैं, जो दूसरे की भूमि छीनने आये हैं, पापी वे हैं जो अपने स्वत्व को, अपने देश की भूमि को छिनवाकर उसे पुनः प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं करते या ऐसा करने से दूसरों को भी रोकते हैं। इसलिए हम भला पापी बनने के भय से अपने हृदय को उदास क्यों करे? भारत देश में मानवता का जो भंडार युग-युग से संगृहीत है, पशु बन जाने के डर से हम उसकी कुर्बानी क्यों करें। इस आदर्श की रक्षा तभी होगी जबकि संग्राम में सच्चाई से लड़ेंगे। जैसे अतीत में शत्रुओं का मानमर्दन करते रहे हैं, वैसे ही अब भी करें। शत्रु का वध करना क्रूरता या पशुत्व नहीं है। यह चीनी आक्रमण के रूप में लाल रंग की ज्वाला किसे निगलने आयी है? यदि वह संकट गांधी पर नहीं तो और किस पर है? तात्पर्य यह है कि चीन साम्यवाद के सिद्धांत गांधी के सिद्धांत को ग्रसना चाहता है। साम्यवाद हिंसा पर आश्रित है जो पशुत्व या शस्त्रबल को महत्त्व देता है। गांधी आत्मबल से हिंसा को परास्त करने पर विश्वास रखता है। भारत ने गांधी के आत्मबल पर आश्रित अंहिसा से स्वाधिनता प्राप्त की थी। परंतु चीन शस्त्रबल से उस अहिंसा के सिद्धांत को चुनौती दे रहा है। यह समय पूछ रहा है कि आज निर्भयता की वह कभी न बुझने वाली अग्निशिखा कहां है? सत्य का वह वज्र अर्थात अटूट अस्त्र कहां है, विनय या नम्रता की लोहे की बनी रीढ़-मेरुदंड कहा है? समय पूछ रहा है कि आज सागर की वह आन्तरिक अग्नि कहां चली गयी, जिसके होंठो पर इतना झाग या फेन है। अर्थात जैसे समुद्र के अंतर में वडनावल रहता है, तथा ज्वार आने पर उसमें खूब झाग उठते है, जो कि पानी के ऊपर छाये रहते है। इसी प्रकार जन-समूह के अंतर में उस समय जो तीव्र आग थी, भारी जोश और आवेश था वह आज कहाँ है? आज अहिंसा कसौटी पर नहीं बल्कि वास्तव में गांधी की आग है।

८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

अब भी पशु .... होने से घबराता है?

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अहिंसा पर हिंसा के महत्त्व को स्थापित करते हुए जवाहरलाल नेहरू के 'उत्तेजित न होने और धैर्य रखने' वाले बयान पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या : रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखते हैं कि प्रधानमंत्री वीर जवाहरलाल नेहरू ने भारतवासियों को संदेश दिया है कि इस घड़ी में भी पशु मत बनो। दिनकर जी इस संदेश की समीक्षा करते हुए आक्रांता क्रूर भावना को संबोधित करते है। हे नागिनी! तुम्हारा काम तो बिना कुछ जाने प्रत्येक को डंसना है। तुमने बहुतों को अपनी क्रूरता का शिकार बनाया है। परंतु इस सबसे विलक्षण समय में इस अंधकार की अर्थात इस विपत्ति की घड़ी में जबकि साधनहीनता के कारण देश को पराजय एवं घोर निराशा का अनुभव हो रहा है। जवाहरलाल का यह कथन उस समय का है जब देश पर विपत्ति आयी हुई है, निराशा व असफलताओं से उत्साह मंद है। भारत जबकि चीनी आक्रमण के कारण व साधनहीनता की वजह से बड़ी कठिन घड़ी से गुजर रहा है, उस समय भी उसकी यह देशवासियों से शांत रहने की पुकार है। तात्पर्य यह है कि ऐसी स्थिति

में क्या शांत रहना उचित है? क्या शांत और धैर्यपूर्वक रहा जा सकता है? इसलिए बतलाओं कि क्या इस आवाज को सुन रहे हो और उसका भाव समजते हो? क्या तुमने इस पृथ्वी पर अर्थात् संसार में कहीं और उस मनुष्य को देखा है, जिसे कभी जहर नहीं चढ़ता है अर्थात् जिसके ह्रदय में कभी किसी के लिए द्वेष का भाव और कटुता नहीं आती, न ही कभी क्रोध का उन्माद आता है।

काव्यगत सौंदर्य :

१. यहाँ जवाहरलाल के लिए 'वीर' विशेषण साभिप्राय है। क्योंकि युद्ध के मैदान में जब हथियार बंद दुश्मन सामने हो तब धैर्य और शांति की बात करना कायरता का प्रतीक माना जाता है।

८.१.५ सारांश

इस इकाई में कविता 'आज कसौटी पर गांधी की आग है।' कविता में अहिंसा पर हिंसा के महत्त्व को दर्शाया गया है। विद्यार्थी कविता के भावार्थ के साथ संदर्भ सहित व्याख्या का अध्ययन और लघुत्तरीय प्रश्न और बोध प्रश्न के उत्तर दे सकेंगे।

८.१.६ बोध प्रश्न

१. 'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
२. 'आज कसौटी पर गाँधी की आग है' कविता में प्रस्तुत व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

८.१.७ अतिलघुत्तरीय प्रश्न

१. आज कसौटी पर क्या है?
२. कौन कह रहा है कि 'अब भी पशु मत बनो'?
३. कवि सर पर क्या बाँधने के लिए कहता है?
४. पहरे पर कौन खड़े होते हैं?

❖❖❖❖

८.२

समर शेष है

इकाई की रूपरेखा :

८.२.१ इकाई का उद्देश्य
८.२.२ प्रस्तावना
८.२.३ कविता का भावार्थ / कथानक
८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.२.५ सारांश
८.२.६ बोध प्रश्न
८.२.७ लघुत्तरीय प्रश्न

८.२.१ इकाई का उद्द्देश्य

- इस इकाई में हम 'समर शेष है' कविता का अध्ययन करेंगे।
- कविता के भावार्थ को जान सकेंगे।
- कविता के व्याख्यात्मक प्रश्नों बोध प्रश्न और लघुत्तरीय प्रश्नों को हल कर सकेंगे।

८.२.२ प्रस्तावना

काव्य संग्रह में संकलित कविता 'समर शेष है' स्वतंत्र भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की प्रस्तुति है। कवि कह रहा है कि यद्यपि भारत स्वतंत्र हो गया पर उसका लाभ चंद लोगों तक ही सीमित रह गया है। अधिकांश जनता परतंत्र भारत की तरह ही आज भी भूख, गरीबी और विवशता की चक्की में पिस रही है। इसलिए अभी संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है। पूरे देश में सांप्रदायिकता का वातावरण बना हुआ है। अत: कवि का कहना है कि हमें जो आजादी मिली है, वह अभी अधूरी है। स्वतंत्रता का समर अभी खत्म नहीं हुआ है। अपितु अभी समर शेष है।

८.२.३ भावार्थ / कथानक

दिनकर जी ने 'समर शेष है' कविता स्वतंत्र भारत की तत्कालीन परिस्थितियों से आहत होकर लिखी है। उनका मानना है कि यदि पूरा देश एक साथ आजाद हुआ तो फिर इतने साल हो जाने के बाद भी देश का एक बहुत बड़ा वर्ग अपनी दैनिक जरूरतों के लिए भी क्यों मोहताज है? कविता में वो देश के वीर सेनानियों को संबोधित करते हुए कहते हैं - हे सैनिकों,

यह किसने कहा कि युद्ध का समय बीत चुका है। इसलिए अपने धनुष की डोरी उतार दो, पीठ पर जो तरकस बांधा है उसके बंधन खोल दो, अब युद्ध के नारे लगाना, हुंकार भरना बंद कर शांतिपूर्वक प्रेम से बात करो। ये कौन लोग हैं जो कहते हैं कि अब अपने अग्नि बाणों से विरोधियों के सीने को मत बींधो। बल्कि उसके स्थान पर सारे शरीर पर चंदन व केसर युक्त पुष्पों का लेप लगा लो। हे शूरवीरों! भला मैं कुंकुम का यह लेप किसको लगाऊं? किसे प्रेम और श्रृंगार के गीत सुनाऊं? क्योंकि मेरे आँखों के सामने तो भारत भूख से तड़प रहा है।

कविता के अगले पद में कवि देश के अभिजात्य वर्ग से मुखातिब होते हुए कहता है - ओ फूलों की रंगीली मालाओं पर चलने वाले, आराम से बंगले में फूलों की सेज पर सोने वाले, ऐ रेशमी नगर के निवासी तू तो अब रूपराशि को देखकर उसके आलिंगन में मस्त हो गया है, पर क्या तू जानता है कि आज भी पूरे देश में जहर ही जहर छाया है। भूखे नंगे आज भी जहर के घूंट पीने को मजबूर हैं और यहाँ राजधानी दिल्ली में मदिरा के दौर चल रहे हैं, आनन्दोत्सव मनाए जा रहे हैं। यहाँ दिल्ली में प्रकाश की चकाचौंध है परंतु शेष भारत में अभी भी अंधेरा ही है, वहाँ खुशियों की रौशनी नहीं पहुँची है। तुम्हारे बंगलों में लगे मखमली परदों व मुगल गार्डन में छायी फूलों की बहार से बाहर की उस दुनिया में शेष भारतवासियों की भूख की आग अभी भी पराधीनता के दिनों की ही भांति, श्मशान की भांति ही वैसे ही सुलग रही है, जिसमें यह मेरा भारत जला जा रहा है।

इस देश की वह दुनिया जहाँ अभी तक आशा और उल्लास की किरण नहीं पहुँच पाई है, जहाँ का क्षितिज सूना है, सूर्य-चंद्र आदि का उदय नहीं हुआ, अर्थात् देश के उस भाग में विकास के कोई लक्षण नहीं है। अभी तक आकाश में अंधकार का ही घेरा है, ज्ञान का प्रकाश नहीं फैला है। जहाँ की दरिद्रता या गरीबों की हालत को देखकर अभी ह्रदय कांप जाता है कि वहाँ की ऐसी दशा! जहाँ न तो माँ को अपनी लाज ढंकने के लिए वस्त्र और न ही बच्चे को पेट भरने के लिए दूध सुलभ है। वह क्षेत्र हैरान होकर पूछ रहा है - सुना था कि देश को आजाद हुए सात साल हो गए परन्तु स्वराज्य कहाँ अटका हुआ है। वह यहाँ तक क्यों नहीं पहुँचा? कवि दिल्ली को संबोधित करते हुए अर्थात सत्ता के शीर्ष पर बैठे सत्तासीनों से पूछते हैं - अरे ये दिल्ली बता, इस विषय में तू क्या कहती है, स्वाधीनता पाकर तू तो रानी बन गयी, सारा अधिकार तूने पा लिया। फिर यह प्रजा भूख, गरीबी और अशिक्षा का कष्ट क्यों सह रही है? तूने उसे दूर करने के लिए क्या प्रयत्न किया है? कौन है जिसने स्वाधीनता के लाभ में मिलने वाले सबके हिस्से अपने हाथ में अर्थात् अपने अधिकार में कर लिए हैं। स्वाधीनता के रूप में जो प्रकाश रेखा इस भूमि पर दिव्यलोक से उतरी थी, जो प्रसन्नता इस देश में आयी थी, वह किस घर में कैद हो गयी है, किसने उसे अपने अधिकार में कर लिया है। यह न समझना कि युद्ध या संघर्ष समाप्त हो गया है, वह अभी बाकी है, चलता ही रहना है, उसके द्वारा ही वह कुछ व्यक्तियों द्वारा अपनी मुट्ठी में किया स्वाधीनता का प्रकाश अर्थात सुख-सुविधाएँ इस नये बंदीगृह से - उन लोगों के अधिकार से मुक्त होंगी। यदि ऐसा न हुआ तो पापिनी, सब का भाग मारकर लूटने वाली, तेरे ऊपर भारी बिजली टूटेगी, भारी विपत्ति आयेगी। अभी युद्ध बाकी है, समाप्त नहीं हुआ है। यह जो स्वराज्य मिला है। अभी तक झूठा ही है। क्योंकि जब तक जन-जन को उसका लाभ न मिले, वह वास्तविक स्वराज्य नहीं होगा, जिसकी जो धरोहर है उस तक शीघ्र पहुँचानी होगी। अर्थात् स्वराज्य से होने वाले लाभ सभी जनता के लिए हैं, कुछ एक सत्ताधारियों के लिए नहीं है। अतः वे जनता की धरोहर है। जिन अधिकारियों ने व पूँजीपतियों ने उन्हें हथिया लिया है, वे भला चाहते हैं तो उस अमानत को जो स्वराज्य के लाभ के रूप में उन्होंने हथिया

रखी है, उसे शीघ्र जनता को लौटा दें। स्वाधीनता की धारा वस्तुतः वह गंगा है, जो दिव्य लोक से पृथ्वी पर उतरी है। पर वह इस देश की भूमि पर निर्बाध नहीं बह पा रही है, कई ऊँचे पहाड़ अर्थात् सत्ताधारी व्यक्ति उस धारा के रास्ते में खड़े हो गये है, उसे रोक रहे है। उन्हें चेतावनी दे दो कि यदि वे जनता के आगे झुक गये और स्वेच्छा से जनता का अधिकार उसे सौंप देंगे तो संसार में उन्हें यश प्राप्त होगा कि उन्होंने लोभ त्यागकर जनता का भाग उसे स्वयं लौटा दिया है। किन्तु वे अपने हठ पर अड़े रहे और जनता की प्रगति को नहीं होने देंगे वे बेशक ऐरावत हाथी की भांति बलशाली व भारी हों तो भी इस धारा में पत्तों की भांति बह जाएंगे।

अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ है, उसका संघर्ष चल रहा है। जनता रूपी गंगा को स्वतंत्रता के साथ बहने दो। उसकी प्रगति के प्रवाह में यदि पर्वत शिखर डूबते हैं तथा राजमुकूट बहते हैं तो बहने दो। यदि तुम सोचते हो कि यह जनगंगा कैसे बहे, जमीन तो पत्थरों से भरी और उँची है अर्थात् समाज में कुछ कहलाने वाले वर्ग ऐसे हैं जो पत्थर की भांति कठोर ह्रदय हैं। वे जन सामान्य के आगे बढ़ने में रुकावट हैं, तो ऐसी पथरीली ऊँची जमीन को तोड़ देंगे, जिससे वह भी कोमल और समतल बन जाए अर्थात् उन वर्गों को मिटा दिया जाएगा। उन्हें उतार कर नीचे जन सामान्य के बीच बैठा देंगे। जब तक समतल न पीट दें, भूमि बराबर न हो जाये अर्थात् समाज में समानता स्थापित न हो जाये, तब तक युद्ध की भूमि से नहीं हटेंगे, संघर्ष बंद नहीं करेंगे। अभी युद्ध शेष है, चल ही रहा है, तुम ज्योतियों-प्रकाश-साहस व उत्साह के बाण बरसाते हुए आगे बढ़ते चलो, जिससे समाज में आर्थिक व जातीय असमानता की काली अर्थात् कलंक भरी श्रृखंला, जिसने मानवता को आगे बढ़ने से रोक रखा है, टुकडे-टुकडे होकर बिखर जाये। अभी युद्ध बाकी है, समाप्त नहीं हुआ है, क्योंकि मनुष्य को खा जाने वाले, उसके प्राणों के भूखे पशु गर्व से हुंकार रहे हैं। पहले उन्होंने गांधी का रक्त पीया था। अब वे जवाहरलाल नेहरू पर फुंफकार रहे हैं। अर्थात् उन्हें डंसने का प्रयत्न कर रहे हैं। क्योंकि इन सांप्रदायिक लोगों के अहंकार को दूर करना शेष है, दुसरों के खून के प्यासे भेड़ियों को बिना दाँत का करना है, उनके दाँत तोड़ने हैं। साथ ही सांपों को बिना जहर का करना जरूरी है।

ये रात के अंधियारों में भटकने वाले शैतान अर्थात दूसरों को नुकसान पहुँचा कर अपना हित साधने वाले लोग कहीं कोई दुष्काण्ड रचने में सफल न हो जाएँ, इसलिए जरूरी है कि आज पुरे देश में गांधीजी की सेना, गांधीजी के स्वयंसेवकों का दल कमर कसकर खड़ा हो जाये। यह सेना ऐसी हो जो अपना बलिदान देकर भी समाज में मृदुलता एवं स्नेह के भावों का बीजारोपण करे। हे वीरों आज जरूरत है कि मन्दिर और मस्जिद को एक तार में बाँधा जाये। अर्थात् पूरे देश में परस्पर मैत्री के संबंध स्थापित किया जाए। कविता के अंत में दार्शनिक विचारों से प्रेरित हो दिनकर जी कहते हैं कि केवल जो वध करता है, वही पाप का भागी नहीं होता, अपितु जो पाप होते देखकर भी उदासीन रहते हैं, ऐसे अपराधों को होते देखकर भी जो रोकने के लिए खड़े नहीं होते, वक्त आगे चलकर उनका भी अपराध लिखेगा अर्थात् उन्हें भी दोषी ठहरायेगा।

८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

समर शेष .... बह जायेंगे।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यखण्ड रामधारी सिंह के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'परशुराम की प्रतीक्षा' में संकलित कविता 'समर शेष है' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड में दिनकर जी कहते हैं कि यदि जनता का अधिकार उस तक न पहुँचा तो उसे छीनने वालों का नामोनिशां तक मिट जाएगा।

व्याख्या : कवि देशवासियों को उद्‌बोधित करते हुए कहता है कि अभी युद्ध बाकी है, समाप्त नहीं हुआ है। यह जो स्वराज्य मिला है; यह झूठा है। क्योंकि जब तक जन-जन को उसका लाभ न मिले, यह वास्तविक स्वराज्य नहीं कहलाएगा, जिसकी जो धरोहर है उस तक शीघ्र पहुँचानी होगी। अर्थात स्वराज्य से होने वाले लाभ सभी जनता के लिए हैं, कुछ एक सत्ताधारियों के लिए नहीं है। अतः वे जनता की धरोहर है। जिन अधिकारियों ने व पूंजीपतियों ने उन्हें हथिया लिया है, वे भला चाहते हैं तो जनता की उस अमानत को शीघ्र लौटा दें। स्वाधीनता की धारा वस्तुतः वह गंगा है, जो दिव्य लोक से पृथ्वी पर उतरी है। पर वह इस देश की भूमि पर निर्बाध नहीं बह पा रही है, कई ऊंचे पहाड़ अर्थात् सत्ताधारी व्यक्ति उस धारा के रास्ते में खड़े हो गये है, उसे रोक रहे है, उस गंगा का रास्ते को बीच में रोककर इंद्र के हाथी अर्थात दिग्गज जो हठपूर्वक डटे हुए है। (इंद्र देवराज और सारे ऐश्वर्य के स्वामी है। इसलिए वे सर्वोच्च सत्ता के प्रतीक है। ऐरावत हाथी उनका नुमाइंदा यानी एजेंट है। वे लोग जनता की प्रगति का मार्ग रोके खड़े है।) उन्हें चेतावनी देते हुए दिनकर जी कहते हैं, कि यदि वे जनता के आगे झुक गये और स्वेच्छा से जनता का अधिकार उसे सौंप देंगे तो संसार में उन्हें यश प्राप्त होगा। किन्तु वे अपने हठपर अड़े रहे और जनता की प्रगति को नहीं होने देंगे तो वे बेशक ऐरावत हाथी की भांति बलशाली व भारी हों तो भी इस जल प्रवाह में पत्तों की भांति बह जाएंगे। तात्पर्य यह है कि जैसे पत्ता पानी के प्रवाह में आसानी से बह जाता है, इसी प्रकार वे जनता के आंदोलन में मिट जाएंगे।

काव्यगत सौंदर्य :

१. उपरोक्त पद्यखण्ड में न्यास शब्द का प्रयोग कवि ने गांधीजी के सिद्धांत के अनुसार किया है। क्योंकि गाँधीजी पूंजीपतियों को राष्ट्र की संपति का ट्रस्टी (न्यासी) मानते थे।
२. पद्यखण्ड में वक्रोक्ति और अन्योक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।

८.२.५ सारांश

उक्त इकाई में 'समर शेष है' कविता का संपूर्ण अध्ययन किया गया है जिसके अध्ययन से विद्यार्थी कविता का भावार्थ व कविता से जुड़े प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे।

८.२.६ बोध प्रश्न :

१. ‘समर शेष है’ कविता में प्रस्तुत संदेश प्रकाश डालिए।
२. ‘समर शेष है’ कविता के आधार पर भारत की तत्कालीन परिस्थितियों की विवेचना कीजिए।

८.२.७ अतिलघुत्तरीय प्रश्न :

१. कविता में दिल्ली किसका प्रतीक है ?
२. भारत की स्वतंत्रता के पश्चात रानी कौन बन बैठा है ?
३. ऐरावत हाथी किसका वाहन है ?
४. समय किसका अपराध लिखेगा ?

❖❖❖❖

१

घर रहेंगे :

इकाई की रूपरेखा :

९.१ इकाई का उद्देश्य
९.२ प्रस्तावना
९.३ कवि परिचय
९.४ कविता का भावार्थ
९.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
९.६ सारांश
९.७ बोध प्रश्न
९.८ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

९.१ इकाई का उद्देश्य

इस काव्य संग्रह की प्रथम इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'घर रहेंगे', 'अंतिम उँचाई', 'अबकी अगर लौटा तो' क्या वह नहीं होगा, स्पष्टीकरण, बाजारों की तरफ भी को शामिल किया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ, स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है।

इन कविताओं से विद्यार्थियों को सामाजिक, आत्मिक और नैतिक आदि संवेदनात्मक के पक्षों का अवलोकन कर अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागृति आएगी। विद्यार्थी उन सभी अनुभूतियों को महसूस करेंगे जिन्हें कवि ने रेखांकित किया है। विद्यार्थियों में कविता के भाव व शिल्प के प्रति समझ विकसित होगी। छात्रों में काव्य को लेकर रूचि का निर्माण होगा। समाज के प्रति संवेदनशीलता जागृत होगी। कविता में आए नए शब्दों, मुहावरों व कहावतों का ढंग की समझ विकसित होगी।

९.२ प्रस्तावना

कुंवर नारायण जी ने 'घर रहेंगे' नामक कविता के अंतर्गत भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित किया है। वे इस कविता के माध्यम से मनुष्य को जीवन की आपाधापी से ऊपर उठने की सलाह देते हैं। 'अंतिम ऊंचाई' में कवि बताना चाह रहा है कि आज मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती जा रही है। वह अपने आप को सबसे ऊपर देखना चाह रहा है। इस जद्दोजहद में उसका जीवन कब समाप्त हो गया पता ही नहीं चलता। लेकिन वह जीवन की अधिक से अधिक कठिन पड़ावों को हिम्मत के साथ पूर्ण करता है।

‘अबकी अगर लौटा तो’ कविता में कवि लगातार उत्तरोत्तर विकास की बात करता है। उसका कहना है कि जीवन में मनुष्य को प्रगति के रास्ते पर अग्रसर होना चाहिए। ताकि वह अपने साथ-साथ देश और समाज का भी कल्याण कर सके।

१.३ कुंवर नारायण जी का जीवन परिचय

कुंवर नारायण का जन्म १९ सितंबर १९२७ को उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया था। इन्होंने अपने लेखन की शुरुआत कविता से की थी लेकिन साथ ही चिंतन पर लेख, साहित्य समीक्षा, कहानियाँ, सिनेमा तथा अन्य विषयों पर भी लेख करते थे। कुंवर नारायण जी अनेक पत्र-पत्रिकाओं के संपादन से लंबे समय तक जुड़े रहे जिनमें प्रमुख रूप से ‘युग चेतना’, ‘नया प्रतीक’ और ‘छाया नट’ आदि हैं। कुंवर नारायण जी लखनऊ के ‘भारतेंदु नाट्य केंद्र’ और ‘उत्तर प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी’ आदि संस्थाओं के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पद को सुशोभित कर चुके थे।

कुंवर नारायण जी ने कविता, खंडकाव्य, समीक्षा, कहानी और आलोचना जैसे विषयों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित की जिनमें काव्य संग्रहो के अंतर्गत -

१) चक्रव्यूह (१९५६, राजकमल प्रकाशन), तीसरा सप्तक (१९५९, भारतीय ज्ञानपीठ), परिवेशः हम तुम (१९६१, वाणी प्रकाशन), अपने सामने (१९७९, राजकमल प्रकाशन), कोई दूसरा नहीं (१९९३, राजकमल प्रकाशन), इन दिनों (२००२, राजकमल प्रकाशन)।
२) खंडकाव्य : आत्मजयी (१९६५, भारतीय ज्ञानपीठ), वाजश्रवा के बहाने (२००८, भारतीय ज्ञानपीठ)।
३) कहानी संग्रह : आकारों के आसपास (१९७३, राधाकृष्ण प्रकाशन)।
४) समीक्षा : आज और आज से पहले (१९९८, राजकमल प्रकाशन), मेरे साक्षात्कार (१९९९, किताब घर), साहित्य के कुछ अंतर्विषयक संदर्भ (२००३, साहित्य अकादमी)।
५) आलोचना : शब्द और देश काल, रुख (राजकमल प्रकाशन)
६) संचयन : कुंवर नारायण - १: संसार, कुंवर नारायण - २ : उपस्थिति, संपादक : यतींद्र मिश्रा (२००२, वाणी प्रकाशन)

सम्मान :

कुंवर नारायण जी को समय-समय पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था जिनमें प्रमुख पुरस्कार इस प्रकार हैं - साहित्य अकादमी पुरस्कार, केरल का कुमारन आशान पुरस्कार, व्यास सम्मान, हिंदी संस्थान का विशेष सम्मान, शतदल पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, लोहिया अति विशिष्ट सम्मान, वर्ष २००१ का राष्ट्रीय कबीर सम्मान पाने वाले हिंदी के दूसरे कवि।

कुंवर नारायण जी ने अपनी पहली विदेश यात्रा १९५५ में पोलेंड, चेकोस्लोवाकिया, रूस तथा चीन में काफी समय तक बिताया। उसी समय पाब्लो नेरुदा, नाजिम हिकमत तथा पंटन स्वनीम्स्की से मुलाकातें हुई। जिसका शुरुआती साहित्य जीवन में खास महत्व रखता है।

स्वीडन के कई विश्वविद्यालयों में काव्य पाठ तथा साहित्यिक गोष्ठियाँ में भागीदारी १९९४ में वेनिस यूनिवर्सिटी में व्याख्यानमाला और इसी वर्ष यूरोप, इंग्लैंड और अमेरिका का भ्रमण भी किया। १९९८ में और फिर १९९९ में काफी समय ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज में रहे। वार्सा यूनिवर्सिटी तथा २००१ में जागीलोनियन यूनिवर्सिटी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में हिस्सा लिया। इस प्रकार कुंवर नारायण जी का साहित्यिक योगदान सराहनीय है।

१.४ घर रहेंगे कविता का भावार्थ

कवि कुंवर नारायण इस कविता के माध्यम से संपूर्ण मानव जाति को इस बात का एहसास कराना चाहते हैं कि यह संसार किसके माया मोह में फंसकर हम और अधिक पाने की होड़ में लगे रहते हैं किंतु एक दिन सब कुछ धरा का धरा रह जाता है।

वे कहते हैं कि आज हम जिन घरों में रह रहे हैं जिन्हे हम अपना कह रहे हैं एक दिन हमी उन्हें उसके हाल में छोड़ कर चले जाएंगे। हमने अपने जीवन का जो लक्ष्य बनाया है उसे रात दिन के संघर्ष के पश्चात प्राप्त कर तो लेते हैं लेकिन हम इतने थक चुके होते हैं कि उस थकान का दर्द सह नहीं पाते तब ऐसा लगता है कि इस जीवन में हमें व्यर्थ की वस्तुओं को पाने के लिए अपने जीवन के अहम् हिस्से को बर्बाद कर दिया लेकिन तब तक समय बीत चुका होता है। तब हमारे सम्मुख मृत्यु अपना मुख बाए खड़ी रहती है और हमें निगल जाने का इंतजार करती है। उससे भागना चाहते हैं लेकिन वह हमारे रास्ते पर डटकर खड़ी रहती है। हमारे पास अपने जीवन को मृत्यु के हवाले करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह जाता है। तब हमें हमारा जीवन व उसमें व्याप्त विविधता जिसके लिए हमने रात-दिन संघर्ष किया। वह सब आज हमें स्वप्न सा प्रतीत हाने लगता है और हम अपने प्रिय जनों व व्यवहार से युक्त जीवन को छोड़ते हुए एक नए लोक के लिए प्रस्थान करने लगते हैं। फिर हुए प्रकृति के उन प्राकृतिक तत्वों की बात करते हैं जो मनुष्य के मनोरंजन से लेकर जीवन की लंबे समय तक अपने-अपने तरह से आजीविका का साधन बने रहते हैं। कभी वह प्रकृति के इस आकर्षण को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार से लगातार कोशिश करते रहते हैं और अपने जीवन का एक लंबा समय व्यतीत कर देते हैं कवि का कहना है कि यह सभी वस्तुएं क्षणिक हैं इनका आकर्षण क्षणिक है यदि कोई सच्चा और अमर भाव इस संसार में है तो वह है प्यार। अतः हमें आपस में प्यार से रहना और प्यार को बांटना आना चाहिए यही हमारे आने वाली पीढ़ियों में वर्षो तक विद्यमान रहेंगी। क्योंकि प्रकृति में व्याप्त ये पेड़ पौधे और अन्य तत्व भी हमारी तरह ही क्षणिक है। इनका जीवन भी हमारी तरह किसी का शिकार हो जाएगा अतः हमारी संस्कृति उल्लेख करने के लिए ये भी लंबे समय तक नहीं बच पाएंगे।

इस प्रकार कवि ने मनुष्य के जीवन को सांझ और दिन के समान बताया है। वे कहते हैं जिस प्रकार प्राकृतिक तत्व क्षण भर में अपना अस्तित्व खो बैठते हैं ठीक उसी तरह मनुष्य भी अपने जीवन में एक निश्चित समय के बाद यहां से पलायन कर जाता है और तब वह अपने जीवन में व्यतीत किए व्यर्थ के पलों को कोसता रह जाता है।

१.५ सारांश

कुंवर नारायण सिंह द्वारा लिखित यह कविता जीवन की वास्तविकता को दर्शा रही है। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ, कविता की व्याख्या, बोध प्रश्न और लघुत्तरीय प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे।

१.६ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

'प्रकृति औ' पांखड के यह घने लिपटे बंटे, ऐंठे तार - जिनसे कहीं गहरा, कहीं सच्चा, मैं समझता - प्यार, मेरी अमरता की नहीं देंगे ये दुहाई, छीन लेगा इन्हें हमसे देह-सा संसार अनुलेख - प्रकृति औ .... देह-सा संसार।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठय पुस्तक कुंवर नारायण की 'प्रतिनिधि कविताएं' के 'घर रहेंगे' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन की यथार्थता से व्यक्ति को परिचय कराता है। वह इस क्षणभंगुर संसार में प्रेम को प्राथमिकता देता है।

व्याख्या :

कवि इन पंक्तियों के माध्यम से प्रकृति के तत्वों के आकर्षण को अभिव्यक्त करता है। और बताता है कि प्रकृति हमें अपनी सौंदर्य से अपनी ओर आकृष्ट किए रहती है। यह भी केवल प्रकृति का छल है। जो मनुष्य को अपने मायाजाल में फंसाए रखती है। कवि कहता है कि इस संसार में यदि कोई चीज सच्ची है तो वह है प्यार। अतः हमें सभी के साथ मिलजुल कर प्यार से रहना चाहिए। समाज में यही प्यार एक मिसाल बनकर आपके नाम के साथ जुड़ जाएगा और आपकी आने वाली पीढ़ियाँ सदियों तक आपको याद करते रहेंगे। हमारी तरह इन पेड़ पौंधों का जीवन भी क्षणिक है। हमारे देह की तरह ही एक दिन इनके देह को भी छीन लिया जाएगा।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) इन पंक्तियों में प्रकृति के तत्वों का मानवीकरण हुआ है।
२) यहाँ प्रेम को प्राथमिकता दी गई है।
३) कवि जीवन में अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दे रहा है।
४) प्राकृतिक सौंदर्य का उल्लेख किया गया है।
५) सरल और सहज भाषा का प्रयोग हुआ है।

१.७ बोध प्रश्न

१) 'घर रहेंगे' नामक कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।
२) 'घर रहेंगे' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
३) 'घर रहेंगे' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

१.८ लघु उत्तरीय प्रश्न :

१) कवि किस के रहने की बात कह रहा है ?
उत्तर - कवि घर के रहने की बात कर रहा है।

२) कवि ने अनर्गल किसे कहा है ?
उत्तर - कवि ने जिंदगी को अनर्गल कहा है।

३) कवि अचानक किसके बीत जाने की बात करता है ?
उत्तर - कवि अचानक समय के बीत जाने की बात करता है।

४) कवि ने सांझ को किसके समान कहा है ?
उत्तर - कवि ने सांझ को राख के समान कहा है।

५) कवि के अनुसार राह रोककर कौन खड़ी है ?
उत्तर - कवि के अनुसार राह रोक कर मृत्यु खड़ी है।

❖❖❖❖

१.१

अंतिम ऊंचाई

इकाई की रूपरेखा :

१.१.१ इकाई का उद्देश्य
१.१.२ प्रस्तावना
१.१.३ कविता का भावार्थ
१.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.१.५ सारांश
१.१.६ बोध प्रश्न
१.१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.१.१ इकाई का उद्देश्य

'अंतिम ऊँचाई' कविता के अध्ययन से विद्यार्थी -

- कविता के भावार्थ को समझ सकेंगे।
- कविता में प्रस्तुत अवतरण की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

१.१.२ प्रस्तावना

'अंतिम ऊँचाई' कविता में कवि ने मानव मन की विहवलता का उल्लेख किया है उसके कार्य करने की चश्क पर कार्य की परिणिति निर्भर करती है रूचि से किया हुआ कार्य विकास की ओर बढ़ता है और निरूत्साह से किया हुआ कार्य गर्त में समाविष्ट हो जाता है।

१.१.३ कविता का भावार्थ

अंतिम ऊंचाई के माध्यम से कवि कुंवर नारायण स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन में उत्तरोत्तर आगे बढ़ना चाहता है। अपने सामर्थ्य से अधिक पाना चाहता है। वह आज इतना स्व केंद्रित हो गया है कि उसे किसी की परवाह नहीं है। वह सोचता रह जाता है कि काश वह इस दुनिया में केवल आगे बढ़ता रहता है उसके समक्ष आज दसों दिशाएं अपनी बाँहे फैलाए उसका स्वागत करने के लिए तैयार है लेकिन क्या अपने तक सीमित हो जाना ही जीवन है। वह अपने दोनों हाथों से दुनिया के सारे साधन अपने लिए सुरक्षित कर लेना चाहता है। उसकी यही मानसिकता उसके लिए दिन प्रतिदिन समस्याएँ खड़ी करते जा रहा है।

कभी-कभी अत्याधिक पाने की आशा में व्यक्ति का सब कुछ लुट जाता है। ऐसी स्थिति में उसके पुराने अनुभव उसे साहस बंधाते हैं। वह फिर से कार्य की शुरुआत करने की कोशिश करता है लेकिन अंत तक पहुँचते-पहुँचते फिर से स्थितियाँ पूर्व की तरह बन जाती है। वह इस असमंजस में पड़ जाता है कि आखिर बड़े धूमधाम से शुरू हाने वाले कार्य जिन्हें निरंतर बने रहने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया था। अचानक समाप्त कैसे हो जाते हैं? फिर कवि कहते हैं कि व्यक्ति आज जिस ऊँचाई की तरफ बढ़ने की हाव में लगा हुआ है। और एक समय ऐसा आता है कि जब वह इस बीच आने वाली पर्वत से भी ऊंची कठिनाइयों को चुटकी में समाप्त करने की क्षमता रखने लगता है। अर्थात आज उसके पास वे सारी शक्तियाँ हैं जिनके बल पर वह हर तरह के कार्यो को पूरा कर सकता है। अब उसके दिल में संवेदनाएँ लगभग समाप्त प्राय हो चुकी है। उसका ह्रदय पत्थर की तरह कठोर हो चुका है।

कवि कहता है कि मनुष्य के जीवन में दो स्थितियाँ पैदा होती है एक तो वह जब जीवन में आने वाले सभी बाधाओं को दूर करते हुए जीवन के शिखर तक पहुँच जाता है जहाँ उसे किसी बात की कमी का एहसास नहीं होता। लेकिन उसका संघर्ष तब भी नहीं रूकता। तब उसे एहसास होता हैं की उसमें और लगातार संघर्षरत मनुष्य में कोई अंतर नहीं है जो भी व्यक्ति उसकी तरह लगातार संघर्ष करने की क्षमता रखता है वह भी कहीं न कहीं उसके समकक्ष ही अपना वजूद स्थापित कर लेता है। अंततः कहा जा सकता है कि मनुष्य को अपने जीवन की ऊँचाइयों का निर्धारण कर लेना चाहिए। तत्पश्चात वहाँ पहुँचने पर संतोष की सांस लेनी चाहिए। मनुष्य की इच्छाएं असीमित होती है। अतः उसे इन्हें नियंत्रण में रखना चाहिए न कि वह इनके नियंत्रण में आ जाए। तभी वह सुखी जीवन जी सकता है।

१.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

शुरू शुरू में सब यही चाहते हैं कि सब कुछ शुरु से शुरु हो, लेकिन अंत तक पहुँचते-पहुँचते हिम्मत हार जाते हैं। हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती कि वह सब कैसे समाप्त होता है। जो इतनी धूमधाम से शुरु हुआ था हमारे चाहने पर।

अनुलेख - शुरु-शुरु में सब .... हमारे चाहने पर।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक कुंवर नारायण की 'प्रतिनिधि कविताएं' के 'अंतिम उँचाई' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कार्य के प्रति प्रेम रखने के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :

कुंवर नारायण इन पंक्तियों के माध्मम से यह बताने का प्रयास करते हैं कि प्रारंभ में जब हम कोई कार्य को बड़े उत्साह के साथ करते हैं तो उस समय हमारी निष्ठा उस कार्य के प्रति काफी गहरी होती है। लेकिन जब यही निष्ठा उस कार्य से धन कमाने की प्रगति की ओर

मुखर होती है तब हमारी अपेक्षा के अनुकूल हमें लाभ नहीं मिलता। इसी बात के चलते उस कार्य के प्रति हमारा उत्साह कम होता चला जाता है। यदि हम सीमित लाभ पर संतुष्ट होकर कार्य करें तो निश्चित रूप से हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्य लगातार उत्तरोत्तर विकास की ओर बढ़ते रहेंगे।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) कवि कार्य के प्रति लगातार रूचि बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है।
२) उक्त पंक्तियों से लालच से दूर रहने की प्रेरणा मिलती है।
३) सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

१.१.५ सारांश

'अंतिम ऊंचाई' कविता मानव के सामर्थ्य की कहानी कहती है। इस इकाई के सम्पूर्ण अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ, कविता का अर्थ (स्पष्टीकरण), बोध प्रश्न और लघुत्तरीय प्रश्नों का हल आसानी से कर सकते है।

१.१.६ बोध प्रश्न

१) 'अंतिम ऊंचाई' नामक कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
२) 'अंतिम ऊंचाई' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
३) 'अंतिम ऊंचाई' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

१.१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) अंतिम ऊंचाई में कितने दिशाओं की बात की गई है ?
उत्तर - अंतिम ऊंचाई में दसों दिशाओं की बात की गई है।

२) कवि किसे जीतने की बात करता है ?
उत्तर - कवि दुर्गम वनों और ऊंचे पर्वतों को जीतने की बात करता है।

३) कवि किसकी तरह कठोर दिखने की बात करता है ?
उत्तर - कवि पत्थरों की कठोरता की तरह दिखने की बात करता है।

४) कवि मस्तक पर किस तूफान को झेलने की बात करता है ?
उत्तर - कवि मस्तक पर बर्फ का पहला तूफान झेलने की बात करता है।

५) कवि किस-किस में अंतर न होने की बात करता है ?
उत्तर - कवि सब कुछ जीत लेने और अंत तक हिम्मत न हारने में कोई अंतर महसूस नहीं करता है।

❖❖❖❖

१.२

अबकी अगर लौटा तो

इकाई की रूपरेखा :

१.२.१ इकाई का उद्देश्य
१.२.२ प्रस्तावना
१.२.३ कविता का भावार्थ
१.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.२.५ सारांश
१.२.६ बोध प्रश्न
१.२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.२.१ इकाई का उद्देश्य

'अबकी अगर लौटा तो' कविता के अध्ययन से विद्यार्थी -

- कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।
- व्याख्या के माध्यम से कविता का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

१.२.२ प्रस्तावना

'अबकी अगर लौटा तो' कविता में कवि जीवन में भटके हुए इंसान जब वापस जीवन की राह पर लौटता है तो वह बड़ी तन्मयता से अपने कार्य करना चाहता है, एक अच्छी जिंदगी जीना चाहता है और समाज को कुछ देने का भाव भी अपने मन में रखता है।

१.२.३ कविता का भावार्थ

कुंवर नारायण जी 'अबकी अगर लौटा तो' कविता के माध्यम से यह बताना चाह रहे हैं कि मनुष्य के जीवन में अनेक उतार-चढाव आते रहते हैं। वह कभी इनके चलते दिग्भ्रमित हो जाता है। लेकिन कुछ समय पश्चात उसे जब अपनी गलती का एहसास होता है तो वह इन गलतियों में सुधार के लिए समाज के हितार्थ कुछ कार्य बड़े स्तर पर करने का निश्चय लेता हैं। तब वह निर्णय लेता है कि अपने साथ-साथ चल रहे लोंगों का हर कदम पर सहयोग करुँगा। उनके साथ प्रेम से पेश आऊँगा इस दौरान उनके प्रति मेरे चेहरे पर कभी भी रोष के लक्षण नहीं दिखाई देंगे। मैं अब मनुष्य बनकर इंसानों के बीच प्रेम से रहना चाहता हूँ। मैं इंसानों की बीच में

इंसानों की तरह रहकर कुछ विशेष करना चाहता हूँ। मैं यहां वहाँ पढ़ा हुआ या भटका हुआ कोई जानवर की तरह जीवन को व्यर्थ खराब करना नहीं चाहता हूँ। यदि मैं जीवित रहा तो कृतज्ञतर होकर ही वापस लौटूंगा।

कवि कहता है कि यदि मुझे वापस से इंसानों के बीच लौटने का मौका मिले तो मैं लोगों के कल्याण को ध्यान में रखकर उसके अनुकूल कार्य करुंगा। और मनुष्य के सारे गुणों के साथ जीवन को जीने का प्रयास करुँगा।

१.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

'अबकी अगर लौटा तो हताहत नहीं सबके हिताहित को सोचता पूर्णतर लौटूंगा।'
अनुलेख - अबकी अगर .... पूर्णतर लौंटूगा।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक कुंवर नारायण की 'प्रतिनिधि कविताएँ' के 'अबकी अगर लौटा तो' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि मनुष्य को सभी गुणों के साथ जीवन यापन करने के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :

इस कविता के माध्यम से कवि समाज में व्याप्त है अमानवीय व्यवहार के प्रति बड़ा ही दुखी दिखाई देता है। वह कहता है कि मनुष्य को अपने गुणों की जानकारियां होनी चाहिए। साथ ही इन गुणों का समाज के लिए किस प्रकार से उपयोग किया जा सकता है इस बात पर भी विचार करना चाहिए। उसे अपने गुणों को व्यवहार में लाने के लिए विचार करने की आवश्यकता है। इस तरह के कार्य को करते समय उसके मार्ग में तरह-तरह की बाधाएँ आएंगी। लेकिन किसी भी परिस्थिति में उसे निराश या हताश होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि जब व्यक्ति समाज के हितार्थ यदि कोई संकल्प लेकर आता है तो उसके इस प्रयोजन की पूर्णता अपने आप होती चली जाती है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) इन पंक्तियों के माध्यम से व्यक्ति को सामाजिक दायित्वों का बोध कराया जा रहा है।
२) ये पंक्तियाँ व्यक्ति ने सकारात्मक सोच को विकसित करती है।
३) कवि द्वारा सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया।

१.२.५ सारांश

इस इकाई के सम्पूर्ण अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ से अवगत हुए, संदर्भ सहित कविता का स्पष्टीकरण कर सके और सभी प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सके।

१.२.६ बोध प्रश्न

१) 'अबकी बार लौटा तो' नामक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
२) 'अबकी बार लौटा तो' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
३) 'अबकी बार लौटा तो' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
४) 'अबकी बार लौटा तो' कविता का उद्देश्य लिखिए।

१.२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) कवि किस तरह से लौटने की बात करता है ?
उत्तर - कवि वृहत्तर होकर लौटने की बात करता है।

२) कवि किनको जगह देने की उल्लेख करता है ?
उत्तर - कवि साथ चल रहे लोगों को जगह देने की बात करता है।

३) कवि जिंदा रहने पर किस तरह लौटने को कहता है ?
उत्तर - कवि जिंदा रहने पर कृतज्ञता होकर लौटने को कहता है।

४) कवि पूर्णतर होकर क्यों लौटना चाहता है ?
उत्तर - कवि पूर्णतर होकर लोगों के हितार्थ लौटना चाहता है।

❖❖❖❖

१०

क्या वह नहीं होगा

इकाई की रूपरेखा :

१०.१ इकाई का उद्देश्य

१०.२ प्रस्तावना

१०.३ कविता का भावार्थ

१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१०.५ सारांश

१०.६ बोध प्रश्न

१०.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१०.१ इकाई का उद्देश्य

'क्या वह नहीं होगा' कविता के अध्ययन से विद्यार्थी -

- कविता का भावार्थ समझ सकते है।
- कविता के अर्थ को स्पष्ट कर सकते है।
- कविता से संबंधित प्रश्नों को हल कर सकते है।

१०.२ प्रस्तावना

'क्या वह नहीं होगा' कविता में कवि मानते है कि देश स्वतंत्रता के पहले जैसा था वैसा ही अब भी है स्वतंत्रता से देश की अवस्था में कोई बदल नहीं आया है। क्योंकि आज की पीढ़ी भी परदेशी चकाचौंध में पागल होकर विदेश की ओर भाग रही है।

१०.३ कविता का भावार्थ

'क्या वह नहीं होगा' नामक कविता के माध्यम से कवि काफी चिंतित दिखाई देते हैं। उनकी चिंता इस बात को लेकर है कि स्वतंत्रता के बावजूद हमारी विकासात्मक स्थिति में कोई अंतर नहीं दिखाई दे रहा है। आज भी हमारे बच्चे पढ़ने लिखने के बावजूद उसी तरह विदेशियों के लिए काम कर रहे हैं जैसे पहले क्या करते थे। पहले हम अपने देश में रहकर उनके लिए काम किया करते थे क्योंकि हमारे पास पर्याप्त शिक्षा नहीं थी। उन्होंने हमारे अशिक्षित होने का

लाभ उठाया और हमारी बुद्धि का दोहन कर अपने को समृद्ध किया। आज जब हम आजाद हैं और हमारे बच्चे पूरी तरह से शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन की शुरुआत करने जाते हैं जब ये विदेशी उन्हें पैसे का लालच दिखाकर अपने देश ले जाते हैं। और उनकी बुद्धि का दोहन कर उसका लाभ उठा रहे हैं। क्या हम अपनी मूर्खता का परिचय देते हुए विदेशियों के हाथों भारत के भविष्य को सौंपते जाएंगे।

कवि की चिंता इस बात को लेकर है कि क्या हम जीवन पर्यंत इसी तरह विदेशियों के लिए काम करते रहेंगे या हमारे आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसी कुछ व्यवस्था करेंगे ताकि उन्हें विदेशों में जाने की आवश्यकता ना पड़े और उनके बौद्धिक क्षमता का सदुपयोग कर अपने देश को समृद्ध बनाने में उनका सहयोग लें।

आगे कवि इस बात को भी लेकर चिंतित है। वह कहता है कि हमारे देश में समय-समय पर विदेशियों ने आक्रमण करके हमारी धन संपत्ति को हमसे छीन कर ले गए और सोने की चिड़िया कहे जाने वाला हमारा देश कंगाल बन गया। और आज फिर वह हमें चमचमाती दुनिया का लालच देकर हमारे सोने जैसे महत्व वाले बच्चों को पैसों का लालच देकर अपने देश में ले जाते हैं। और उनकी बुद्धि का दोहन करते हैं और समृद्ध होते हैं।

आज हमारे पास गर्व करने के लिए मात्र प्राचीन खंडहर बचे हुए हैं। इसके साथ ही प्राचीन काल में बने मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे बचे हैं। जो हमारी धरोहर के रूप में हमें गौरवान्वित करते हैं। क्या हम जीवन पर्यंत विदेशियों को अपने इस ऐतिहासिक धरोहर को दिखा कर संतुष्ट होते रहेंगे या अपने आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ ऐसा कार्य कर जाएंगे वे हमें याद कर सकें जैसे हम आज अपनी इन ऐतिहासिक धरोहरों को याद कर रहे हैं।

१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

‘और हम क्या इसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी उन्हें गर्व से दिखाते रहेंगे अपनी प्राचीनताओं के खंडहर अपने मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारें ?’

अनुलेख - और हम .... मस्जिद, गुरुद्वारें।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक कुंवर नारायण की ‘प्रतिनिधि कविताएं’ के ‘क्या वह नहीं होगा’ नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

कवि इन पंक्तियों के माध्यम से देश के धरोहर को और बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाह रहे हैं।

व्याख्या :

कुंवर नारायण जी इस बात को लेकर काफी चिंतित हैं कि हम सदियों से अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित स्मारकों, मंदिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों पर गर्व करते आ रहे हैं। जिनमें से

काफी धरोहर खंडहरों में परिवर्तित हो गए है। कवि की चिंता यही है कि हम आज देश की धरोहर के रूप में कुछ नया कर पाने में असमर्थ हैं यहाँ तक कि हमारी स्थिति इस प्रकार की बन गई है हम ठीक ढंग से अपने पूर्वजों की धरोहरों का रखरखाव भी कर पाने में अक्षम हो गए है।

कवि आज इसी चिंता में डुबा हुआ है कि हम अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए धरोहरों को विदेश से आ रहे पर्यटकों के समक्ष परोसने के अलावा कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हमारे पास आधुनिक धरोहर के रुप में कोई भी ऐसी जगह उपलब्ध नहीं है जिसे हम गर्व से पर्यटकों के समक्ष रख सकें और उनकी रूचि उसे देखने के लिए बनी रहे। अतः हमें समय रहते हुए कुछ नया करने का प्रयास करना चाहिए और अपने देश की धरोहर की समृद्धि में और कुछ अधिक जोड़ने का प्रयास कर सके तभी पर्यटकों का आकर्षण हमारे देश के प्रति अधिक बढ़ पाएगा।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) कवि देश के धरोहर पर गर्व करने की बात करता है।
२) यहाँ धरोहर के रुप में कुछ नए स्मारकों का निर्माण करने की बात हो रही है।
३) भाषा सरल और सहज रूप में प्रयुक्त हुई है।

१०.५ सारांश

'क्या वह नहीं होगा' कविता आज की समस्याओं को परिलक्षित करती है, आज की नयी पीढ़ी परदेशी वस्तुओं और वास्तव्य की ओर अधिक आकर्षित हो रही है कवि को इस चिंता से आतुर हो इस समस्या की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करते है। आशा है विद्यार्थी इकाई के अध्ययन से कविता में प्रयुक्त सभी मुद्दों से अवगत हो गये है।

१०.६ बोध प्रश्न

१) 'क्या वह नहीं होगा' नामक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
२) 'क्या वह नहीं होगा' कविता के माध्यम से कवि की चिंता को व्यक्त कीजिए।
३) 'क्या वह नहीं होगा' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
४) 'क्या वह नहीं होगा' कविता का उद्देश्य लिखिए।

१०.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) हम किस के गुलाम हैं ?
उत्तर - हम अपनी मूर्खताओं के गुलाम हैं।

२) हमारे बच्चों को कौन खरीद ले जाएंगे ?
उत्तर - हमारे बच्चों को विदेशी खरीदकर ले जाएंगे।

३) हमारे बच्चों को खरीदकर कहाँ ले जाएंगे ?
उत्तर - हमारे बच्चों को खरीदकर दूर देशों में ले जाएंगे।

४) हम पर्यटकों को गर्व से क्या दिखाते है ?
उत्तर - हम पर्यटकों को अपने प्राचीन खंडहर, मस्जिद, मंदिर और गुरुद्वारे दिखाते है।

५) कवि किस-किस में अंतर न होने की बात करता है ?
उत्तर - कवि सब कुछ जीत लेने और अंत तक हिम्मत न हारने में कोई अंतर महसूस नहीं करता है।

❖❖❖❖

१०.१

स्पष्टीकरण

इकाई की रूपरेखा :

१०.१.१ इकाई का उद्देश्य
१०.१.२ प्रस्तावना
१०.१.३ कविता का भावार्थ
१०.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.१.५ सारांश
१०.१.६ बोध प्रश्न
१०.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१०.१.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन 'स्पष्टीकरण' कविता का भावार्थ समझाना है और कविता के अर्थ से विद्यार्थीयों को अवगत कराना है।

१०.१.२ प्रस्तावना

'स्पष्टीकरण' कविता युद्ध से समाज और मानव जीवन पर हो रही क्षति का वर्णन करती है यदि विवेक पूर्ण दृष्टिकोण रखा जाए तो युद्ध की स्थिति कभी भी समाज पर विपत्ति नहीं बन आएगी।

१०.१.३ कविता का भावार्थ

कवि 'स्पष्टीकरण' नामक कविता के माध्यम से मानवता की भावना को सर्वत्र फैला देना चाहते हैं। वे युद्ध के विरोध में बिगुल बजाने का प्रयास करते है। इनका मानना है कि हमारे जीवन में किसी तरह के गलत समय की बात हो रही हो तो भी हमें सही निर्णय की ओर अग्रसर होने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि गलत से गलत वक्त में भी हम विवेकपूर्ण तरीके से स्थितियों को नियंत्रण में रख सकते हैं। और युद्ध जैसी विभीषिका से समाज पर कहर बरसने से उसे बचा सकते है।

कवि कहता है कि इस तरह के रास्ते पर चलने से हम स्वयं को कमजोर मान सकते हैं या समाज हमको कमजोर करार दे सकता है लेकिन हमें इन सारी स्थितियों पर नियंत्रण रखना है और अपनी ही जाति के लोगों पर युद्ध के कारण आने वाली विपत्ति से बचा सकते हैं। इसके लिए हमें 'वसुदैव कुटुंबकम' वाली भावना को अपने भीतर विकसित करना होगा जब व्यक्ति इस तरह की सोच रखने लगेगा तो उसे अपने ही वर्ग पर गोला बारुद बरसाते हुए संकोच होने लगेगा उसके हाथ कांपने लगेंगे क्योंकि वह सामने वाली सेना में भी अपने ही लोगों जैसी छवि देखने लगेगा। उसे वे भी अपने ही लगने लगेंगे। ऐसी स्थिति में उसके मन से युद्ध जैसी विकृत भावना समाप्त हो जाएगी।

तब हम ईश्वर से आग्रह कर सकते हैं कि भविष्य में कभी भी इस तरह की स्थितियाँ हमारे सामने ना आए। अन्यथा इन सारी स्थितियों के जिम्मेदार स्वयं आप होंगे इस तरह से देवता को साक्षी मानकर कवि संकल्प लेता है।

१०.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठय पुस्तक कुंवर नारायण की 'प्रतिनिधि कविताएं' के 'स्पष्टीकरण' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

कवि मनुष्य को युद्ध जैसी विभीषिका से बचने के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :

कवि आज विश्व में उत्पन्न विषम स्थितियों को देखकर चिंतित हुआ है। आज मनुष्य पर तरह तरह से आक्रमण की आशंकाँए लगातार मँडरा रही है। कवि संपूर्ण विश्व के देशों से आग्रह कर रहा है कि हमें एक दूसरे के साथ बंधुत्व की भावना को लेकर चलना है। हमें एक दूसरे के दुश्मन बन कर नहीं बल्कि दोस्त बनकर रहना है। हमें आपस में न लड़कर मानवेत्तर विपदाओं से एकजुट होकर लड़ना है। इस हेतु कवि सभी से आग्रह करता है कि हमें ईश्वर को हमारे जीवन से संबंधित सारे निर्णय उसके हाथ में दे देने चाहिए। इसके बाद भी यदि विषम स्थितियाँ बनती है तो हम ईश्वर से स्पष्टीकरण मांगने लायक बन सकते हैं। अन्यथा विपरीत स्थितियाँ आने पर हमारे सामने कोई भी सहायता के लिए उपस्थित नहीं होगा। अतः कवि मनुष्य से निवेदन करता है कि वह अपने अपने देश में रहकर अपने अपने क्षेत्र में विकास करे ताकि ना तो युद्ध की स्थितियाँ बनेंगी और ना ही कोई समस्या एक दूसरे के सामने खड़ी हो पाएंगी ऐसी स्थिति में हमें देवता से ही कोई स्पष्टीकरण मांगने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) कवि इस कविता के माध्यम से मनुष्य को शांति के लिए प्रेरित करता है।
२) कवि ईश्वर पर विश्वास करने की बात करता है।
३) सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है।
४) मनुष्य का कार्य मात्र कर्म है इसका बोध कराया गया है।

१०.१.५ सारांश

'स्पष्टीकरण' कविता युद्ध की भयावहता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है यह युद्ध किसी भी परिस्थिति में हो सदैव हानी पहुँचाने का कार्य ही करता है। इस कविता के परिपूर्ण अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ को समझ पाये, अर्थ को स्पष्ट कर सके साथ ही कविता से जुड़े सभी प्रश्नों का हल आसानी से कर सके।

१०.१.६ बोध प्रश्न

१) 'स्पष्टीकरण' नामक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
२) 'स्पष्टीकरण' कविता के माध्यम से कवि ने विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित करने का प्रयास किया है। स्पष्ट कीजिए।
३) 'स्पष्टीकरण' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
४) 'स्पष्टीकरण' कविता का उद्देश्य लिखिए।

१०.१.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) कवि के अनुसार गलत से गलत वक्त में भी कौन सी बात की जा सकती है?
उत्तर - कवि के अनुसार गलत से गलत वक्त में भी सही से सही बात की जा सकती है।

२) कवि भयभीत होने को किस प्रकार महत्व देने की बात करता है?
उत्तर - कवि युद्ध को स्थगित कर भयभीत होने की बात को महत्व देता है।

३) कवि विषम घड़ी में किसे साक्षी बनाने को कहता है?
उत्तर - कवि विषम से विषम घड़ी में ईश्वर को साक्षी बनाने को कहता है।

४) कवि किन्हें नहीं मारने को कहता है?
उत्तर - कवि पराए लोगों को भी नहीं मारने के लिए कहता है?

❖❖❖❖

१०.२

बाजारों की तरफ भी

इकाई की रुपरेखा :

१०.२.१ इकाई का उद्‌देश्य
१०.२.२ प्रस्तावना
१०.२.३ कविता का भावार्थ
१०.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.२.५ सारांश
१०.२.६ बोध प्रश्न
१०.२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१०.२.१ इकाई का उद्‌देश्य

'बाज़ारों की तरफ भी' कविता के अध्ययन से विद्यार्थी -

- कविता का भावार्थ स्पष्ट कर सकते है।
- कविता का अर्थ स्पष्ट कर सकते है।

१०.२.२ प्रस्तावना

बाजारों की तरफ कविता के मनोगत के साथ बाजारवाद और चकाचौंध भरे बाजार जो बिन काम की वस्तुओं से भरे हुए है जिन वस्तुओं की चमक देख उन्हे हम खरीद लेते है और हकीकत में वो हमारे किसी काम नहीं आती है ऐसी अनर्गल वस्तुओं की और कवि ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

१०.२.३ कविता का भावार्थ

कवि कुंवर नारायण बाजारों की तरफ भी नामक कविता के माध्यम से यह बताना चाह रहे हैं कि आजकल वे अकेला जीवन व्यतीत करने में सुख महसूस कर रहे हैं। उनका यह मानना है कि ऐसा बिल्कुल नहीं है कि मेरे साथ कोई नहीं होता। मेरे अकेले होने के बावजूद मेरे से जुड़े हुए लोग मेरी यादों में बसे होते हैं, मेरे साथ रहते हैं और मेरी चिंताओं का हिस्सा होते हैं।

यह सभी लोग अप्रत्यक्ष रूप से किसी न किसी तरह मुझसे जुड़े रहते हैं। जब मैं अकेला होता हूँ तब इन सभी को मैं आमंत्रित करता हूँ ताकि अपना अकेलापन दूर कर सकूँ। इससे भी बड़ी बात यह है कि मरे बुलाने पर यह लोग सहज ही मेरे जीवन में प्रवेश करते हैं और तब तक मेरे मन और मस्तिष्क में छाए रहते हैं जब तक मैं चाहूँ। जब यह मुझे किसी उलझन में पाते हैं तो चुपचाप दुम दबाकर मेरे मन मस्तिष्क से पलायन कर जाते हैं। अर्थात जब तक मैं चाहू यह मेरे साथ रहते है और मेरे न चाहने पर चले जाते हैं।

कवि कहता है कि जब वह इस अकेलेपन से ऊब जाता है तब कुछ समय व्यतीत करने के लिए बाजारों की ओर रुख करता है। वह बाजार में कुछ खरीदने नहीं बल्कि सिर्फ यह देखने जाता है की मनुष्य को भ्रमित करने वाली कौन-कौन सी चीज है जो निर्मित होकर आ गई है। कौन सी नए फैशन वाली वस्तुएँ बाजार में आ गई है और उनकी कीमत क्या है इस सब की जानकारी लेने के लिए वह बाजार की तरफ जाते है।

कवि कहता है कि बाजार की इस चकाचौंध पूर्ण चहल पहल को देखते हुए भी मुझे वहाँ अकेलापन महसूस होता है। यह आश्चर्य की बात है कि इतने लोगों के होने पर भी कभी खुश तो कभी अकेला महसूस कर रहा हूँ। अर्थात लोग सामानों के प्रति इतने मंत्रमुग्ध हो जाते है कि उन्हें किसी से कोई लेना देना ही नहीं होता। अर्थात मनुष्य दिन प्रतिदिन स्व केंद्रित होता चला जा रहा है। इसके चलते लोगों के होने पर भी समाज में भीषण जंगल जैसे अकेलेपन को कभी महसूस कर रहा है। कवि को सामान से भरे पड़े इस बाजार को देखकर सुकरात की तरह मात्र हँसी आ रही है। वह देख रहा है की बाजार में उपलब्ध सामग्रीयों का उपभोग किए बिना जीवन अच्छी तरह से जीया जा सकता है।

१०.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

और एक खुशी कुछ-कुछ सुकरात की तरह कि इतनी ढेर सी चीज़े जिनकी मुझे कोई जरूरत है नहीं।

अनुलेख - और एक खुशी .... जरूरत नहीं।

संदर्भ :

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक कुंवर नारायण की 'प्रतिनिधि कविताएँ' के 'बाजारों की तरफ भी' नामक कविता से ली गई है जिसके कवि कुंवर नारायण जी हैं।

प्रसंग :

यह कविता बाजारों के अनावश्यक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति को अभिव्यक्ति करती है।

व्याख्या :

कवि कहता है कि आज मनुष्य का जीवन दिन प्रतिदिन अकेलेपन का शिकार होता जा रहा है। मनुष्य की संवेदनाएं दिन प्रतिदिन क्षरित होती चली जा रही है। समाज की इन बिगड़ती स्थितियों को देखकर कवि काफी चिंतित दिखाई देता है। वह देख रहा है कि आज व्यक्ति दिन

प्रतिदिन स्व केंद्रित होता चला जा रहा है। ऐसी स्थिति मैं न तो उसे अपने प्रिय जनों से मिलने का समय है और न ही वह किसी नए मित्र को अपने जीवन में प्रवेश करने दे रहा है।

कवि कहता है आज बाजार में नई नई वस्तुएँ आ गई है। कवि की चिंता यह है कि मनुष्य इस बात को समझने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है उसे अपनी जेब के अनुसार ही अपने हाथ को फैलाना चाहिए जिसके चलते वह बाजार में भरे हुए अनावश्यक वस्तुओं को घर पर ले आता है।

कवि कहता है कि मैं जब बाजार की तरफ निकलता हूँ और बाजार में भरे पड़े व्यर्थ के सामानों को देखता हूँ तो मुझे महसूस होता हे कि इन व्यर्थ की वस्तुओं के बिना भी बहुत अच्छी तरह से जिया जा सकता है। उसके मन में उन नए सामानों के प्रति कोई आकर्षण उत्पन्न नहीं होता है। तब उसे सुकरात की याद आती है और मन ही मन खुशी होती है कि इतने अनावश्यक वस्तुएँ के ढ़ेर लोगों को भ्रमित करने के लिए बाजार में उपलब्ध है। अतः कवि संकेत करता है कि बाजार में उपलब्ध सभी चींजे घर पर हूँ। यह जरूरी नहीं है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) बाजार में उपलब्ध अनावश्यक वस्तुओं के प्रति तटस्थ रहने की ओर संकेत किया है।

२) प्रिय जनों की प्रति अपनेपन की भावना को अभिव्यक्ति दी है।

३) विरोधाभाषी स्थितियों का उल्लेख हुआ है।

४) सरल और सहज भाषा का योग किया गया है।

१०.२.५ सारांश

'बाजारों की तरफ' कविता बाजार में बिक रही अनावश्यक वस्तुओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है इस कविता के अध्ययन से विद्यार्थी कविता के भावार्थ को समझे। कविता का अर्थ स्पष्ट कर सके और कविता से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर आसानी से हल कर सके।

१०.२.६ बोध प्रश्न

१) 'बाजारों की तरफ' नामक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

२) 'बाजारों की तरफ' कविता के माध्यम से कवि ने अनावश्यक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति दिखाई है। स्पष्ट कीजिए।

३) 'बाजारों की तरफ' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

४) 'बाजारों की तरफ' कविता का उद्देश्य लिखिए।

१०.२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) कवि अपना अधिक से अधिक समय किसके साथ बिता रहा है ?
उत्तर - कवि अपना अधिक से अधिक समय अपने ही साथ बिता रहा है।

२) कवि किन्हें आमंत्रित करता है ?
उत्तर - कवि अपने चिर परिचितों ही को आमंत्रित करता है।

३) कवि बाजार की तरफ क्यों जाता है ?
उत्तर - कवि बाजार की तरफ यह जानने के लिए जाता है कि इन दिनों बाजार में कौन सी नए फैशन की चीजें आई है और उनकी कीमत क्या है ?

४) कवि को अकेलापन कहाँ महसूस होता है ?
उत्तर - कवि को अकेलापन लोगों से भरे पड़े बाजार में महसूस होता है।

५) कवि बाजार की वस्तुओं को देखकर किसकी तरह खुश होता है ?
उत्तर - कवि बाजार की वस्तुओं को देखकर सुकरात की तरह खुश होता है।

❖❖❖❖